॥ संतबानी ॥

संतबानी पुस्तक-माला के छापने का अभिप्राय जक्त-प्रसिद्ध महात्माओं की बानी और उपदेश को जिन का लोप होता जाता है बचा लेने का है। जितनी बानियाँ हमने छापी हैं उन में से विशेष तो पहिले छपी ही नहीं थीं और जो छपी थीं सो प्रायः ऐसे छिन्न भिन्न और बेजोड़ रूप में या छेपक और त्रुटि से भरी हुई कि उन से पूरा लाभ नहीं उठ सकता था।

हमने देश देशान्तर से बड़े परिश्रम और व्यय के साथ हस्तलिखित दुर्लभ ग्रंथ या फुटकल शब्द जहाँ तक मिल सके असल या नक़ल कराके मँगवाये। भर सक तो पूरे ग्रंथ छापे गये हैं और फुटकल शब्दों की हालत में सर्व-साधारन के उपकारक पद चुन लिये हैं, प्रायः कोई पुस्तक बिना दो लिपियों का मुक़ाबला किये और ठीक रीति से शोधे नहीं छापी गई है और कठिन और अनूठे शब्दों के अर्थ और संकेत फुट-नोट में दे दिये हैं। जिन महात्मा की बानी है उन का जीवन-चरित्र भी साथ ही छापा गया है और जिन भक्तों और महापुरुषों के नाम किसी बानी में आये हैं उन के वृत्तांत और कौतुक संक्षेप फुट-नोट में लिख दिये गये हैं।

दो अंतिम पुस्तकें इस पुस्तक-माला की अर्थात संतबानी संग्रह भ[ाग १] [साखी] और भाग २ [शब्द] छप चुकीं जिन का नमूना देख कर मह[ामहो]पाध्याय श्री पंडित सुधाकर द्विवेदी बैकुंठ-बासी ने गद्गद होकर कहा "न भूतो न भविष्यति"।

एक अनूठी और अद्वितीय पुस्तक महात्माओं और बुद्धिमानों के [वचनों] की "लोक परलोक हितकारी" नाम की गद्य में सन् १९१९ में छपी है जि[स के] विषय में श्रीमान महाराज काशी नरेश ने लिखा है—"वह उपकारी शिक्षा का अचरजी संग्रह है जो सोने के तोल सस्ता है"।

पाठक महाशयों की सेवा में प्रार्थना है कि इस पुस्तक-माला के जो दोष [उन] की दृष्टि में आवें उन्हें हम को कृपा करके लिख भेजें जिस से वह दूसरे छापे [में] दूर कर दिये जावें।

यद्यपि ऊपर लिखे हुए कारनों से इन पुस्तकों के छापने में बहुत ख़र्च होत[ा] है तौ भी सर्व-साधारन के उपकार हेतु दाम आध आना फ़ी आठ पृष्ठ (रायल) से अधिक नहीं रक्खा गया है।

प्रोप्रैटर, बेलवेडियर छापाख़ाना,

सितम्बर सन् १९१९ ई०

इलाहाबाद।

॥ भूमिका ।

(पहिले एडिशन की)

हमारा इरादा घट रामायन के छापने का न था क्योंकि इस ग्रंथ को मुंशी देवी प्रसाद साहिब उर्फ़ देवी साहिब पहले छाप चुके हैं परन्तु संतबानी सीरीज़ के बहुत से गाहकों के आग्रह पर कि यह अनमोल ग्रंथ हमारी पुस्तक-माला के सिलसिले में ज़रूर छपना चाहिये क्योंकि औवल तो देवी साहिब की छापी हुई पुस्तक में छेपक विशेष है जिस से वह तुलसी साहिब की निर्मल और अछूती बानी नहीं कही जा सकती, दूसरे उसका दाम बहुत ज़ियादा है यानी बढ़िया कागज़ पर १०॥) और घटिया कागज़ पर ७॥) जिसे मामूली हैसियत के लोग नहीं ख़रीद सकते ॥

दो बरस हुए हमारे मित्र लाला बालमकुंदजी हाथरस निवासी ने हम को एक लिखी हुई पुस्तक घट रामायन की दी थी लेकिन बिना दूसरी लिपि के उस से पूरे तौर पर काम नहीं चल सकता था। अब हमारे पूज्य मित्र राय बहादुर सेठ सुदर्शनसिंह साहिब ने रत्नसागर की तरह इस अनमोल ग्रंथ की हस्त-लिखित प्रति को भी परमपुरुष स्वामीजी महाराज के पाठ की पुस्तकों में से निकाल कर अति दया से प्रेमी जनों के उपकारार्थ छापने को भेज दिया। यह लिपि प्राचीन और प्रमानिक पाई गई और जो अशुद्धता या त्रुटि कहीं कहीं थी वह दूसरी लिपि की सहायता से शोधी और ठीक की गई। अब यह पुस्तक जो छाप कर प्रेमी जनों के सामने रक्खी जाती है मुताबिक़ असल के है और जहाँ तक हो सका शुद्धता के साथ छापी गई है ॥

हम ने तवज्जह के साथ अपनी लिपियों का मुंशी देवीप्रसाद जी की पुस्तक से मुक़ाबला किया और शुरू में जहाँ तक फ़र्क़ कम पाया पाठ-भेद और त्रुटियों को अपनी पुस्तक के फुटनोट में दिखलाया लेकिन आगे चल कर इतना ज़ियादा फ़र्क़ न सिर्फ़ टुकड़े टुकड़े लफ़्ज़ों का बल्कि कड़ियों की लड़ियों का मिला कि वह कोशिश छोड़ दी गई। यह अधिक कड़ियाँ और पद छेपक हैं या असल इसको हर एक बिवेकी पाठक समझ सकता है ॥

तुलसी साहिब का लिखा हुआ उनके पूर्व जन्म का वृत्तांत दूसरे भाग में दिया गया है जैसा कि हमारी लिपियों में है और जोकि मुनासिब जगह उसकी जान पड़ी। सर्वसाधारन के उपकार के हेतु इस ग्रंथ को दो भागों में बाँट दिया गया है और बढ़िया कागज़ पर छाप कर दाम केवल एक रुपया प्रति भाग रक्खा गया है जिस में हर एक जिज्ञासू एक या दो बार करके पूरा ग्रंथ मँगा सके ॥

तुलसी साहिब का जीवन-चरित्र उनकी शब्दावली और रत्नसागर के साथ पहले छापा जा चुका है परन्तु जोकि अब एक नई पुस्तक "सुरत-विलास" नाम की जिस में तुलसी साहिब का जीवन-चरित्र लिखा है हम को मिली है उसकी सहायता से शोध कर विस्तार के साथ उन का जीवन-चरित्र यहाँ पर छापते हैं ॥

हम इस अवसर पर रायबहादुर सेठ सुदर्शनसिंह साहिब को अनेक धन्यवाद देते हैं जिनकी कृपा से यह ग्रंथ छापा गया। मुंशी देवी प्रसाद साहिब ने इस अनमोल रत्न को पहले पहल बड़ी योग्यता और परिश्रम से छापे में प्रकाशित किया इस उपकार का कोई वार पार नहीं है। हम ने भी यदि इस ग्रंथ को उनकी पुस्तक से पहले न पढ़ा होता तो उसके छापने का उत्साह न होता और न विना उसकी मौजूदगी के अपनी लिपियों को कहीं कहीं शोधने में झिझक दूर होती, इस लिये हम उनको विशेष धन्यबाद देते हैं॥

इलाहाबाद,
सितम्बर १९११

अधम,
एडिटर।

तुलसी साहिब का जीवन-चरित्र

सतगुरु तुलसी साहिब जिनको लोग साहिबजी भी कहते थे जाति के दक्खिनी ब्राह्मन राजा पूना के युवराज यानी बड़े बेटे थे जिसका नाम उनके पिता ने श्यामराव रक्खा था। बारह बरस की उमर में उनकी मरज़ी के ख़िलाफ़ पिता ने उनका विवाह कर दिया पर वह जवान होने पर भी ब्रह्मचर्य्य में पक्के और अपनी स्त्री से अलग रहे। उनकी स्त्री जिसका नाम लक्ष्मीबाई था पूरी पतिव्रता थीं और अपने पति की सेवा दिल जान से बराबर करती थीं। आख़िर को एक दिन जबकि उनके पति किसी भारी सेवा पर बड़े प्रसन्न हुए और उनसे बर माँगने को कहा तो उन्हों ने अपनी सास की सीख अनुसार यह माँगा कि मुझे एक पुत्र हो। साहिबजी ने कहा बहुत अच्छा और दस महीने पीछे बेटा हुआ॥

साहिबजी के पिता भी बड़े भक्त थे और अब इनकी इच्छा हुई कि उनको राज गद्दी दे कर आप एकान्त में रह कर मालिक की बंदगी करें परन्तु उनको हज़ार समझाया वह किसी तरह राज़ी न हुए और अपने पिता से वैराग और भक्ति की ऐसी चरचा की कि उनको जवाब न आया, फिर भी वह इनके राज गद्दी पर बैठने की तैयारी करते रहे। जब गद्दी पर बैठने को एक दिन बाक़ी रहा तो साहिबजी अपने पिता से मिलने बाग़ को थोड़े से सवारों के साथ जो उनकी निगरानी के लिये तईनात थे गये और वहाँ से आगे हवा खाने के बहाने एक तेज़ तुरकी घोड़े पर सवार होकर निकल गये। जब शहर-पनाह के पास पहुँचे तो मौज से ऐसी आँधी उठाई कि घोर अँधेरा छागया जिसकी ओट में वह घोड़ा भगा कर अपने साथियों से अलग हो गये। राजा ने यह ख़बर सुनकर इनकी खोज के लिये चारो ओर देश विदेश आदमी व सवार दौड़ाये पर जब कहीं पता न लगा तो अति उदास व निरास होकर राज्य को त्याग किया और अपने छोटे कुँवर बाजीराव को गद्दी पर बैठाया॥

तुलसी साहिब कितने ही बरस तक जंगलों, पहाड़ों और दूर दूर शहरों में घूमे और हज़ारों आदमियों को उपदेश देकर सत्य मार्ग में लगाया और कई बरस पीछे ज़िला अलीगढ़ के हाथरस शहर में आकर पक्के तौर पर ठहरे और वहाँ अपना सतसँग जारी किया॥

घर से निकलने के बयालीस बरस पीछे वह अपने छोटे भाई राजा बाजीराव से बिठूर (ज़िला कानपुर) में मिले थे जहाँ कि बाजीराव गद्दी से उतारे जाने पर सम्वत् १८७६ में भेज दिये गये थे। इसका हाल "सुरत बिलास" ग्रंथ में इस तरह लिखा है कि साहिबजी गंगा के तट पर रम रहे थे कि एक शूद्र और ब्राह्मन में झगड़ा

होते देखा। ब्राह्मन गंगाजी के तट पर संध्या करता था और शूद्र नहा रहा था। शूद्र की दैंह से जल का छींटा ब्राह्मन पर पड़ा जिस से वह क्रोध में भर आया और उठ कर शूद्र को गाली देने और मारने लगा। साहिबजी के पूछने पर उसने सब हाल कहा और बोला कि इस शूद्र ने जल की छींट अपने बदन से उड़ा कर मुझे अपवित्र कर दिया और अब मेरे पास दूसरी धोती भी नहीं है कि फिर नहा कर पहरूँ और पूजा ख़तम करूँ। साहिबजी ने समझाया कि तुम्हारे ही शास्त्र के अनुसार गंगा और शूद्र दोनों एक ही पद से याने विष्णु के चरन से निकले हैं फिर क्यों एक को पवित्र और दूसरे को अपवित्र मानते हो! यह सुनकर ब्राह्मन लज्जित हुआ॥

घाट पर जो लोग जमा थे उनमें से राजा बाजीराव के एक पंडित ने साहिबजी को पहिंचान लिया क्योंकि इनका अति सुन्दर और मोहनी रूप जिस किसी ने एक बार भी दरशन किया उसकी आँखों में समा जाता था। उसने तुरत राजा को ख़बर भेजी कि आपके भाई आये हैं। राजा नंगे पाँव दौड़े और साहिबजी के चरनों पर बिलाप करते हुए गिरे और बड़े आदर भाव से सुखपाल पर बैठाकर घर लाये और चाहा कि उनको वहीं रक्खें पर वह एक दिन वहाँ से भी चुपचाप चलते हुए॥

सुरत बिलास में तुलसी साहिब के देशाटन समय के कितने ही चमत्कार लिखे हैं जैसे रोगियों को अरोग्य कर देना, मुरदों को जिला देना, अंधों को आँख, निर्द्धन को धन और बाँझ को संतान देना इत्यादि, जिनके विस्तार की यहाँ आवश्यकता नहीं है। ऐसी कथायें महात्माओं की महिमा बढ़ाने के लिये लोग अक्सर गढ़ लेते हैं। संत यद्यपि सर्व समरथ है पर वह कभी सिद्धि शक्ति नहीं दिखलाते और अपनी ऊँची गति को गुप्त रखते है। हमारे मन में तो सब कथाओं में यह हाल जो प्रसिद्ध है अधिक बैठता है कि एक साहूकार ने आपका बड़ा सत्कार किया और भोग लगाते समय यह बरदान माँगा कि मुझे दया से एक पुत्र बख़्शा जाय। तुलसी साहिब ने अपना सोंटा उठाया और यह कहकर चलते हुए कि लड़का अपने सर्गुन इष्ट से माँग, संतों की दया तो यह है कि अगर उनके दास के औलाद मौजूद भी हो तो उसे उठा लें और अपने दास को निर्बंध कर दें॥

तुलसी साहिब के उत्पन्न होने का सम्वत् सुरत बिलास में नहीं दिया है पर यह लिखा है कि उन्होंने अनुमान अस्सी बरस की अवस्था में जेठ सुदी २ बिक्रमी सम्वत् १८९९ या १९०० में चोला छोड़ा। इस से उनके दैंह धारन करने का समय सम्वत् १८२० के लगभग ठहरता है। हाथरस में उनकी समाध मौजूद है और बहुत से लोग वहाँ दर्शन को जाते हैं और साल में एक बार भारी मेला होता है॥

यद्यपि इनको इस संसार से गुप्त हुए ७० बरस से कम हुए हैं पर उनके अनुयाइयों ने न जानें किस मसलहत से उनके जीवन समय को ऐसी भूल भुलैयाँ में डाल रक्खा है कि लोग उसे सैकड़ों बरस समझते हैं। मुंशी देवी प्रसाद साहिब ने भी जो अब इस मत के आचार्य कहे जाते हैं घट रामायन की भूमिका में इस भरम

को दूर करने की कोशिश नहीं की है। हमने इस मत के कई साधुवों और गृहस्थों से तुलसी साहिब का जीवन समय पूछा तो उन्हों ने एक मुँह होकर अब से साढ़े तीन सौ बरस पहिले बतलाया जोकि गोसाँईं तुलसीदास जी जक्त-प्रचलित सगुन रामायन के करता का समय है। तुलसी साहिब ने निस्संदेह घट रामायन के अंत में फ़रमाया है कि पूर्व जन्म में आपही गोसाँईं तुलसीदास जी के चोले में थे और तब ही घट रामायन को रचा परन्तु चारो ओर से पंडितों भेषों और सर्व मत वालों का भारी विरोध देख कर उस ग्रंथ को गुप्त कर दिया और दूसरी सगुन रामायन उस की जगह समयानुसार बनादी। इस से यह नतीजा साफ़ तौर पर निकलता है कि घट रामायन को तुलसी साहिब ने जब दूसरा चोला अनुमान एक सौ चालीस बरस पीछे धारन किया तब प्रगट किया न कि पहिले चोले से। सवाल यह है कि कोई संत तुलसी साहिब के नाम के पिछले सत्तर पछत्तर बरस के अंदर हाथरस में उपस्थित थे या नहीं जो वहाँ सतसंग कराते थे और उपदेश देते थे, और जहाँ उन की समाधि अब तक मौजूद है? हम को इस में कोई संदेह नहीं है कि ऐसे महापुरुष अवश्य थे क्योंकि हम आप उन की समाधि का दर्शन कर आये हैं और दो प्रमानिक सतसंगी अब तक मौजूद हैं जिन्हों ने अपने लड़कपन में तुलसी साहिब के दर्शन किये थे और उन में से एक को तुलसी साहिब ने अपनी घट रामायन आप दिखलाई थी॥

तुलसी साहिब के मत वाले उनकी महिमा समझ कर इस बात पर बड़ा ज़ोर देते हैं कि महाराज ने कोई गुरू धारन नहीं किया और इसके प्रमान में यह कड़ी पेश करते हैं—

"एक बिधी चित रहूँ सम्हारे। मिलै कोइ संत फिरौं तिस लारे॥"

यह कड़ी तुलसी साहिब के "पूर्व-जन्म के चरित्र" में पहिली चौपाई की बीसवीं कड़ी है और उसी के दो पन्ने आगे "बरनन भेद संत मत" में पहिला सोरठा लोगों की इस बहस का खंडन करता है—

"तुलसी संत दयाल, निज निहाल मो को कियौ।
लियौ सरन के माहिँ, जाइ जन्म फिर कर जियौ॥"

इस में संदेह नहीं कि तुलसी साहिब स्वयं संत थे जिन को गुरू धारन करने की ज़रूरत न थी लेकिन मरजादा के लिये किसी को नाम मात्र को अवश्य गुरू बना लिया होगा जिसके लिये संत सतगुरु कबीर साहिब और समस्त संतों की नज़ीर मौजूद है॥

तुलसी साहिब अक्सर हाथरस के बाहर एक कम्मल ओढ़े और हाथ में डंडा लिये दूर दूर शहरों में चले जाया करते थे। जोगिया नाम के गाँव में जो हाथरस से एक मील पर है अपना सतसंग जारी किया और बहुतों को सत्य मार्ग में लगाया॥

इनकी हालत अक्सर गहरे खिँचाव की रहा करती थी और ऐसे आवेश की दशा में धारा को तरह ऊँचे घाट की बानी उनके मुख से निकलती, जो कोई निकट-वर्ती सेवक उस समय पास रहा उसने जो सुना समझा लिख लिया नहीं तो वह बानी हाथ से निकल गई। इस प्रकार के अनेक शब्द उनकी शब्दावली में हैं॥

तुलसी साहिब के अनुयायी अब तक हज़ारों आदमी हिन्दुस्तान के शहरों में मैाजूद हैं। उनके प्रसिद्ध ग्रंथ घट रामायन और शब्दावली और रत्न-सागर हैं॥

तुलसी साहिब ने अपनी बानी में बहुत जगह बेद कतेब कुरान पुरान राम रहीम और प्रचलित मतों का खोल कर खंडन किया है जिस से लोग उन्हें निन्दक और द्रोही समझते हैं पर यह उनकी अनसमझता की बात है। तुलसी साहिब के पदों के अर्थ पर ध्यान देने से स्पष्ट जान पड़ता है कि उन्हों ने किसी मत को झूठा नहीं ठहराया है बरन जहाँ तक जिसकी गति है उसको साफ़ तार पर बतला दिया है। उनका अभिप्राय केवल यह है कि इष्ट सब से ऊँचे और समस्त पिंड और ब्रह्मांड के धनियों के धनी का बाँधना चाहिये और उसी की सेवा और भक्ति करनी चहिये, निर्मल चेतन्य देश से नीचे के लोकों के धनियों की भक्ति करने से परिश्रम तो उतना ही पड़ेगा और लाभ पूरा न उठेगा, अर्थात् भक्त का काम अधूरा रह जायगा और वह आवागवन से न छूटेगा, देर सवेर जन्म मरन का चक्कर लगा रहेगा, क्योंकि ये लोक माया के घेर में हैं चाहे वह कितनी ही सूक्ष्म माया हो॥

तुलसी साहिब (हाथरस वाले) की

घट रामायन

भाग १

भेद पिंड और ब्रह्मांड का

॥ सोरठा ॥

सुति बुँद सिंध मिलाप, आप अधर चढ़ि चाखिया ।
भाखा भेर भियान, भेद भान गुरु सुति लखा ॥

॥ छंद स्रुति सिंध ॥

सत सुरति समझि सिहार साधौ । निरखि नित नैनन रहौ ॥
धुनि धधक धीर गँभीर मुरली । मरम मन मारग गहौ ॥१॥
सम सील लील अपील पेलै । खेल खुलि खुलि लखि परै ॥
नित नेम प्रेम पियार पिउ कर । सुरति सजि पल पल भरै ॥
धरि गगन डोरि अपोर[1] परखै । पकरि पट पिउ पिउ करै ॥२॥
सर साधि सुन्न सुधारि जानौ । ध्यान धरि जब थिर थुवा[2] ॥
जहँ रूप रेख न भेष काया । मन न माया तन जुवा ॥३॥
अलि अंत मूल अतूल कँवला । फूल फिरि फिरि धरि धसै ॥
तुलसि तार निहार सूरति[3] । सैल सत मत मन बसै ॥४॥

॥ छंद २ ॥

हिये नैन सैन सुचैन सुंदरि । साजि स्रुति पिउ पै चली ॥
गिर गवन गोह गुहारि मारग । चढ़त गढ़ गगना गली ॥१॥

---

(१) बिना जोड़ या गाँठ के । (२) हुआ । (३) मुन्शी देवीप्रसाद जी की पुस्तक में "तार" के आगे "पार" का शब्द भी है ।

जहँ ताल तट पट पार प्रीतम । परसि पद आगे अली ॥
घट घोर सोर सिहार सुनि के । सिंध सलिता जस मिली ॥२॥
जब ठाट घाट बैराट कीन्हा । मीन जल कँवला कली ॥
अली अंस सिंध सिहार अपना । खलक लखि सुपना छली ॥३॥
अस सार पार सम्हारि सूरति । समझि जग जुगजुग जली ॥
गुरुज्ञान ध्यान प्रमान पद बिन । भटकि तुलसी भैा भिली ॥४॥

॥ छंद ३ ॥

अलि अधर धार निहारि निजकै । निकरि सिखर चढ़ावही ॥
जहँ गगन गंगा सुरति जमुना । जतन धार बहावही ॥१॥
जहँ पदम प्रेम प्रयाग सुरसरि । धुर गुरू गति गावही ॥
जहँ संत आस बिलास बेनी । बिमल अजब अन्हावही ॥२॥
कृत कुमति काग सुभाग कलि मल । कर्म धोइ बहावही ॥
हिये हेरि हरष निहारि घर कैा । पार हंस कहावही ॥३॥
मिलि तूल मूल अतूल स्वामी । धाम अबिचल बसि रही ॥
अलि आदिअंत बिचारि पद कैा । तुलसि तब पिव की भई ॥४॥

॥ छंद ४ ॥

अलि पारपलँग बिछाइ पल पल । ललक पिउ सुख पावही ॥
खुस खेल मेल मिलाप पिउ कर । पकरि कंठ लगावही ॥१॥
रस रीति जीति जनाइ आसिक । इस्क रस बस लै रही ॥
पति पुरुष सेज सँवार सजनी । अजब अलि सुख का कही ॥२॥
मुख बैन कहनि न सैन आवै । चैन चैाज चिन्हावही ॥
अलि संत अन्त अतन्त जानै । बूझि समझ सुनावही ॥३॥
जिन चीन्हि तन मन सुरति साधी । भवन भीतर लखि लई ॥
जिन गाइ सब्द सुनाइ साखी । भेद भाषा भिनि भई ॥४॥
अलि अलष अंड न खलक खंडा । पलक पट घट घट कही ॥
(तुलसी) तोल बोल अबोल बानी । बूझि लखि बिरले लई ॥५॥

॥ छंद ५ ॥

अलि देख लेख लखाव मधुकर। भरम भै भटकत रही॥
दिन तीनि तन सँग साथ जानै। अंत आनँद फिरि नहीं ॥१॥
जग नाहिन सार असार सखि री। भ्रमत बिधि बस भै मही॥
धन धाम काम न कनक काया। मुलक माया लै बही ॥२॥
येहि समझि बूझि बिचारि मन मँ। निरखि तन सुपना सही॥
जम जाल जबर कराल सजनी। काल कुल करतब लई ॥३॥
सब तिरथ बरत अचार अलि री। कर्म बस बंधन भई॥
तुलसि तरक बिचारि तन मन। संत सतगुरु अस कही ॥४॥

॥ छंद ६ ॥

सखि समझि सूर सहूर सुनि कै। बदन बिच सुधि बुधि गई॥
करूँ कवन भवन उपाव बिन बस। नेक मधुकर बस नहीं ॥१॥
मिलि पाँच तीनि पचीस निस दिन। गाँठि गुन बंधन भई॥
भइ बिबस बस नहिं दाँव लागै। दृढ़ निमख[1] नहिं आवही ॥२॥
धरि हाथ पटकि पुकारि पिव सँग। हारि जिव सँग हटि रही॥
कहुँ ठौर मोर न जोर चालै। आली बिपति कछु का कही ॥३
सुनि ज्ञान ध्यान न कान मानै। बिकल तन मन बिचलई॥
तुलसी बिरह बेहाल[1] हिये मैं। मौत दिन देवै दई ॥४॥

॥ छंद ७ ॥

सखि सीख सुनि गुनि गाँठि बाँधे। ठाट ठट सतसँग करै॥
जब रंग संग अपंग अलि री। अंग सत मत मन मरै ॥१॥
मन मीन दिल जब दीन देखै। चीन्ह मधुकर सिर धरै॥
अलि डगर मिलि जब सुरति सरजू। कँवल दल चल पद परै ॥२॥
थिर थोव ठुमकि टिकाव नैना। नीर थिर जिमि थम थिरै॥
यहि भाँति साथ सुधारि मन कौ। पलक गिरि गगना भरै ॥३॥

---

(१) मुन्शी देवी प्रसाद की पुस्तक में कड़ी २ में "दृढ़ निमख" की जगह "उड़नि मख", और कड़ी ४ में "बेहाल" की जगह "बिकल बेतरह" है।

लखि द्वारं दृढ़ दरबार दरसै। परसि पुनि पद पिउ घरै॥
गुरु गैल मेल मिलाप तुलसी। मंत्र बिषधर[1] बसि करै॥४॥

॥ छंद ८ ॥

सखि भेद भाव लखाव लै गुरु। मरम केहि मारग मिलै॥
जेहि जतन पतन पियास पलपल। पकरि मन केहि बिधि चलै॥१
गुन गोह गति मति गजब गैला। सिखरि साधन कस पलै॥
सखि सुरति मंज समान संजम। मैल मन सँग दुख खलै॥२॥
सुनि सुलभ लखन लखाव सजनी। दुलभ[2] दृढ़ कलिमल दलै॥
मोहिं दीन लीन जो चीन्ह चेरी। तपन बिच तन मन जलै॥३॥
सखि चरन सरन निवास निस दिन। दुख दवा मोहिं अब मिलै॥
गुरु सरन मंत्र मिलाप तुलसी। जबर सँग जुलमो टलै॥४॥

॥ छंद ९ ॥

जब बल चिकल दिल देखि बिरहिन। गुरु मिलन मारग दई॥
सखि गगन गुरु पद पार सतगुरु। सुरति अंस जो आवई॥१॥
सुरति अंस जो जीव घर गुरु। गगन बस कंजा भई॥
अलि गगन धार सवार आई। ऐन बस गोगुन रही॥२॥
सखि ऐन सूरति पैन पावै। नील चढ़ि निरमल भई॥
जब दीप सीप सुधारि सजि कै। पच्छिम पट पद मैं गई॥
गुरु गगन कंज मिलाप करि कै। ताल तज सुन धुनि लई॥३॥
सुनि सब्द से लखि सब्द न्यारा। अलबद जद क्या कही॥
जेहि पार सतगुरु धाम सजनी। सुरति सजि भजि मिलि रही॥४
अस अलल अंड अकार डारै। उलटि घर अपने गई॥
येहि भाँति सतगुरु साथ भैंटे। कर अली आनँद लई॥५॥
दुख दाउ कर्म निवास निस दिन। धाम पिया दरसत वहीं॥
सतगुरु दया दिल दीन तुलसी। लखत भै निरभै भई॥६॥

---

(१) साँप। (२) दुर्लभ।

॥ छंद १० ॥

अलि आदि अजर दयाल सतगुरु । मर्म कहौ कहँ लगि कहूँ ॥
अस कुटिल खोट मलीन बुधि मैं । चित छली मनमत रहूँ ॥१॥
घर धोइ सतगुरु सरस साबुन । ज्ञान सिल जल मल बह्यो ॥
सखि मैल मन जस चिक्कट कपरा । उजल हिये अलिअस भयो ॥२
जव आदि अटल अनादि रँग मैं । चटक रँग सतगुरु दयो ॥
कहुँ कौन सिफति[1] सुनाइ सजनी । अचल सलिता सिंध लह्यो ॥३
सिंध सब्द सतगुरु सुरति सलिता । अलि मिलन अस बिधि भयो ॥
सिंध बुन्द तन मन वन बिराटा । बूझ बिन बादै बह्यो ॥४॥
जब उलटि घर अलि आदि चीन्है । दीन दिल सतगुरु लयो ॥
अलि आदि अंत समाद समझो । बरनि बिधि जसजस कह्यो ॥५.
सखि संत सतगुरु बरनि बरनै । भाखि समझि सुनावही ॥
गुरु चारि तनअस्थानअलिसुनि । समझि भेद लखावही ॥६॥
सखि प्रथम गुरु सुनि कँवल कंजा । सहस दल पल पावही ॥
सखि दूसर गुरु गढ़ गगन ऊपर । कँवल दुइदल गावही ॥
अलि तीनि गुरु तन माहिँ पेखौ । चौकँवल स्रुति लावही ॥७
सतलोक चौथे चार सतगुरु । अगम सिंध कहावही ॥
जहँ सुरति सब्द मिलाप सजनी । संत वोहि घर जावही ॥८
सखि मूल संत दयाल सतगुरु । पिउ निहाली मोहिँ करी ॥
सत सुरति सिंध सुधारि तुलसी । सार पद जद लखि परी ॥९॥

॥ छंद ११ ॥

लख अगम भेद अलोक अलि री । संत सतगुरु मोहिँ कह्यौ ॥
तिहुँ लोक से री अलोक न्यारा । पार मारग मोहिँ दयौ ॥१॥
सिंध सब्द सतगुरु किरनि चेला । सुरति सब्द मिलावही ॥
सत लोक सिंध सम्हार अलि लख । मिलन समझ सुनावही ॥२॥

---

(१) गुन ।

सखि सिंध बुन्द मिलाप सतगुरु। किरनि सुरज कहावही ॥
सखि समुँद जल जस भरत बदरा। भूमि बरस बहावही ॥३॥
अलि सिमटि नीर समीर सलिता। सिंध समझि समावही ॥
सखि सिंध बुन्द जो सिष्य सतगुरु। गवन गत मत गावही ॥४॥
सखि जलहिं जल बल एक करिके। भूमि भर्म नसावही ॥
चित चीन्ह जैसे खेल चौपड़। जुग नरद घर आवही ॥५॥
जिमि किरनि भास निवास रबि मैं। गगन मर्म मिलावही ॥
अलि गगन नास अकास बिनसै। रबि रहन नहिं पावही ॥६॥
अलि सिंध सूरज ब्रह्म कहि नद[१]। किरनि जीव कहावही ॥
सब ठाट बाट बिराट बिनसै। सुरज कहँ होइ रहावही ॥७
सखि सुरज ब्रह्म बिनास किरनी। जब अकास नसाइये ॥
सखि सुरज कहौ केहि ठाम रहि। सोइ समझ खोज लगाइये॥८
सोइ धाम ठाम ठिकान सजनी। घर समझ जहँ जाइये ॥
नहिं और आस बिनास सब को। कोइ रहन नहिं पाइये ॥९॥
सखि नीर छीर मिलाप समँदुर। बदर फिरि भरि लावही ॥
जल बरसि नद मिलि समुँद आवै। जाइ पुनि फिरि आवही॥१०॥
अस जीव आवागवन माहीं। ब्रह्म जीव कहावही ॥
बस कर्म काल बिनास निसदिन। अगम घर नहिं पावही ॥११॥
अलि समुँद आदि बुनयाद कह सोइ। सोत केहि घर गावही ॥
करि खोजि रोज बिचारि मन मैं। गैल गुरु सँग पावही ॥१२॥
सखि संत चरन निवास चेरी। अधर समझ सुनावही ॥
लखि सिंध बुन्द से अगम आगे। देखि समझि समावही ॥
सोइ समझ सतगुरु सार सजिके। लेख लखन लखावही ॥१३॥

---

(१) नदी।

जिमि धार मिलि जल मीन चढ़िके। अधर घर धसि धावही ॥
अलि अमर लोक निवास करिके। सुख अचल जुग पावही॥१४
गुरु कंज सतगुरु मंज मिलिके। अंज अमल पिलावही ॥
सज सुरति निरति सम्हार मिलिके। पिलि पुरुष पिय पावही॥१५
एरी अगम दीनदयाल सतगुरु। हाल हरष निहारही ॥
तुलसिदास बिलास कहि अस। संत अज अरथावही ॥१६॥

॥ दोहा ॥

तुलसी अगम निवास, सुरति बास बस घर किया।
पिया परम रस मूल, सो अतूल अंदर हिया ॥ १ ॥
फूली बन फुलवारि, भीतर घट के कहि कही।
खग मृग सरवर ताल, गुरु निहाल करि लखि लई ॥ २ ॥

॥ सोरठा ॥

तन मन ब्रह्मंड पसार, अंड अंड नैाखंड लैा।
सो घट लखन मँझार, करत सैल ब्रह्मंड की ॥ १ ॥
सतगुरु गगन गुहार, गगन मगन स्रुति मिलि रही।
मंदिर मगन निहार, कंज भान भिन के कहो ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥

भास भवन घट मैँ लखी, सलिल कँवल के माइँ।
पदम पार बेनी वसी, लसी अधर चढ़ि धाइ ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी तोल निहार, गुरू अगम पद पदम हीँ।
कर दृग ऐन अधार, पार परस पट भवन मैँ ॥

॥ शब्द चरचरी ॥

तुलसिदास भास भवन, देखा घट माहीँ।
लाई स्रुति सलिल कँवल, पदमन पर जाई ॥ टेक ॥
सतगुरु गिरि गगन मगन, मंदिर मानैा अजूब।
कंजा भंजि झलक भान, कोटिन छबि छाई ॥ १ ॥

बेनी मंजन अनूप, राहिनी अंदर अरूप ।
चंदा रबि रैनि दिवस, तारे नभ नाहीं ॥ २ ॥
बरनन लखि अलख ऐन, स्याम सिखर निकर कंद ।
निरता सुति समझि सूर, पंकज अपनाई ॥ ३ ॥
अंडा अंबुज अतूल, बेलि बृच्छ अधर मूल ।
फूला फल बन निवास, ललित लता छाई ॥ ४ ॥
भँवर भृंग लसि सुगंध, उरझे रस बस बिलास ।
आनँद सीतल समीर[1], सरवर तट माईं ॥ ५ ॥
जहँ जहँ दृग देखि जात, खगपति[2] कृति नभ उड़ात ।
बन बन मृग चरत जात, कोकिल करकाई ॥ ६ ॥
धरि कै धस धरन डोर, दृढ़कै चढ़ि कड़क कोक ।
धधकत धसि धधक नीर, फूटा पुल जाई ॥ ७ ॥
भाखा भीतर बयान, सज्जन सुनि समझि साथ ।
अदवुद[3] अज अजर बात, संतन लखवाई ॥ ८ ॥

॥ सोरठा ॥

भान भवन घट बास, लखि अकास अंदर गई ।
लीला गिरि चित चास, दीपक मंदिर मरम जस ॥

॥ दोहा ॥

लखि प्रकास पद तेज, सेज गवन गढ़ गगन मैं ।
पति प्रिय प्रेम बिलास, तुलसिदास दस गिरा मैं ॥

॥ सोरठा ॥

मैं मति ऐन अयान, गुरू बयान मो को कह्यौ ।
लह्यौ गगन सोइ जान, सतगुरू मंजन पदम हीं ॥

॥ सोरठा ॥

सतगुरु अगम अपार, सार समझि तुलसी कियो ।
दया दीन निरधार, मोहिँ निकार बाहिर लियो ॥

---

(१) वायु । (२) गरुड़ । (३) अद्भुत ।

॥ दोहा ॥

सतगुरु संत दयाल, करि निहाल मो को दियो ।
सूरति सिंध सुधार, सार पार जद लखि पस्यो ॥

॥ सोरठा ॥

संत चरन पद धूर, मूर मरम मो को दई ।
भई निरति स्रुति सूर, लइ समान मन चूर करि ॥ १ ॥
मैं मति मान अपूर, कूर कुटिल न्यारे किये ।
हिये तिमर तन दूर, तूर तमक तन की गई ॥ २ ॥
मो मन सुरति अयान, जानि सुरति सत रीति ले ।
गहि कर संत सुजान, मान मनी मद छाँड़ि के ॥ ३ ॥
मैं मति सत सम नाहिं, पाइ पकरि लारै लई ।
सतगुरु दीनदयाल, जाल काट न्यारी करी ॥ ४ ॥
सतगुरु चरन निवास, बिमल बास विधि लखि परी ।
धरी जो तुलसीदास, भास चमकि चढ़ि चाँप धरि ॥ ५ ॥
सतगुरु परम उदार, दल दरिद्र सब दूरि करि ।
संपति सुरति विचार, निधि निहार सब्दै लखा ॥ ६ ॥

॥ चौपाई ॥

परथम वन्दौं सतगुरु स्वामी। तुलसी चरन सरनि रति मानी ॥
पुनि वन्दौं संतन सरनाई। जिन पुनि सुरत निरत दरसाई ॥
चरन सरन संतन वलिहारी। सूरति दीन्ही लखन सिहारी ॥
सरन सूर सूरति समझाई। सतगुरु सूर मरम लख पाई ॥
मैं मतिहीन दीन दिल दीन्हा। संत सरन सतगुरु को चीन्हा ॥
सतगुरु अगम सिंध सुखदाई। जिन सत राह रीति दरसाई ॥
पुनिपुनि चरन कँवल सिर नाऊँ। दीन होइ संतन गति गाऊँ ॥
दीनजानिदीन्हीमोहिंआँखी। मैं पुनि चरन सरन गहि भाखी ॥

मैं तौ चरन भाव चित चेरा। मोहिं अति अधम जानि कै हेरा ॥
मैं तौ प्रति प्रीति दास तुम्हारा। संत विना कोइ पावै न पारा ॥
संत दयाल कृपा सुखदाई। तुम्हरी सरन अधम तरि जाई ॥
आदि न अंत संत विन कोई। तुलसी तुच्छ सरन मैं सोई ॥
जो कछु करहिं करहिं सोइ संता। संत विना नहिं पावै पंथा ॥
मोरे इष्ट संत स्तुति सारा। सतगुरु संत परम पद पारा ॥
सतगुरु सत्तपुरुष अविनासी। राह दीन लखि काटी फाँसी ॥
कँवलकंज सतगुरु पद बासी। सूरति कीन दीन निज दासी ॥
सूरति निरत आदि अपनाई। सतगुरु चरन सरन लै लाई ॥
बार बार सतगुरु वलिहारी। तुलसी अधमअघ नाहिं विचारी ॥
बन्दौं सब चर अचर समाना। जानौ तुलसी दास निदाना ॥
मैं किंकर पर दया विचारा। अनहित प्रिये करौ हित सारा ॥
सब के चरन बन्दि सिर नाई। प्रिये लार है प्रीति जनाई ॥
तुम प्रति भूल बंद अस गाई। बार बार चरनन सिर नाई ॥
पुनि बन्दौं सतगुरु सतभावा। जिनसे वस्तु अगोचर पावा ॥
सतगुरु अगम अरूपअकाया। जिनकी गति मति संतन पाया ॥
सतगुरु की कस करहुँ बखानी। सूरति दीन्ही अगम निसानी ॥
लख लख अलख सुरति अलगानी। संत कृपा सतगुरु सहदानी ॥
सूरति सैल पेल रस राती। सतगुरु कंज पदम मद माती ॥
तुलसी तुच्छ कुच्छ नहिं जानै। सतगुरु चरन सरन रत मानै ॥
सूरति सतगुरु दीन्ह जनाई। नित नित चढ़ै गगन पर धाई ॥
सैल करै ब्रह्मंड निहारा। देखै आदि अंत पद सारा ॥
निरखा आदि अंत मधि माहीं। सोइ सोइ तुलसी भाखि सुनाई ॥
पिंड माहिं ब्रह्मंड समाना। तुलसी देखा अगम ठिकाना ॥

पिंड ब्रह्मंड मैं आदि अगाधा। पेली सुरति अलख लख साधा ॥
पिंड ब्रह्मंड अगम लख पाया। तुलसी निरखि अगाध सुनाया[1] ॥
पिंड माहिं ब्रह्मंड दिखाना[1]। ता की तुलसी करी बखाना ॥

॥ सोरठा ॥

पिंड माहिं ब्रह्मंड, देखा निज घट जोइ कै ।
गुरु पद पदम प्रकास, सत प्रयाग असनान करि ॥

॥ दोहा ॥

बूझै कोइ कोइ संत, आदि अंत जा ने लखी ।
परचै परम प्रकास, जिन अकास अम्बर चखी ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी तोल तरास, तत बिबेक अंदर कही ।
बूझैंगे निज दास, जिन घट परचे पाइया ॥ १ ॥
पानी पवन निवास, कँवल बास बिधि सब कही ।
जीव काल और स्वाँस, और अकास उतपति भई ॥२॥
भीतर देखि प्रकास, सब ब्रह्मंड बिधि यौं कही ।
रावन राम सँवाद, आदि अंत निज जोइ कै ॥ ३ ॥

॥ चौपाई

जो कोइ घट का परचा पावै। कँवल भेद ता को दरसावै ॥
भिन्न भिन्न कँवलन बिधि गाई। स्वाँसा भिन्न बिधी दरसाई ॥
निज निज तत्त कहेऊ मैं जानी। परखैंगे कोइ संत सुजानी ॥
मैं गति नीच कीच कर सानी। कहत लजाउँ अगम गति जानी ॥
जो अपनी गति कहहुँ बिचारी। तौ मन मोट होत अधिकारी ॥
मैं किंकर संतन कर दासा। घट घट देखा तत्त निवासा ॥
ता की गति ग्रंथन मैं गाई। बूझै जिन सत संगति पाई ॥
सूरति सार सब्द जिन पाया। दस गृह सैल जिन करी अकाया॥

---

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक मैं "अगाध सुनाया" की जगह "परख गत गाया" और आगे की कड़ी में "दिखाना" की जगह "सगाना" है।

॥ सोरठा ॥

जिन मानी परतीत, अधर रीति जा ने लखी ।
सब गति कहहुँ अजीत, सन्त बचन परमान कै ॥ १ ॥

तुलसी सब्द सम्हार, वार पार सगरी लखी ।
पक्षी चखी स्रुति सार, लार सब्द सूरति गई ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥

सतगुरु पुर पद पार, ये अगार अदबुद कही ।
भौ बुधि भेष मँझार, सार लार सूझै नहीं ॥

॥ छंद ॥

गुरु पद कंज लखाइ घट परचे पाई। सुरति समानी सिंध मई[1] ॥
देखा वह द्वारा अगम पसारा । दस दिस फोड़ अकासगई १
नाम निअच्छर छर नाहिँ अच्छर । देख अगाध अनाद लई ॥
घट भीतर जाना घट परमाना । जेइ जेइ संत अगार कही ॥२
जिनकी रज पावन राम औ रावन । निःअच्छर सत सार सही ॥
पंडित और ज्ञानी यह नहिँ जानी। भेष भेद गति नाहिँ लई ॥३
सब जग संसारा काल की जारा । सकल पसारा भेष मई ॥
रागी बैरागी भौ रस त्यागी । साँगी पाँगी भरम बही ॥४॥
ध्यानी बिज्ञानी बन बस जानी। संत पंथ मत राह नहीं ॥
जोगी सन्यासी काल की फाँसी । परमहंस परमान नहीं ॥५
निज गावै बेदा जानै न भेदा । सास्त्र संध जिन राह लई ॥
संतन गति न्यारी सुनो बिचारी । चौथे पद के पार कही ॥६॥
कोइ करिहै संका महा मति रंका। सतसँगति सम सूझ नहीं ॥
तुलसी मति-हीना पायौ चीन्हा। संत कृपा घट घाट लई ॥७

(१) एक लिपि में इस छंद की पहिली कड़ी के दूसरे टुकड़े का पाठ ऐसे है- "सब सुखदाई सुरति समानी सिंध मई" ।

॥ सोरठा ॥

पानी पवन निवास, कँवल बास बिधि सब कही ।
सब्द सुरति कर बास, वै निरास अच्छर रहत ॥ १ ॥
कह्यौ ग्रन्थ घट सार, गुरु परचै निज कँवल मैं ।
जिन जिन पाय निवास, सो लखिहैं ये भेद सब ॥ २ ॥

॥ चौपाई ॥

अब ब्रह्मंड का भाखौं लेखा । भिन्न भिन्न घट भीतर देखा ॥
पाँच तत्त का कहौं बिचारा । अगिनि अकास नीर निरधारा ॥
पृथ्वी पवन सकल कर भेदा । पिंड ब्रह्मंड का रच्यो निषेदा ॥
लखि अकास बाई[1] सँग आई । दोइ मिलि निज अगिनी उपजाई ॥
अब पानी का सुनौ बिचारा । ये चारौ मिलि मही अकारा ॥
ऐसे पाँच तत्त उपराजा । निज तन कीन्ह देह कर साजा ॥
पानी बुंद सृष्टि उपजाई । ता मैं चेतन सत्त समाई ॥
अब पानी का भाखौं लेखा । भिन्न भिन्न घट भीतर देखा ॥
ता की बिधि बिधि कहौं बिचारा । छत्तिस नीर पचासी धारा ॥
जोइ जोइ नीर नाम बतलाऊँ । नीर छतीसो बरनि सुनाऊँ ॥
बिधि बिधि नाम नीर समझाऊँ । नाम नीर भिन भिन दरसाऊँ ॥

॥ नीर के नाम ॥

॥ चौपाई ॥

जल अजीत परथम करि गाऊँ । करता जल दूसर कर नाऊँ ॥
और अनूप तीसर जल कीन्हा । चौथा मुक्ति नीर को चीन्हा ॥
नीर पाँच पुरइनि परमाना । अंबुज षष्टम नीर बखाना ॥
नीर सात विषया झर होई । नीर आठ अटला सुर सोई ॥
नवाँ नीर नाटक दुख भेदा । दसवाँ नीर दसौ मन छेदा ॥
एकादस नीर काल को जाना । द्वादस नीर जिव करै पयाना ॥

---

(१) वायु ।

तेरवाँ नीर पुरुष कौ ध्याना । जो बूझै घट परचै जाना ॥
जीव नीर चौधा मैं भूला । पंद्रह नीर भीर सहै सूला ॥
सोला नीर कनक कर संगी । सत्रा नीर रूप रस रंगी[१] ॥
अठरा नीर बोल दे नाऊँ । उन्निस नीर कुसुम रँग राऊ ॥
बिसवाँ नीर कलंगी गाई । निज घट भीतर परचा पाई ॥
इक्किस नीर सुखसागर धामा । भँवरकंज उरझा तेहि ठामा ॥
बाइस नीर मूल घट[१] राजा । तेइस नीर निरासू बाजा ॥
नीर चौबिसवाँ चतुर सुजाना । पच्चिस नीर मेघ परमाना ॥
छब्बिस नीर कहौं मैं काला । सताइस नीर धनासुर नाला ॥
अठाइस नीर रूप द्वै आना । उन्तिस नीर अभया दृग[२] दाना ॥
तिसवाँ नीर आहि बल भारी । इकतिस नीर आहि संसारी ॥
बतिस नीर निरगुन है सीठा । तैंतिस आलस नीर है मीठा ॥
चौंतिस नीर सरोसिल नाऊँ । पृथ्वी पैंतिस नीर बताऊँ ॥
छत्तिस नीर कामिनी बासा । ब्रह्मा बिस्नु का भोग बिलासा ॥
जीव जंतु जल जीव निवासा । ये सब परे काल की फाँसा ॥
छत्तिस नीर नाम निरधारा । सो कोइ साधू करै बिचारा ॥
आगे कहौं पचासी पवना । ता कर नाम भेद गुन बरना ॥
भिन्नि भिन्नि नाम बिधी बतलाऊँ । पवन पिचासो बरनि सुनाऊँ ॥
पिंड मैं पवन पचासी बासा । सो निज भाखौं भेद खुलासा ॥

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक मैं "रस रंगी" की जगह "परसंगी" है और चार कड़ी आगे "घट" की जगह "घर" है । (२) यह शब्द हमारी समझ मैं "दुर्ग" होना चाहिये यानी जहाँ कोई पहुँच नहीं सकता ; कठिन । "दानी" नाम काल और उसके नायब धर्मराय का है जो जीव को बिना सतगुरु के बख़्शे हुए "निज नाम" का परवाना दिखाये अपनी हद के बाहर नहीं जाने देना ।

॥ पवन के नाम ॥

१ रजलाय	पवन	२४ सकलंध	पवन
२ केदार	,,	२५ सल सोख	,,
३ बिलंभ	,,	२६ सुख रोग	,,
४ समीर	,,	२७ ज्ञान कुंभ	,,
५ पुरभो १	,,	२८ मैना ऊँघ	,,
६ कालूल	,,	२९ त्रिक्रोध	,,
७ स्रुति अंध	,,	३० क्रिवलास	,,
८ नल पती	,,	३१ करनास	,,
९ ब्रह राज	,,	३२ रस नाग	,,
१० मंदोष	,,	३३ तन जीत	,,
११ सकल तेज	,,	३४ सकसीत	,,
१२ मन सोत	,,	३५ बेलोक	,,
१३ जगजोत	,,	३६ मन मोष	,,
१४ उपजीत	,,	३७ बेरूप	,,
१५ जगजीत	,,	३८ सतसूक	,,
१६ पर राज	,,	३९ बीज मन्द	,,
१७ बल कुंभ	,,	४० बीज बन्द	,,
१८ पत राज	,,	४१ अजसार	,,
१९ बल भेद	,,	४२ नितनाल	,,
२० बारुन	,,	४३ शब्दाल	,,
२१ कुंभेर	,,	४४ गिरंनाल	,,
२२ जगजाय[1]	,,	४५ सुषपाल	,,
२३ बेधुंध	,,	४६ रूपान	,,

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में "जगजाय" की जगह "इन्द्रजीत" है।

४७ विधान	पवन	६७ लैनार	पवन
४८ सुभपती	,,	६८ लैलार	,,
४९ छैरती	,,	६९ नदसूर	,,
५० उतरंत	,,	७० पदमूर	,,
५१ तितरंत	,,	७१ करकीत	,,
५२ पुरवो	,,	७२ घरजीत	,,
५३ सरभो	,,	७३ मनमास	,,
५४ उत्रमीत	,,	७४ सरसूत	,,
५५ दरदीत	,,	७५ अवधूत	,,
५६ उपमार	,,	७६ आकाश	,,
५७ अभियार	,,	७७ जगवास	,,
५८ अतरीत	,,	७८ सुनसूत	,,
५९ ताईत	,,	७९ मनभूत	,,
६० सुषमंद	,,	८० निरधार	,,
६१ असमंद	,,	८१ सतसार	,,
६२ सीराद	,,	८२ आसोग	,,
६३ लैयाद	,,	८३ तन भोग	,,
६४ करिहाट	,,	८४ जग जोग	,,
६५ करुनाट	,,	८५ मन रोग	,,
६६ वैराग	,,		

॥ चैापाई ॥

पवन पचासी भाखि सुनाई । कोइ साधू घट भीतर पाई ॥
घट में पवन पचासी जाना । निरखा नैन सैन धरि ध्याना ॥
साध आदि कोइ करै विबेका । सोइ निज सार पवन का लेखा ॥
तुलसीजिनजिननैन निहारा । पवन पचासी वरनि सिहारा ॥
जिन जिनघटकीसैल सँवारा । पवन भवन सोइ गवन गुहारा ॥

आगे सुनहु गगन का लेखा। सोला गगन पिंड मैं देखा॥
जिन जिन सैल सुरति से कीन्हा। सोला गगन भाखि तेहि दीन्हा॥
जो सोला का भेद बतावै। सोइ सज्जन सत साध कहावै॥
भिन्न भिन्न सोला बिधि भाखौं। गगन नाम निज एक न राखौं॥
बिधिबिधि नाम कहौं समझाई। चित दे सुनौ गगन कर नाई॥

॥ गगन के नाम ॥

॥ चौपाई ॥

परथम गगन निसाधर मोषा। दूसर गगन पृथी पद पोषा॥
तीसर गगन विरिछ सुर सोषा। चौथा गगन दिलंभी गोषा॥
पंचम गगन हिरा पद स्यामा। षष्टम गगन निरंजन नामा॥
सप्तम गगन पुलंधर चीन्हा। अष्टम गगन सफानल कीन्हा॥
कदलीकंद नवौं कर नामा। दसवौं गगन जमरस के ठामा॥
एकादस गगन हरि हिरदे नामा। द्वादस गगन अधर परमाना॥
तेरा गगन कलंगी रूपा। चौधा गगन है धुंध सरूपा॥
पंद्रा गगन मुक्ति कर नामा। सोला गगन गुप्त निज धामा[१]॥
इतने गगन काया के माईं। सज्जन साध खोज कोइ पाईं॥
सोला का कोइ भेद बतावै। सोइ सोइ गगन गिरा गति गावै॥
तुलसी निरखि कहा निज लेखा। बूझि साध कोइ करै बिबेका॥
घट भीतर सब गगन बताया। भिनि भिनि नाम गगन गति गाया॥
इतने की कोइ जानै संधा। सो नहिं परै काल के फंदा॥
आगे भेद जो कहौं अनूपा। भँवर गुफा मैं जोति सरूपा॥
भँवर गुफा छै भाखि सुनाऊँ। जाकौ भिनि भिनि भेद बताऊँ॥

॥ भँवर गुफा के नाम ॥

परथम बेहद नाम सुनइया। भँवर गुफा बिच बास करइया॥
दूसर नाम निरखि निरधारी। तीसर नाम मुक्ति पद प्यारी॥

---

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक मैं कड़ी ८ मैं "गुप्त निज" की जगह "मुक्ति कर" छपा है (जो कि ठीक नहीं हो सक्ता क्योंकि यही नाम पंद्रहवें गगन का है।

चौथा नाम उनमुनी स्यामा। सोइ सब जोगिन का बिसरामा॥
पंचम नाम हरी हद सूना। छठवाँ चदर अधर पर धूना[1]॥
छई छर भँवर गुफा दरसाई। तुलसी नैन नजरि मैं आई॥
आगे भाखैं भेद निहारा। छै त्रिकुटी घट माहिं सिहारा॥
जा कै नाम ठाम दरसाऊँ। भिनि भिनि भाव भेद समझाऊँ॥

॥ त्रिकुटी के नाम ॥

॥ चौपाई ॥

प्रथम कहौं रुकमन्दर[1] नाऊँ। काल कै चक्र फिरै तेहि ठाऊँ॥
दूसर बली बिजै बल सोई। षटदल कँवल फूल जहँ होई॥
तीसर नाम मुकर मनि[1] जोई। मन बुधि निद्रा से सुख सोई॥
चौथा नाम सब्दनी होई। नौ नाड़ी सुपने दे सोई॥
पंचम नाम गोमती गाऊँ। अठदल कँवल फूल तेहि ठाऊँ॥
हंस मुखी छठवीं कर नामा। हंस बिहंग बसै तेहि ठामा॥

॥ दोहा ॥

छै त्रिकुटी बिधि बिध कही, द्रुग निज नैन निहार।
तुलसिदास घट भीतरे, देखि कही सब सार॥

॥ चौपाई ॥

त्रिकुटी छई नाम निज गाया। तुलसी भिन भिन भेद लखाया॥
जोगी जीत रीत कोइ जानै। त्रिकुटी चढ़ै भेद पहिचानै॥
आगे सत मत द्वार लखाऊँ। सुक्रित सेत द्वार दरसाऊँ॥
जौन दिसा सुकिरत है भाई। तौन दिसा सत द्वार लखाई॥
अष्ट कँवल दल दरपन माई। नाभि सेत नल मध के ठाईं॥

---

(१) भँवर गुफा के चौपाई की कड़ी ४ में "पर धूना" की जगह "रंग धूना" दिया है। इसी तरह त्रिकुटी के नाम की चौपाई की पहिली कड़ी में पहिली त्रिकुटी का नाम "रुकमादे" और तीसरी कड़ी में तीसरी त्रिकुटी का "मुक्तिमन" लिखा है।

नल नागिनि करि बैठी भेषा। जीव भखन वो करै अनेका ॥
पुनि सरवर तेहि पास बिराजै। ता पर बैठि सभा बहु गाजै ॥
तेहि सरवर जल नीर अपारा। जीव उलरि कोइ जाइ न पारा ॥
कौन दिसा नागिनि रस रूखा। कौन दिसा सरवर रहै सूखा ॥
अभि अंतर सुकिरत सत वासा। करिया कँवल मैं काल निवासा ॥
अष्ट कँवल नागिनि रस रूखा। सरवर बिरह कँवल मैं सूखा ॥
यह सत रीति द्वार दरसाई। अब मैं कहौं सुनो तुम भाई ॥
आगे तरवर भेद अपारा। चारि बिरछ पर सुरति सम्हारा ॥
जीव पैठि सोइ मारग पावै। गगन कँवल भीतर चलि आवै ॥
उलटै चक्र सुन्न मैं धावै। सिध साधक जहँ ध्यान लगावै ॥
बिरछ चारि सोइ कहौं बुझाई। जाकर नाम ठाम गति गाई ॥
जहँवाँ कागभसुंड कहु काला। बट पीपर पाकरी रसाला ॥
कागभसुंड काया के माहीं। तन मन बिरछ संत समझाई ॥
बिरछा ऊपर ताल बिराजै। निरखत काल कला सब भाजै ॥

॥ सोरठा ॥

बिरछा ऊपर ताल, जहाँ काल करकै नहीं।
तुलसी संत दयाल, दिया भेद भिनि भिनि लखा ॥

॥ कहेरा ॥

सखी री बिरछ पै ताला, जहँ करकै न काल।
बिरछा के जड़ नहिं पाती, वा की ढुरी ढुरी[1] डाल ॥टेक॥
सर मैं सुरति न्हवावई, कागा किये हैं मराल।
संतो पंथ पिया पाये, गुरु भये हैं दयाल ॥ १ ॥
अठमैं अटारी माहीं, परे सुनि पिया हाल।
हरखा बंक सुर नाला, चढ़ी चट चट चाल ॥ २ ॥

---

(१) झुकी हुई।

सुरति गगन घन छाई, पिया परे परे ख्याल ।
तुलसी तरक तत तारी, भारी काटी भ्रम जाल ॥ ३ ॥

॥ सोरठा ॥

कहौं अब बिधि बरतंत, संत कहनिं मन मत गही ।
लही जो तुलसी अंत, ज्ञान चक्र चित चेति कै ॥

॥ चौपाई ॥

अब सोई विधि बरतंत सुनाऊँ । राह रीति मन मत दरसाऊँ ॥
मन मत चक्र घेर के मारा । ज्ञान चक्र जब जीव सम्हारा ॥
काल मारि मुख फेरि चलावै । काल भागि त्रिकुटी मैं आवै ॥
जीव सब्द गहि खेदि चलाई । अधर कँवल बिच काल छिपाई ॥
भर्म चक्र जब काल चलावा । भरमित जीव भरम जब आवा ॥
संसय सोग जीव उपजाई । साहेब सब्द बिसरि गयो भाई ॥
भगिया जीव गगन मग माहीं । यहँ होइ काल गहैगो नाहीं ॥
जीव वहाँ से निसरि पराई । नाल बंक मैं जाइ समाई ॥
बंके नाल काल गति लइया । जीव भागि आगे चलि गइया ॥
परम कँवल मैं जीव छिपाना । वहाँ काल जो जाइ समाना ॥
सोला गगन जीव फिरि आई । तहाँ काल पुनि खेदत धाई ॥

॥ सोरठा ॥

सोला गगन मँझार, जीव काल खेदत फिरै ।
बूझै बूझनहार, घट निहारि अंदर लखै ॥

॥ चौपाई ॥

वहाँ जीव कोइ बचन न पावै । रहस नाल जिव पैठि समावै ॥
वहँ कहुँ काल सुनन जब पावै । समाधान होइ काल सिधावै ॥
रहस नाल से भागि पराई । भँवर गुफा मैं जाइ छिपाई ॥
आपै काल ध्यान धर कीन्हा । अपनी सुरति गुफा मैं दीन्हा ॥
सूरति जीव काल पर आवै । काल आप धर ध्यान लगावै ॥
अपनी सुरति गुफा मैं लावै । भीतर सूरति जीव समावै ॥

अपना घर बिधि काल न पावै । पीछे काल तहाँ लगि धावै ॥
तब लग काल जीव को घेरा । घर सुधि बिन जो फिरै अनेरा ॥
धनि वे जीव आप को जानी । उलटि काल को बाँधै तानी ॥
जानै जीव जो नाम सहाई । नाम निअच्छर जाइ समाई ॥
पुरुष नाम जीव लखि पावै । जीव नाम लखि ब्रह्म कहावै ॥
नाम छाँड़ि जग जीव कहाये । भरम भरम भौसागर आये ॥
अभि अंतर जिव पैठै जाई । राई के दस भाग समाई ॥
अंतर काल बड़ा मग लागा । एक राई का दसवाँ भागा ॥
अंतर बड़ा जीव को सोका । काल की आँखी तीनौं लोका ॥
जीव की आँखि पुरुष को देखा । काल दृष्टि जब होय बिसेषा ॥
आँखी जीव चकोर समाना । पाँचो करै दृष्टि जस बाना ॥
धरती दृष्टि प्रकिरती उद्रा । दृष्टि अकास करै नर मुद्रा ॥
तत्त पाँच पाचौ हैं नारी । बचै नाम निज सुरति बिचारी ॥

॥ दोहा ॥

काल करै जिव हानि, तुलसीदास तत सम रहो ।
घट रामायन सार[1], मथि काया बिच घट कह्यो ॥

॥ सोरठा ॥

भिनि भिनि कहौं बखान, आदि अंत घट भेद बिधि ।
तुलसी तनहिं बिचार, घट निरखो निज नैन से ॥

॥ चौपाई ॥

आगे घट का भेद बखाना । बतिस नाल घट भीतर जाना ॥
नाल भेद बिधि कहौं बुझाई । जिन जानी घट परचे पाई ॥

॥ नाल के नाम ॥

॥ चौपाई ॥

प्रथम नाल की बिधो बताऊँ । अभया तेज ताहि कर नाऊँ ॥
दूसर रहस नाल जो गावा । चौदल कँवल फूल तेहि ठाँवा ॥

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में "सार" की जगह "माहिं" है ।

कँवल चार दल भँवर उड़ाना। चढ़ि अकास बिधि जाइ समाना॥
कनक नाल तीसर कर नामा। चौंसठ जोगिनि बसै तेहि ठामा॥
चौथी नाल त्रिकुट थिर थाना। कोठा नाल बहत्तर जाना॥
धुंधर नाल पाँचवीं होई। काल सिंहासन बैठा सोई॥
छठवीं नाल रूषरम नामा। निरगुन रूप बसै तेहि ठामा॥
नाल सातवीं सेत बताई। मन की कला बसै तेहि माहीँ॥
नाल आठ अभया मत नाँऊँ। कामिनि चारि बसै तेहि ठाऊँ॥
नाल मुकरमा नौवीं नामा। द्वादस दूत बसै तेहि ठामा॥
हरि संग्रह दसवीं दरसाई। लछमन राम बसै जेहि माहीँ॥
मुक्तामनि एकादस सोई। कलसर दूत बैठ बल जोई॥
द्वादस नाल पोहप पट माहीँ। नभ नल द्वार सब्द गोहराई॥
तेरहीं नाल त्रिकुट नट नौली। वचन त्रिदेह त्राक बिन बोली॥
चतुरदसि नाल नटवर नामा। मेघा छपन कोटि बिसरामा॥
पंद्रा गगन नाल निरबानी। झरि झरि चुवै कूप से पानी॥
सोला सुखमनि नाल कहाई। सुकिरत सेत बसै तेहि ठाईं॥
सत्रह नाल अनूप अचीन्हा। अंडा त्रिदित त्रिस्व रचि लीन्हा॥
अठारा नाल त्रिमलसुर जानी। तैंतिस कोटि देव दरबानी॥
उन्निस नाल भँवर मन्दाकी। अंडा कुम्भ रहै मन छाकी॥
बिसवीं नाल अजोरक माली। सूरत सब्द सेत चढ़ि चाली॥
इक्किस नाल हंसदे नाऊँ। मुक्ता मानसरोवर ठाऊँ॥
बाइस नाल सत अंकित[1] होई। बन असोक सीता जहँ होई॥
तेइस नाल नगर एक बाटा। जहँ को जम रोकै नहिँ घाटा॥
चौबिसविषमनालनिजधामा। गुंजै भँवर कंज के ठामा॥
पच्चिस नाल पदम सुर सोई। पचरँग रूप जहाँ नहिँ होई॥
छब्बिस नाल गढ़ गोधर नाहीँ। अटक पार चढ़ फटक समाई॥

---

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में "अंकित" की जगह "सुकृत" है।

सताइस नाल त्रिकुट पर लंका। जहँ रावन बसै ब्रह्म निसंका॥
अठाइस सेत द्वार दुरबीना। समुँदर सात पार कोइ चीन्हा॥
उंतिस नाल सिखर पर सैला। अच्छर अंदर अगम दुहेला॥
तिसवीं नाल अधर रस रोकी। जहाँ निरंजन बैठे चौकी॥
इकतिस सुरति कँवल अस्थाना। कोइ सज्जन सत साध बखाना॥
बत्तिस नाल सब्द सुन माईं। मुकर द्वार चढ़ि छूटै भाईं॥
बत्तिस नाली बरन अनूपा। सुर नर मुनि नहिं पावै भूपा॥
ये सब नाल ख्याल दरसाईं। सो सब देखे घट के माईं॥
जिनके नाम ठाम गुन बरना। कहै तुलसी संतन के सरना॥
बत्तिस नाल बरनि समझाई। वाकी मुनि हर एक रहाई॥
बंक नाल है वा को नाँवा। तीनो भवन भेद नहिं पावा॥
घट में बत्तिस नाल बखाना। काया सोध साध कोइ जाना॥

॥ दोहा ॥

बत्तिस नाल निहारि कै, तुलसी कहा बिचारि।
घट घट अंदर देखि कै, साध करै निरवार॥

॥ चौपाई ॥

सत्त बचन साधू परमाना। भीतर भेद सत्त पहिचाना॥
काया खोज नहीं जिन पाया। जाके सदा हिये तम छाया॥
काया खोज किया नहिं भाई। सुकदेव रहे भूल के माईं॥
व्यास जनक नारद नहिं पाई। कथि पुरान आतम गति गाई॥

॥ दोहा ॥

ज्ञानी भूले भर्म मैं, परम हंस ब्रह्मचार।
सास्तर संध बिचारिया, बहे कर्म की धार॥

॥ सुन्न भेद ॥

॥ चौपाई ॥

आगे कहौं सुन्न बिस्वासा। बिना सुन्न गये जीव निरासा॥
अब निज कहौं सुन्न मैं स्वाँसा। बिना सुन्न जिव काल निवासा॥

सुन्न दिसा बिधि कहौं बुझाई। बूझै साध सुन्न जिन पाई ॥
बिरला सुन्न भेद को पावै। सुन्न दीप सोइ सब्द कहावै ॥
सुन्न की सोत धुन्न में लागी। धुन की सोत गगन में जागी ॥
गगन के ऊपर पवन रहाई। निरगुन पवन भवन के माईं ॥
निरखि कँवल साधै कोइ साधू। मिटि जाइ काल कष्ट की ब्याधू॥
मूल कँवल के ऊपर देखो। घट में सत्त सब्द ले पेखो ॥
अष्ट कँवल ओंकार का बासा। सो निज बूझो काल तमासा ॥
षोड़स कँवल को ध्यान लगावै। जोगी करै भेद सोइ पावै ॥
पवन जोग जोगी गति गाई। त्रिकुटी निज धुनि कँवल कहाई॥
मन थिर होइ सुरति ठहरावै। त्रिकुटी कँवल पवन ले आवै ॥
देखै अवर पवन हिये माईं। चमकै जोति दृष्टि में आई ॥
जीव पवन जब चलै अघाई। सेत पवन से मारि चलाई ॥
करिया पवन भई बलहीना। नाखौ पवन जीव जब चीन्हा ॥
नाखौ पवन भरोसा मोरा। सेत कँवल से बाँधौ डोरा ॥
सेत कँवल सुकिरत की होई। सत मत द्वार जानिये सोई ॥
सत्त सुकृत की एकै बानी। ताकी गति बिरले पहिचानी ॥
कदली सब्द लाभ जिन देखा। मुक्ति अमी तहँ पियै अलेखा ॥
जहाँ निरंजन बसै निदाना। सहस कँवल जोगी बिधि जाना॥
द्वादस आगे इम्रत वासा। निगुरा नर सो मरै पियासा ॥
सगुरा होइ सोई निज पावै। भर भर मुख इम्रत भल खावै ॥
पीवै अमी लोक को जाई। घट भीतर जिन खोज लगाई ॥
पाँजी खोज हाथ अनुसरई। सो जिव सहजै से भौ तरई ॥
झिलमिलि झरै सुन्न के माहीं। गंगा जमुना सरसुति राही ॥
गंगा जमुना सरसुति होई। तिरबेनी संगम है सोई ॥
त्रिकुटी संगम बेनी घाटा। बसै जीव सत पावै बाटा ॥

बंक नाल होइ गंगा जाई । जमुना सुन्न गुफा से धाई ॥
सरसुति सेत कँवल से आई । मन जोगी बिधि बास कराई ॥
गंगा गहै करै असनाना । जमुना दूरि मुक्ति कर थाना ॥
तीनैाँ नदी तीनि हैं धारा । आप आप मैं देखि निहारा ॥
यह तीनैाँ हैं अगम अपारा । बिरले साधू उतरैं पारा ॥
तिन मैं रहै त्रिभवनी घाटा । ब्रह्मा बिस्नु न पावैं बाटा ॥
संकर जोगी सिद्ध अनूपा । उनहूँ न पायौ आपन रूपा ॥
निराकार अभि अंतर भाई । ता का भेद कहूँ समझाई ॥
सुरति निरति करि खोजै आपू। सुन्न सिखिर चढ़ि खैंचै चाँपू[१] ॥
मांहि ऊपर ब्रह्मंड की तारी । द्वै[२] पट भीतर सुरति सम्हारी ॥
दहिने बाँयैं सिला पहारा । जहँ की बाट न कोइ निहारा ॥
जहँ सत द्वार बैठ सत यारा । अगम अगाध अजर का द्वारा ॥
इमृत पीवै जीव बिचारा । जा सें कटै काल की जारा ॥

॥ दोहा ॥

जोग विधी बेनी कही, सुन्न जोग बिधि गाइ ।
काल कला परचंड यौं, ठग ठग सब को खाइ ॥

॥ चौपाई ॥

अब बेनी संतन की गाऊँ । या से भिन्न भेद दरसाऊँ ॥
संतन की बेनी बिधि न्यारी । तुलसी भाखी देख निहारी ॥
अगम द्वार बेनी असनाना । सो बेनी संतन की जाना ॥
मंजै जोइ अगम गति जानी । वह प्रयाग सब संत बखानी ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी अगम अपार, जहँ बेनी मंजन कियौ ।
सतगुरु पदम प्रयाग, करि अगाध गति जिन कही ॥

---

(१) धनुष । (२) मुन्शी दे० प्र० की पुस्तक के पाठ मैं "दे" है ।

॥ चौपाई ॥

अब तेहि राह रीति दरसाऊँ । भिनि भिनि पंथ मता गति गाऊँ॥
सरगुन से निरगुन बिधि बानी । भिनिभिनिराहरीति सब छानी ॥
परथम दृग दुरबीन लगावै । मन चित सुरति ताहि पर छावै ॥
देखै ता के बीच मँझारा । जगमग जोति होत उजियारा ॥
निरखा निरगुन पुरुष निहारा । जहवाँ सुनै सब्द झनकारा ॥
सेत दीप जिव पहुँचै पारा । कोटिन काल भये जरि छारा ॥

॥ दोहा ॥

निरगुन ज्ञान बिचारिया, सुरति राखिये पास ।
तुलसीदास जहँ बास कर, जीव न जाइ निरास ॥

॥ दोहा ॥

घट रामायन सार, यह घट माहिं घटाइया ।
घट का मथन बिचार, भिन्न भिन्न करि डारिया ॥

॥ सोरठा ॥

निरगुन निरखि निहारि, ता से गुरुपद भिन्न है ।
चौथे पद जद जाइ[१], पद प्रयाग सतगुरु लखै ॥

॥ दोहा ॥

तीन लोक के माहिँ, निरगुन सरगुन रचि रह्यौ ।
सतगुरु इनके पार, सो तुलसी घट लखि पर्यौ ॥

॥ छंद ॥

घट भीतर जानी आदि बखानी । सुरति समानी सब्द मई ॥
देखा निज नैना कहौं मुख बैना । सत्त नाम का मर्म यही ॥१
नहिँ राम अरु रावन यह गति पावन । अगुन सगुन गुन नाहिँ कही ॥
कहि अकथ कहानी अगमकी बानी । बेद भेद गति नाहिँ लई ॥२
सुर नर मुनि ज्ञानी उनहुँ न जानी । पँडित भेष सब कहैं कही ॥
तुलसी मत भारी यह गति न्यारी । बूझैंगे कोइ संत सही ॥३॥

---

(१) मुं० दे० प्र० के पाठ में "जद जाइ" की जगह "मझार" है ।

॥ सोरठा ॥

आदि अंत का भेद, तुलसी तन भीतर लखा ।
सुरति सब्द परकास[१], ज्योँ अकास सर सैल करि[१] ॥

॥ चौपाई ॥

अब सुनु भेद कहौँ अनुसारा । लेकर ज्ञान बान भ्रम जारा ॥
ज्ञान रतन की आँखी होई । जब जम जाल देखिये सोई ॥
सत मत गत अभि अंतर देखै । तत मत अष्ट कँवल मेँ पेखै ॥
सुरति सुहागिन होइ अगमानी । तुरतै मिली सत्त की बानी[२] ॥
अरध उरध बिच बैठे माधो । तत उनमुनी लगाइ समाधो ॥
तारी उलटि तत्त मेँ लावै । रहस नाल मधि जाइ समावै ॥
तुलसी मुद्रा जोग समाधा । आगे भाखौँ भेद अगाधा ॥

॥ दोहा ॥

तुलसी तन के माहिँ, पंथ भेद साधू सही ।
तत मत तोल अँकाइ, अधर जाइ जिन जिन कही ॥

॥ चौपाई ॥

ये सब काल जाल रस रीती । भौक्रत खान जानि जम प्रीती ॥
गगन के मँडल काल अस्थाना । पाँच भूत बिधि जाइ समाना ॥
पाँच पचीस तीन मन मैला । सब जानौ वा को निज खेला ॥
काल जाल जग खाइ बढ़ाया । रिखी मुनी कोइ भेद न पाया ॥
उलटा चलै गगन को धाई । ता से काल रहै मुरझाई ॥
सतगुरु साहिब संत लखावैँ । तब घट भीतर परचा पावै ॥
जो जेइ मूल भेद दरसावै । तब घट मेँ अबिनासी पावै ॥
सतसँग भक्ति हृदे बिच आवै । जब सतद्वार अगम लखि पावै ॥
हिरदै सत्त रहै लौ लाई । सब्द द्वार चढ़ि काल गिराई ॥
मुक्ति ज्ञान पावै अबिनासी । अगम ज्ञान सँग मूल निवासी ॥

---

(१) मुं० दे० प्र० के पाठ मेँ "परकास" की जगह "उम्मेद" व "ज्योँ" की जगह "जो" छपा है । (२) दूसरा पाठ योँ है—"धीरज तत्त सत्त की बानी" ।

यह कोइ बिरला साधू पावै। अविनासी गति अगम लखावै॥
सतगुरु कृपासिंध कोइ जागै। आवा गवन भर्म भै भागै॥
कीन्ही अगम नाम स्रुति सैला। चीन्हा अगम निगम नित खेला॥
अधर सिखर पर तंबू तानै। जहँ से देखै सकल जहानै॥
ब्रह्मँड द्वार एक है नाका। गहि दुरबीन सुरति से ताका॥
मकर तार पावै वह द्वारा। ता पर सुरति होय असवारा॥
सुरति जात लागै नहिँ बारा। चली सुरति भइ नाम अधारा॥
तब पहुँचै इक्किसवँ द्वारा। सुन्न से परे सब्द है न्यारा॥
सुरति सब्द मेँ जाइ समानी। निरं सब्दी गति अगम लखानी॥
जहँ नहिँ पहुँचै मुक्ति पसारा। सोइ है आदि पुरुष दरबारा॥
मुनि अचारि पावै नहिं कोई। सब भौ भर्म रहा जग सोई॥
भँवर गुफा मारग चढ़ि देखा। जहँ जिव सत्त सुरत का लेखा[1]॥
सुन्न सुन्न सब करत बखाना। सुन्न भेद कोइ बिरले जाना॥
कहौं बिस्तार सुन्न की जोई। ज्यौं गूलर फल कीट समोई॥
फल जेते तेते ब्रह्मंडा। दीप दीप फल फल नौ खंडा॥
सुन्न अंड की करी बखाना। कहै तुलसी कोइ साधू जाना॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी सुन्न निवास, सब्द बास जिन घर किया।
जिमि गूलर फल तासु[2], जग भिनि भिनि जेहि लखि परा॥

॥ छंद ॥

भये सुन्न निवासी सब सुख रासी। सुरति बिलासी सब्द भई॥
अनहद हद पारा अगम अपारा। अमी सिंधु स्रुति जाइ लई॥१
देखा उँजियारा घट घट प्यारा। निरखि निहारा पार कहीं॥
तुलसी तुल जावै दस दिस पावै। सिंध फोड़ि असमान गई॥२

---

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक मेँ पाठ इस तरह है- "जहाँ जीव सत पुरुप को पेखा" और (२) सोरठा मेँ "तासु" की जगह "नास" है जो ठीक नहीँ जान पड़ता।

॥ दोहा ॥

सुन्न महल अजपा जपै, समुँद सिखरि के पार।
टूटी गगन गिरा भई, सत्त सब्द झनकार॥
त्रिकुटी टाटी टूटि कै, सुन्न अंड भिनि बास।
घट भीतर परिचय भई, देखा अजर निवास॥

॥ कँवल भेद ॥

॥ चौपाई ॥

घट में सोधि कँवल जिन गाई। लखै कँवल बिरला कोइ भाई॥
अंकुर उतपति कँवल मँझारा। सत्त नाम पद तिनके पारा॥
ऊँच नीच परबत बिच बाटा। काल जहाँ रोकै नहिं घाटा॥
ता के दहिने मारग माई। दामिनि पाँच छेकि नियराई॥
देवै दानी दान चुकाही। पावै जीव अगम की राही॥
दानी कहै जीव सुनि बाता। बिना दान करिहौँ मैं घाता॥
जब जिव कहै समझ सुन भाई। करौ घात केहि कारन जाई॥
अंतर गुफा तहाँ चलि जाऊँ। जहँ साहिब के दरसन पाऊँ॥
पाँचौ नाम जीव जब भाखा। छठवाँ नाम गुप्त करि राखा॥
पाँचौ नाम काल के जानौ। तब दानी मन संका आनौ॥
निरगुन निराकार निरबानी। धर्मराय यौँ पाँच बखानी॥
जीव नाम निज कहै बिचारी। जानि बूझि दानी झख मारी॥
जाव जीव यह राह तुम्हारी। हम नहिं रोकैं बात बिचारी॥
बोल पाँच हमहूँ सुनि पाई। हम नहिं निकट तुम्हारे आई॥
पाँचौ चोर रहे अलगाई। होइ निरभै जिव आगे जाई॥
आगे सात सुमेर उँचाई। नौ नाटक तापर रहैं भाई॥
नौ नाटक पूछन चले आगे। कहौ जीव केहि मारग लागे॥
हम यहि घाट बाट रखवारी। यहाँ न अदली चलै तुम्हारी॥

कहै जीव दुग[1] दानी भाई। हम चलि जाइ नाम चित लाई॥
दानी दान चुकावा आई। जब यहि बाट निभन तुम पाई॥
केहि कर अंस कहाँ तुम जाई। बात आपनी कहौ बुझाई॥
कहै जीव सतलोक निवासा। मैं चल जावँ पुरुष के पासा॥
दानी कहै दूरि है भाई। अगम पंथ कैसे निभ जाई॥
कैान नाम मारग को जाई। कैान नाम से उबरै आई॥
इतना भेद कहौ समझावा। बाट जीव जब घर की पावा॥

॥ जीव बचन ॥

॥ चैापाई ॥

दानी सुनु बिधि बात हमारी। हम चलि जाइँ पुरुष दरबारी॥
सुरति निरति लै लोक सिधाऊँ। आदि नाम लै काल गिराऊँ॥
सत्त नाम लै जीव उबारी। अस चल जाउँ पुरुष दरबारी॥
इतना बचन कही दिल सूना। बहुत त्रास लै मन मैं गूना॥
तुम मारग जावो जिव अपने। हम तुमको रोकैं नहिं सुपने॥
चले जीव आगे पग दीन्हा। करिया सरवर मारग लीन्हा॥
तहँ तो पंछी एक रहाई। निस बासर वो बैठ उँचाई॥
तेहि मारग जिव चला अघाई। चौंचि पसार खान को चाही॥
मुख पंछी बहु भाँति पसारा। जिवरा तो को करौं अहारा॥
अपना नाम कहै टकसारा[2]। तब चलि जैहो वहि दरबारा॥
नहिं हम से तुम बचने पैहो। तो को जिवरा धर धर खैहौं॥
जिवरा सुरति नाम से लाया। करिया मारि पाँव तर नाया॥
जीव चला झरने के पारा। दस दिस देखि परा उँजियारा॥
अमी द्वार इमरत कर बासा। मिटा जीव का संसय सासा॥
अधर जीव इमरत को पीवै। सब्द बुंद इमरत जुग जीवै॥
बस्तु पाइ साधै कोइ साधू। चाखै इमरत सुरति समाधू॥

(१) दुर्ग ? (देखो नोट पृष्ठ १४)। (२) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में "टुक सारा" है।

चटिचटि सुरति चढ़ी अटारी। इमरत अजर नाम की लारी ॥
साहिब अजर सब्द घर पावै। आवागवन बहुरि नहिं आवै ॥
डोरी पुरुष अकास अकेला। किया सुरति घट भीतर मेला ॥
इमरत कँवल भरा भंडारा। पीवै जिव सो उतरै पारा ॥
नाम अगाध कहौं समझाई। सुरति सब्द अगाध सुनाई ॥
जो जिव चाहै अगम निवासा। सुरति करै सब्द में बासा ॥
जिन जिन सुरति सब्द सँवारा। सो चलि गये अगम पद पारा ॥
पावै भेद बस्तु लखि पावै। सो सतलोक सोक नसि जावै ॥
सुरति सब्द में भई अधीना। ताकर भेद काल नहिं चीन्हा ॥
सत्त नाम से काल नसाना। कोइ साधू काया मथि जाना ॥
काया दरपन सुरति समानी। सो साधू साहिब सम जानी ॥

॥ साखी ॥

कँवला काल निरंजना, तिन बस कीन्हा घाट।
भिन्न भिन्न दरसाइ कै, सतगुरु दीन्ही बाट ॥

॥ दोहा ॥

जीव चला घर आपने, काल छेकि जम जार।
नाम सुरति जब लख परा, भागे ठग बटमार ॥
सुरत सब्द मिल लोक मैं, चढ़ि सतनाम जहाज।
तुलसीदास पिया मिले, कीन्हा सेज बिलास[1] ॥

॥ छंद ॥

तुलसी लख जागे काल से भागे। लख द्रुग[2] दानी दूर किये ॥
इमरत रस चाखा सो सब भाखा। जीव अघाइ अनाद पिये ॥१॥

---

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में यह दोहा बिलकुल निराला है—
सुरति शब्द मिलि लोक मैं, चढ़ी नाम की लार।
निज घर अपना पाइ कै, तुलसी कहै बिचार ॥

(२) दुर्ग? (देखो नोट पृष्ठ १४)।

सतनाम्हिजानापद पहिचाना। सुरति सब्द जो जाइ लिये ॥
जिन जो स्रुति सैना देखा नैना। अगम अपनपौ पाइ पिये ॥२॥
हिये खुल गइ आँखी सब विधि भाखी। काल बरन विधि बूझि[१] कही ॥३॥

॥ सोरठा ॥

बानी काल बिचार, तीनि बरन तोली सबै।
कहौं बरन निरधार, सो कोइ साधू परखिहै ॥

॥ चौपाई ॥

काल बैन बिधि भाखि सुनाई। ता की अब मैं करौं लखाई ॥
बानी तीनि तीनि विधि जानी। कँवल मध्य मैं कहौं बखानी ॥
कौन बरन वे कँवल रहाई। जाकी बिधि बिधि कहौं बुझाई ॥
कौने बरन निरंजन देवा। तिन का बरन बताऔं भेवा ॥
करिया बरन काल को भाई। सेत रक्त वे कँवल रहाई ॥
सुन्नि के बरन निरंजन देवा। तिन कर कहौं निरख सब भेवा॥
अब बानी का कहौं विचारा। बूझै साध करै निरवारा ॥
बानी कौन निरंजन होई। बानी कौन काल की सोई ॥
बानी कौन कँवल की लीन्हा। सो सब निरखि बताऔं चीन्हा
बानी अधर निरंजन सोई। बानी क्रोध काल की होई ॥
बानी सेल कँवल कर लीन्हा। येहि विधि से तीनो हम चीन्हा ॥

॥ साखी ॥

निरगुन सरगुन लखि परै, काया काल बिचार।
आदि पुरुष सत लोक मैं, सो घर अधर हमार ॥१॥
घट घट मैं सब लखि परा, भिन्नि भिन्नि अगम पसार।
तन विच सोला द्वार की, तुलसी कहत पुकार ॥२॥

॥ चौपाई ॥

सोला द्वार भेद कहौं भाखी। जा की बरन बिधी कहूँ साखी ॥
प्रथम द्वार का भेद बताऊँ। जा की विधि बरतंत सुनाऊँ ॥

---

(१) मुं० दे० प्र० के पाठ में "बूझि" की जगह "भूल" है।

प्रथम मूल दीप गति गाऊँ। जा की नाम ठाम समझाऊँ॥
सतगुरु गुप्त भेद लखवावै। सोला द्वार भेद जब पावै॥

॥ द्वार भेद ॥

परथम सहस कँवल में द्वारा। दूसर अकह कँवल के पारा॥
तीसर द्वार गगन के नीचे। चौथा द्वार अधर के बीचे॥
जहँवाँ बैठा कंदर[1] काला। जिनहिं बिछाया जग जम जाला॥
पंचम द्वार दसौ दिसं बाहिर। मन रस बैठा जग में जाहिर॥
भँवर गुफा बिच छठवाँ द्वारा। कँवल भँवर तहँ बसै नियारा॥
सतवाँ द्वार दसौ के दहिना। पाँचौ भूत सूत बिन सैना॥
अठवाँ मूल चक्र के माहीं। बैठा मूल मोह रस राही॥
नौवाँ द्वार ताल में होई। स्वाँसा पवन चलावै सोई॥
ये नौ द्वार काल के जाना। दसवाँ द्वारा अधर बखाना॥
द्वारा चारि गुप्त गुहराई। जानै साध संत जिन पाई॥
ऐसे चौधा भेद पुकारा। पंद्रा द्वार सत्त के पारा॥
सोला खिरकी अगम निसानी। जा में सत साहिब की बानी॥
ता के परे द्वार नहिं देसा। जहँ इक साहिब नाम न भेसा॥
संत सैल वह अगम निसानी। बसै संत वोहि धाम अनामी॥
काया मद्धे काल बिचारो। निरंकार से पुरुष नियारो॥
वा का भेद साध कोइ पावै। अगम निगम सोइ संध लखावै॥
जोगी रमक राह नहिं जाना। जोग ज्ञान मत भेद भुलाना॥
प्रानायाम जोग कोइ कीन्हा। कोइकोइ कँवल उलट कर लीन्हा॥
कोइ अष्टांग जोग जस कीन्हा। परम जोग रस रहे अधीना॥
यह सब जोगी जोग कराया। कठिन काल सब घरघर खाया॥

---

(१) गुफा।

जोगी राह रीत दरसाऊँ। भिनि भिनि जोग विधी विधि गाऊ॥
जोग सब्द विधि कहौं बखानी। बूझै जोग कीन्ह सोइ जानी।

॥ कहेरा ॥

जोगी राह रमक तत तारी, करत जोग जुग चारी हो।
ज्ञान जोग मिसिरित[1] मन मैला, चढ़ि अकास नित खेला हो॥१॥
अब तेहि राह रीति दरसाऊँ, बिधि भिनि भिनि गति गाऊँ हो।
बस तन मन रस निरमल होई, इंद्री इस्क खुद खोई हो॥२॥
ता पर तीन तत्व पचबीसा, खड्ग ज्ञान दल पीसा हो।
उनके निकट नेक नहिँ जावै, थिर होइ पवन चढ़ावै हो॥३॥
दीदा फूल भूल दिन राती, त्रिकुटी चढ़ि येहि भाँती हो।
बिधि बायेँ[2] पिँगला गति केरी, इँगला दहिने फेरी हो॥४॥
चंद सूर दम दम बस आवा, सुखमनि चटक चढ़ावा हो।
बंक नाल पल पल नल खोली, अति अजपा नहिँ बोली हो॥५॥
ओहँग तत सोहँग मत जानी, पवन सब्द सँध आनी हो।
थिर मन मेरडंड चढ़ तारी, झलक जोति उँजियारी हो॥६॥
तत अकास आतम बिधि जानी, लख चर अचर बखानी हो।
अंडा तत्त द्वार दरसानी, जोग ज्ञान गति बानी हो॥७॥
यह सब काल खेल भरमाये, सास्तर बेद भुलाये हो।
यह सब जोगि जोग बस कीन्हा, काल राह रस पीना हो॥८॥
वे दयाल बिधि भेद अपारा, संत चीन्ह भये न्यारा हो।
जोग ज्ञान पंडित सुनि मानै, सास्तर पढ़त पुरानै हो॥९॥
जैसे नीर घड़ा जल माहीँ, रबि प्रतिबिंब दिखाई हो।
जब लग घड़ा अकास समाना, तब लग तत दरसाना हो॥१०॥
फूटा घड़ा अकास नसाना, रबि सूरज बिनसाना हो।
तत भयौ नास भास भइ जोती, अंध कूप हिये होती हो॥११॥

---

(१) मुं० दे० प्र० के पाठ में "मिसिरित" की जगह "निसिरित" और (२) "बिधि बायेँ" की जगह "बिधिवा यह" है जो अशुद्ध जान पड़ता है।

अंध अकास भास नहिं पावै, भूल भटक मन आवै हो।
घट बिनसै तन देही पावै, पुनि भव माहिं समावै हो ॥१२
ज्ञान जोग ब्रत संजम कीन्हा, तीनि ज्ञान गति चीन्हा हो।
अंत काल जम जाल फँसाना, बहु बिधि काल चबाना हो ॥१३
तुलसी जोग जुगति कहि भारी, संत अगम गति न्यारी हो।
संत राह रस अगम ठिकाना, जोगी भेद न जाना हो ॥१४

॥ सोरठा ॥

जोगी जुगति बिचार, संत भेद न्यारा कहै।
अगम अगत गति पार, जोग ज्ञान पहुँचै नहीं ॥

॥ चौपाई ॥

दूजा जोग कँवल षट गाऊँ। बसै तासु पर भेद बताऊँ ॥
चढ़ै चक्र षट जोगी गावै। तुलसी सब्द माहिं समझावै ॥
काया माहिं कँवल का बासा। कँवल कँवल कहूँ भूमि निवासा ॥

॥ कहँरा ॥

काया कलस कँवल बिधि भाखी, परख लखी हिये आँखी हो।
भिनि भिनि जोग कँवल बिधि गाई, खुल षट भेद बताई हो ॥१॥
गुदा कर कँवल कहौं दल चारी, गनपति बास बिचारी हो।
छै पखड़ी दल कँवल कहाई, बसै ब्रह्मा तेहि ठाँई हो ॥२॥
अष्ट कँवल दल नाभ बसेरा, बसै बिस्नु तेहि तीरा हो।
दल बारा बिधि सिधि हिये माहीं, सिव कैलास कहाई हो ॥३॥
सोला कंठ कँवल बिधि जानी, जगदंबा जग रानी हो।
सहस कँवल दल दीद निरंजन, घाट रोकि गल गंजन हो ॥४॥
ये सब काल जोग रस माया, सिध जोगी सब खाया हो।
मुद्रा पाँच अवस्था चारी, तीनि ज्ञान गति धारी हो ॥५॥
जोगी काल कलेवर कीन्हा, तप संजम ब्रत धारी हो।
कष्ट भोग फल काया पाया, चारि खानि गति चारी हो ॥६॥

कँवल जोग जोगी गति गाया, भर्म भोगि भै आया हो।
अब कहौं संत भेद विधि सारी, जोग कँवल से न्यारी हो ॥७॥
नौलख कँवल पार दल दोई[1], परे चारि दल सोई हो।
ता के परे अगमगढ़ घाटी, नीर तीर गहि वाटी हो ॥८॥
ता के परे परम गुरु स्वामी, जीव अधर घर धामी हो।
ता के परे परम पद माहीं, साहिब सिंध कहाई हो ॥९॥
ता के परे संत घर न्यारा, अगम अगाध अपारा हो।
तुलसी सैल सुरति से कीन्हा, अगम राह रस पीना हो ॥१०॥

॥ सोरठा ॥

जोग आत्मा ज्ञान, आगे मत जानै नहीं।
करि करि जोग बयान, काल खानि भै रस रहै ॥

॥ चौपाई ॥

जोग निरंजन कीन्ह पसारा। यह सब काल जाल भ्रम डारा ॥
कँवल सहस्त्र समाधि लगावै। मन सोइ काल निरंजन पावै ॥
अंड खंड ब्रह्मंड पसारा। ये सब जानौ मन[2] की लारा ॥
ब्रह्मा बिस्नु महेस कहाये। ये सब मनमत गति उपजाये ॥
मन सोइ निरंकाल है भाई। ता कर बास अकास के ठाईं ॥
वा का सुनौ बास बिधि मूला। अगिनि अकास कँवल जहँ फूला॥
तुलसी ता की बिधी बताऊँ। सब्द राह रस भेद सुनाऊँ ॥

॥ कहेरा ॥

अगिनि अकास जरत जल जाना, ता बिच कँवल फुलाना हो।
डंडी कँवल फूल नभ नारी, रज ब्रह्मा बिस्तारी हो ॥१॥
नाल वोही तम संकर तारी, बिस्नु त्रिपति जग भारी हो।
मिलि तीनौ मन मरम न जाना, कीन्हे वेद पुराना हो ॥२॥

---

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में कड़ी ८ में "दोई" की जगह "होई" है और
(२) आगे की चौपाई की कड़ी ३ में "मन" की जगह "काल" है।

निरंकाल काल अस फाँदा, जीव जोति जग बाँधा हो।
आदि अनादि पंथ नहिं जानी, करि कुपंथ ठग ठानी हो ॥३॥
तीरथ बरत नेम विधि[1] पाला. आस खानि फल डाला हो।
नर तन भटक भटक भटभेरा, बाँधा न भौजल[2] बेड़ा हो ॥४॥
तन सराय छूटत छिन माहीं, सेमरि सुवा पछिताई हो।
तुलसीदास चेत नर अंधा, परखि लखौ दुख दंदा हो ॥५॥

॥ चौपाई ॥

ये सब मन का भेद बताया। मन रचि कीन्हा खेल बनाया ॥
धरती गगन चंद औ सूरा। निरंकाल रच मन मत मूरा ॥
सोइ मन अस बस बिष रस माईं। भूला भरम खानि गति जाईं ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी तरक विचार, सार पार गति ना लखै।
यह मन विषम बिकार, ता की गति मति सब कही ॥

॥ छंद ॥

तुलसी मति न्यारी कहत विचारी। जगत भिखारी जाल मई ॥
सुर नर मुनि नाचे कोइ न बाचे। आदि अंत सब छार छई ॥१
संतन सोइ जाने सुरति समाने। जिन वा घर की राह लई ॥
मैं उनका चेरा किया निबेरा। सुरति सैल अज अधर गई॥२
मन की गति पाई सुरति छुड़ाई। रामायन घट माहिं कही ॥
ले लेख अलेखा सब विधि देखा। संत चरन सत सार सही ॥३
चीन्हा वह द्वारा सुरति सम्हारा। नैन निहारा पार गई ॥
तुलसी विधि गाई सबै सुनाई। संत सहाई राह दई ॥४॥
कुंजी अरु तारा खोल किवारा। निरखि निहारा सूर भई ॥
जाना सत नामा अगम ठिकाना। लखि असमाना तिमर गई॥५
तुलसी रस ज्ञाना माहिं बखाना। धसि असमाना अगम लई ॥

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में कड़ी ४ में "विधि" की जगह "नित" और
(२) "बाँधा न भौजल" की जगह "बाँधौ नभ जल" है।

॥ सोरठा ॥

यह बिधि निरमल ज्ञान, सत मत सुरति लखाइया ।
जब पाया वह ठाम, आदि अंत सोइ सुधि भई ॥

॥ सोरठा ॥

कीन्हा ग्रंथ बनाइ, पाइ गाइ गति अस कही ।
भई गुरन पद पार, सार पदम पद लखि रही ॥

॥ चौपाई ॥

आगे अगम लोक गति गाऊँ । सत्त नाम सत धाम लखाऊँ ॥
जब नहिँ निराकार और जोती । आदि अंत कछहू नहिँ होती ॥
जब दयाल सत साहिब दाता । जबकी सुनौ सकल बिख्याता ॥
मैँ अजान कछु मरम न जानौँ । संत कृपा सत साखि बखानौँ ॥
सतगुरु संध संत दरसाई । उन रज कही महूँ पुनि गाई ॥
मैँ बुधिहीन अचीन्ह अनारी । कीन्ही कृपा सुरति मतवारी ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी मनहिँ बिचारि, संत अंत गति लखि परी ।
भाख्यौँ सरनि सिहार, सार पार जस जस भई ॥

॥ सोरठा ॥

सत्त लोक सत नाम, और अनाम आगे कही ।
सबहि संत ब्रत मान, मैँ निकाम सरनै लई ॥

॥ चौपाई ॥

अब कहूँ आदि अगाध अनामी । ताकी गति मति संत बखानी ॥
जो कछु सत्त सीत उन केरी । महूँ पाइ मति निरखि निबेरी ॥
तुलसी जब जोइ जस जस भाखा । आदौ बिरछ पेड़ पत साखा ॥
पिरथम पुरुष अनाम अकाया । जास हिलोर भई सत माया ॥
माया नाम भया इक ठौरा । सत मत नाम बँधा इक डोरा ॥
सत्त लोक सत साहिब साँईं । सत्त मिले सत नाम कहाई ॥
चौथा पद संतन सोइ भाखा । सो सत नाम कीन्ह अभिलाखा ॥

सत्त नाम से निरगुन आया । ता को बेद ब्रह्म बतलाया ॥
ता की अब मैं कहौं लखाई । त्रिकुटी रावन ब्रह्म कहाई ॥
माया कुमति ब्रह्म इक ठौरा । भया राम मन चहुँ दिसि दौरा ॥
पाँचौ इंद्री प्रकृति पचीसा । तीनि गुनन मिलि सरगुन ईसा ॥
इंद्री पिता भरत है भाई । गुन तन कुमति संग मन माहीँ ॥
इच्छा सँग रँग मन मति भूला । खस परा बुंद भया अस्थूला ॥
ता को सब जग राम बखाना । ईस कर्म मन भर्म भुलाना ॥
निराकार मन भया अकारा । जोति मिली गुन तीनि पसारा ॥
ब्रह्मा बिस्नु भये महादेवा । इनकी उतपति मन मत भेवा ॥
सास्तर बेद संस्कृत बानी । ये सब मनमत गति उतपानी ॥
दस औतार जगत जग माया । यह मन और अनेक उपाया ॥
ऋषी मुनी जोगीसुर ज्ञानी । मन करता कर सब मिलि मानी ॥
तीरथ बरत बेद ब्यौहारा । जग भूला मन जाल पसारा ॥
जा से नाम भेद नहिँ जानै । मनहि राम को नाम बखानै ॥
नाम गती है अगम अपारा । ब्रह्म राम दोउ पावैँ न पारा ॥
निरगुन ब्रह्म राम मन होई । नाम अगम गत अगत अघोई ॥
ता का पटतर मन पर लावै । ता से नाम भेद नहिँ पावै ॥

॥ दोहा ॥

येहि बिधि आदि अनादि, लखा भेद भिनि सब कह्यौ ।
स्तुति निःनाम अधार, जाना जिन अंदर कह्यौ ॥

॥ छंद ॥

है निःनामी अकथ अनामी । दस दिसि लसि सर सैल कही ॥
भाखा सतनामा ब्रह्म अकामा । माया मिलि मन जार लई ॥१॥
काया अस्थूला मन सहै सूला । इंद्री बस भै खानि मई ॥
काया गति धारी कर्म बिचारी । भूल भटक भै भार सही ॥२॥

॥ सोरठा ॥

काया रचन बिचार, जाही से ये जग भया ।
सो बिधि कहौं सँवार, बूझै जो जिन घट लखा ॥

॥ चौपाई ॥

उतपति जोनि खानि मन दीन्हा । गर्भ भीतर वालक को चीन्हा ॥
उतपति कारज बीरज डीठा । यह मन बात लागि मद मीठा ॥
या कर लेखा कहौं बनाई । तब जग हिरदे सत्त समाई ॥
सुनौ गर्भ की बात बिचारा । मात पिता रज बीर्ज सँवारा ॥
उलटा उरधमुखी दुख पावै । तन भीतर का को गोहरावै ॥
भया बिकल मुख नरक समाना । जठर अगिन तन तपन जराना ॥
आजिज भया बिकल बहु भारी । अति दुख मैं रहा बिकल दुखारी ॥
तब साहिब से अरज पुकारी । बंदीछोर मोहिं लेव उबारी ॥
निस दिन बँदगी करौं तुम्हारी । अब मोहिं काढ़ौ महा दुखारी ॥
अब तोहिं नेक न बिसरौं साँई । बार बार सुमिरौं चित लाई ॥
दीन दुनी से मन नहिं लाऊँ । आठ पहर तुम्हरा गुन गाऊँ ॥

॥ सोरठा ॥

इतना किया करार, जब गर्भ से बाहिर भया ।
भूला सिरजनहार, तुलसी भौ जग जाल मैं ॥

॥ चौपाई ॥

अब बाहिर का लागा रंगा । माता मोह पिता के संगा ॥
लरिकाई लट पट जग खेला । तोतरि बात मात सँग बोला ॥
भाई बंद सकल परिवारा । ठुमठुम पाँव चलै तेहि लारा ॥
लरिकाई ऐसी बिधि खोई । तरुन भये तरुनी सँग मोही ॥
मन की मौज करै रस रंगा । भूला ज्ञान भया चित भंगा ॥
अब साहिब की याद बिसारी । माया मोह बँधा संसारी ॥
मद मैं मस्त कछू नहिं सूझै । साध संत को कछू न बूझै ॥
खान पान निस दिन मदमाता । कामिन संग रहै रँगराता ॥

जिन यह घट का साज बनाया। ताहि बिसारि जगत मन लाया॥
यह जग झूँठ सराय बसेरा। भोर भये उठि सूना डेरा॥
ऐसे या जग का ब्योहारा। जनम जुवा जस बाजी हारा॥
नेक न साहिब से मन लाया। बिरध भया तब अति दुख पाया॥
ऐसे सकल जनम गयो बीती। नेक न जानी साहिब रीती॥
अंत समय जम आनि सतावा। मुसकिल कष्ट महा दुख पावा॥
मार परै जब कौन बचावै। कठिन काल बिकराल[1] सतावै॥

॥ दोहा ॥

ऐसा नर तन पाइ कै, बादइ जनम गमाइ।
सो अस अंधा जग भया, परै नरक मैं जाइ॥

॥ छंद ॥

ऐसा जग भूला सहै जम सूला। धर्मराय तन त्रास दई॥
निज नाम न जाना बहु पछिताना। जिन नित काल की मार सही॥१
ता से नर चेतौ छाँड़ि अचेतौ। नर तन गति ये जाति बही॥
तुलसी कही साची कोउ न बाची। बिन सतसंगति पार नहीं २

॥ सोरठा ॥

तुलसी देखि बिचार, यह तन मन को सुपन है।
बहि मत जाइ गँवार, यह जग जल भौ पेखमा॥

॥ चौपाई ॥

निःनामी निःअच्छर भाखौं। अब निज सुरति नाम से राखौं॥
ता से जीव होइ निरवारा। भवसागर से उतरै पारा॥
संत कृपा सत संगति होई। सतगुरु मिलि होइ नाम सनेही॥
अब मैं कहौं आदि गति न्यारी। घट देखै सो लेइ बिचारी॥
सब गति भिन्न भिन्न कहौं भाखा। जानै जीव मिटै अभिलाखा॥
पिंड माहिँ ब्रह्मंड बताऊँ। भिन्न भिन्न ता को दरसाऊँ॥
जो बाहिर सोइ पिंड दिखाई। देखा जाइ पिंड के माहीं॥

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में "बिकराल" की जगह "जब आइ" है।

तुलसी ताहि पाइ धसि देखा। घट भीतर भिनि भिन्न विवेका ॥
जस जस संत कहा घट लेखा[१]। तस तस तुलसी नैनन देखा ॥
अब मैं या की कहौं लखाई। जो घट भीतर दीन्ह दिखाई ॥
तुलसि निकाम संत कर बंदा। जित जित जोऔं जग सब अंधा॥[२]
कोइ न मानै बात सत मेरी। फिरि फिरि कर्म बँधे भै बेरी ॥
भिन्न भिन्न संतन गोहरावा। काहू हिरदे चेत न आवा ॥
घट मैं सुरति सैल जस कीन्हा। कागभसुंड भाखि तस दीन्हा ॥
कागभसुंड कितहुँनहिं भयेऊ। तुलसी सुरति सैल तन कहेऊ ॥
कागभसुंड काया के माहीं। राम रमा मुख पैठा जाई ॥
तुलसी ता की गति मति जानी। रामायन मैं कीन्ह बखानी ॥
यह सब घट मैं भाखि सुनाई। अंधे जिव अंतै लै जाई ॥
भरत चत्रगुन लछिमन भाई। यह घट माहिँ कहेउ समझाई ॥
सुमिंतरा केकइ कौसिल्या। ये तन भीतर घट मैं मिलिया ॥
सीता दसरथ राम कहाये। ये सब घट भीतर दरसाये॥
सरजू सुरति अवध दस द्वारा। ये घट भीतर देखि निहारा॥
रावन कुंभ लंकपति राई। त्रिकुटी ब्रह्म बसे तेहि माहीं ॥
रावन ब्रह्म कहा हम जोई। त्रिकुटी लंक ब्रह्म है सोई ॥
मन्दोदरी भभीषन भाई। इंद्रजीत सुत त्रिकुटी माहीं ॥
ये संवाद कहा घट माहीं। रामायन घट माहिँ बनाई ॥
जो कोइ अंध जीवनहिं मानै। पुनि पुनि परै नरक की खानै ॥
संतन की गति कोइ न जानै। पिंड माहिँ ब्रह्मंड बखानै ॥
उनकी गति मति कोइ कोइ जानै। बिन सतसंग नहीं पहिचानै ॥
उनकी कृपा दृष्टि जब होई। तब अदृष्ट को बूझै सोई ॥
पिंड ब्रह्मंड सैल कोइ पावै। तब सतगुरु सत दया लखावै ॥

---

(१) मुं० दे० प्र० के पाठ मैं यह कड़ी ऐसे है-"आगै जस जस संतन लेखा"।
(२) मुं० दे० प्र० की पुस्तक मैं यह चौपाई और आगे की दो छूट गई हैं।

अब ब्रह्मंड की कहौं लखाई। कोइ कोइ साधू बिरले पाई॥
जो कोइ भये अधर मैं लीना। जिन को आया संत अकीना॥
जिन जिन सुरति सैल घट कीन्हा। ता की गतिमति बिरले चीन्हा॥
अब मैं अपनी कहौं दृढ़ाई। सुरति सैल घट माहिँ लखाई॥
रावन राम सकल परिवारा। ये घट भीतर चुनि चुनि मारा॥
और अनेक कहे बहु भाँती। ये सब माया की उतपाती॥
ये मत सत्त सत्त जिन माना। उनका आवागवन नसाना॥
या मैं कोई भर्म जो लावै। बार बार चौरासी पावै॥
मैं अपने अस देख बखानी। संत कृपा से महुँ पुनि जानी॥
अब ब्रह्मंड पिंड कर लेखा। भाखा जोइ निज नैनन देखा॥

॥ दोहा ॥

पिंड सैल ब्रह्मंड की, जस जस गति मति मोर।
जो सत मत संतन कही, देखा घट गढ़ तोर॥

॥ छंद ॥

गाया घट लेखा अगम अलेखा। जिन जिन देखा सार सही॥
महुँ पुनि भाखी देखा आँखी। सूरति धसि दस द्वार गई॥१॥
संतन जोइ गाई महुँ पुनि पाई। आदि अंत गति कहनि कही॥
जो जो घट माहीँ सब दरसाई। जो रचना ब्रह्मंड मई॥२॥
जिनजिननिजजानीदेखबखानी। जिन नहिँ मानी भर्म सही॥
पंडित गति ज्ञानी भर्म भुलानी। भेष भेद भौ माहिँ कही॥३॥
छत्री और ब्राह्मन बैस अपावन। सूद्र मती छर छार भई॥
का को गोहराई आदि न पाई। तुलसी सब देखा भर्म मई॥४॥

॥ सोरठा[1] ॥

ब्राह्मन अरु पुनि सूद्र, ये बूड़े सब उद्र को।
वैस्य बसा भौ बास, कस अकास डोरी गहै॥

---

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में यह सोरठा ऐसे है–
"ब्राह्मन ऊद्र समांइ। छत्री बूड़े लड़न मैं।
वैस शूद्र भर्म मांइ। को अकाश डोरी गहै॥"

॥ चौपाई ॥

सब ये घट की सैल बखाना । पिंड माहिँ ब्रह्मंड दिखाना ॥
आगे घट का भेद बताई । अब जो सुनो कहौँ समझाई ॥
तिल परमाने लगे कपाटा । मकर तार जहँ जिव की बाटा ॥
इतना भेद जानि जिन कोई । तुलसीदास साध है सोई ॥
आगे अदबुद ज्ञान अपारा । पिरथम घट का कहौँ बिचारा ॥

॥ अथ घट का भेद और ठिकाना ॥

(सवाल)

१ पृथ्वी का माथा कहाँ है ?	१८ तिल भर हाड़ काया मैं कहाँ है ?
२ सूर का तेज ,,	१९ गगन का कलेजा ,,
३ चंद्र की जोति ,,	२० मन का मुख ,,
४ पानी का मूल ,,	२१ काम की आदि ,,
५ कँवल का फूल ,,	२२ देही का नूर ,,
६ वायु की नाभी ,,	२३ बदन का पिंजर ,,
७ गनेस की स्वाबी ,,	२४ सिव का ध्यान ,,
८ समुद्र का सोत ,,	२५ बेद का भेद ,,
९ आकास का पोत ,,	२६ गुनी का गुन ,,
१० सुरति सहदानी ,,	२७ राग का रस ,,
११ जीव की बानी ,,	२८ सुर का आकार ,,
१२ जीव का नाम ,,	२९ आकार की आदि ,,
१३ सुरति का ठाम ,,	३० अंत की समाधि ,,
१४ ध्यान की सुरति ,,	३१ माया की धुनि ,,
१५ ज्ञान की मूरति ,,	३२ धुनि की सुन्न ,,
१६ सुरति की निरति ,,	३३ सुन्न का सब्द ,,
१७ सुमेर की जड़ ,,	३४ ज्ञान का मूल ,,

॥ सोरठा ॥

इतना देहु बताइ, जीव कहौं समझाइ कै।
अगम निगम घर पाइ, तव तुलसी सव बिधि लखै॥

(जवाब)

॥ चौपाई ॥

आगे उलटा भेद बताऊँ। अगम निगम घट भेद सुनाऊँ॥
अब या का अरथंत सुनाऊँ। घट मैं ठीका ठौर बताऊँ॥
जो कोइ साध सैल घट कीन्हा। सुन करि अर्थ होइ लै लीना॥

अर्थ—१ पृथ्वी का माथा मैनागिरि देस में है।
२ सूर का तेज उदयागिरि परवत मैं है।
३ चंद्र की जोति चंदागिरि परबत मैं है।
४ पानी का मूल निरंजन के दीदे मैं है।
५ कँवल का फूल अछै दीप मैं है।
६ वायु की नाभी रंभा के पेड़ मैं है।
७ गनेस की स्वाबी मान सरोवर मैं है।
८ समुद्र का सोत समीरूख मैं है।
९ आकास का पोत वाराह के माथे पर है।
१० सुरति सहदानी सब्द मैं है।
११ जीव (हंस) की बानी अष्टकँवल मैं है—जीव अरूपी द्वादस कँवल मैं है।
१२ जीव का नाम सुन्न कँवल मैं है।
१३ सुरति का ठाम दोइ दल कँवल मैं है।
१४ ध्यान की सुरति गगन के ऊपर नयन नासिका के अग्र बीच मैं है।
१५ ज्ञान की मूरत ब्रह्मंड कँवल मैं है।
१६ सुरति की निरति साहिब के सब्द में है।
१७ सुमेर की जड़ नाग के कलेजे में है।

१८ तिल भर हाड़ पाँच इंद्रियोँ मेँ है।
१९ गगन का कलेजा राग के आकार मेँ है।
२० मन का मुख षटदल कँवल मेँ है।
२१ काम की आदि संकर की सुरति मेँ है।
२२ देँही का नूर हरि के पास है।
२३ बदन का पिंजर पृथ्वी के भीतर है।
२४ सिव का ध्यान हरि के सब्द कँवल मेँ है।
२५ बेद का भेद चार दल कँवल मेँ है।
२६ गुनी का गुन षटदल कँवल मेँ है।
२७ राग का रस पुरुष के सब्द मेँ है।
२८ सुर का आकार सुन्न मेँ है।
२९ आकार की आदि अनहद मेँ है।
३० अंत की समाध साहिब के लोक मेँ है।
३१ माया की धुन चतुरदल कँवल मेँ है।
३२ धुन की सुन्न बेद के मूल मेँ है।
३३ सुन्न का सब्द निरंतर मेँ है।
३४ ज्ञान का मूल नाम मेँ है।

॥ दोहा ॥

ये अस्थान बताइया, साधू सुनौ बखान।
कहै तुलसी घट भीतरे, सूरति से पहिचान॥

॥ सोरठा ॥

रामायन घट सार, सुरति सब्द से लखि परै।
गगन कंज कर बास, ऊपर चढ़ि जिन देखिया॥

॥ चौपाई ॥

अब सुनियौ ब्रह्मंडी लेखा । कोटिन परलै घट बिच देखा ॥
भीतर गुफा एक जो कीन्हा । कोटि प्रलै उबार जिव लीन्हा[1] ॥
सब्द निरंतर सत है भाई । गहै जीव पहुँचै जब जाई ॥
घट का मथन सुरति से[1] साधै । वा को काल कभी नहिं बाँधै ॥
कोटिन सूर ब्रह्मंड के माहीं । कोटिन कोटि देखि सब ठाहीं ॥
घट बिचार घट ही के माहीं । ता में ब्रह्मा बिस्नु रहाई ॥
सिव संकर सब घट में फंदा । घट में नदी अठारा गंडा ॥
घट में देखे सात समुंदर । जिन से जल पहुँचै नभ अंदर ॥
घट में तीरथ बरत मँझारी । घट में देखा कृष्न मुरारी ॥
घट में जोधा सामँत होई । घट में राजा परजा सोई ॥
घट में हिंदू तुर्क दोइ जाती । घट में कुला कर्म की पाती ॥
घट में नेम दया अरु धर्मा । घट में पाप पुन्य बहु कर्मा ॥
घट में डंड बंध दोउ भाई । जो कछु बाहिर सो घट माईं ॥
घट में बास बसन जगलागा । घट में कामिनि खेलै फागा ॥
घट में षट पलास सोइ फूला । घट में लोग प्रजा झकझूला ॥
घट में स्वर्ग नर्क हैं दोई । घट में जनम मरन पुनि होई ॥
घट में कथा पुरान सुनावै । घट में माया करम करावै ॥
घट में चोरी चोर अपारा । घट में करता सिरजनहारा ॥
घट में राजा राज कराई । घट में चौकी पहरा भाई ॥
घटही में सब न्याव चुकावै । घट में रागी तान सुनावै ॥
घट में नाच कूद रे भाई । घट में राग अलाप सुनाई ॥
घट में साह महाजन होई । घट में सब्द सुन्न है सोई ॥
घट में राजा है बलि बावन । घट में सीता रघुपति रावन ॥

---

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में दूसरी चौपाई इस तरह है--"भीतर गुफा एक है भाई । उबरे जीव पार जब जाई"; और चौथी चौपाई में "सुरति से" की जगह "जीव कोइ" है ।

घट में लंका सा गढ़ भाई। घट में छानवे मेघा छाई॥
घट में बैठे पाँचौ नादा। घट में लागी सहज समाधा॥
घट में चारौ बेद रहाई। घट में असंख्य ब्रह्म समाई॥
घट में सात स्वर्ग पाताला। घट में बैठा काल कराला॥
जो कछु बाहिर सो कछु अंतर। घट का भेद घटहि में मंतर॥
घट में अरसठ तीरथ भाई। घट में गंगा धार बहाई॥
घट में लोग करैं अस्नाना। घट में तीनो लोक समाना॥
घट की थाह कोई नहिं जाना। घट में पिंड ब्रह्मंड समाना॥
घट में हाट बजार लगाया। घट में दामिनि मन पति पाया॥
घट में परबत बृच्छ पहारा। घट में बैठे दस औतारा॥
घट में हाथी घोड़ा होई। घट में हिरन रोझ[1] सब कोई॥
ऊँच नीच परबत झक झाई। निस दिन झरना बहत रहाई॥
मगर मच्छ घट माहिं मँझारा। घट में बस्ती और उजारा॥
घट में सुकदेव ब्यास अरु नारद। घट में ऋषी मुनी अरु सारद॥
घट में राजा बरन कुबेरू। घट में माँडे आठ सुमेरू॥
कहँ लगि घट का कहौं पसारा। घट में अनेक बिधान सँवारा॥
जो सब घट कहि बरनि सुनाई। तौ जग कागद मिलै न स्याही॥

॥ दोहा ॥

घट भीतर जो देखिया, सो भाखा बिस्तार।
भेदी भेद जनाइया, तुलसी देखि निहार॥

॥ छंद ॥

सब ठीक बखाना घट परमाना। घट घट में सब ठाम ठई॥
बाहिर सोइ अंदर सब घट मंदर। देखि हिये बस बास कही॥
बूझै कोइ ज्ञानी अंतरजामी। मूरख मूढ़ न चेत भई॥
आगे पुनि गाऊँ बरनि सुनाऊँ। इन सब के अस्थान मई॥
तुलसी तन तारा खोलि किवारा। पैठि मँझारा सार लई॥

---

(१) हिरन की एक जाति।

॥ सोरठा ॥

या बिधि तन मन ज्ञान, भीतर देखा जोड़ कै।
साधू करैं प्रमान, भिन्न भिन्न तत मत कहा ॥

॥ चौपाई ॥

अब उनके अस्थान बताऊँ। भिनि भिनि ग्रंथन मैं समझाऊँ॥

॥ कोठाँ के नाम ॥

कोठा प्रथम उतेसुर नाईं। बैठे ब्रह्मा बेद पढ़ाईं॥
दूसर धरम-गंध दरसाईं। बैठे बिस्नू ज्ञान सुनाईं॥
तीसर कोठा धुन-घर भाईं। बैठे संकर जोग कराईं॥
चौथा कोठा रुक्मनि गाईं। बरुन बैठि जहँ राज कराईं॥
हरि संग्रह पंचम बतलाऊँ। आठ सुमेर बसैं तेहि ठाऊँ॥
बिजै-धुंध षष्टम कहलाईं। मन की कला फिरै तेहि ठाईं॥
कोठा सतवाँ नगरा नाऊँ। अन्नदेव बैठे तेहि ठाऊँ॥
कोठा अठवाँ रुकमन ताला। जहँवाँ बैठे मदन गोपाला॥
नौवाँ कोठा गौड़ मन माली। दुरमति माया करै बिहाली॥
दसवाँ कोठा उघटू नावाँ। सहस कोटि ऊगैं तेहि ठावाँ॥
करभौनी एकादस नाऊँ। तीनि लोक मैं जोति समाऊँ॥
द्वादस कोठा बिषमदे गावा। सुरनर मुनि जहँ ध्यान लगावा॥
कोठा त्रयोदस मलदू द्वारे। जोगिनि चौंसठ लाख निहारे॥
चौधा कोठा गगनधर नाऊँ। लच्छ अलच्छ बैठि तेहि ठाऊँ॥
हमसुन्दर पंद्रा कर नावाँ। बास सुगंध बसै तेहि ठावाँ॥
कोठा सोला अतिसुर नाऊँ। पाँच बजार बसै तेहि ठाऊँ॥
कोठा सत्रा सिखरचल नाऊँ। अठरा गंडा नदी तेहि ठाऊँ॥
अठरा कोठा कड़ेसुर नाऊँ। जीव को तेज बसै तेहि ठाऊँ॥
कोठा उनीस बंकचल नाऊँ। मुरली सुहावन बजै तेहि ठाऊँ॥

बिसवाँ कोठा कुलँग कहाई । सुकृत बाजा बजै सुहाई ॥
इकइस कोठा भानसुर नाऊँ । अलख निरंजन है तेहि ठाऊँ ॥
बाइस कोठा धुँधेसुर नाऊँ । मन को ध्यान बसै तेहि ठाऊँ ॥
तेइस कोठा तरंगी ताला । बिछुई जे जग मैं जमजाला ॥
चौबिस कोठा कंठसुर नाऊँ । सुमति बिचार बसै तेहि ठाऊँ ॥
पच्चिस कोठा प्रकृती[1] नाऊँ । मल को पती बसै तेहि ठाऊँ ॥
छब्बिस कोठा मुदापल नाऊँ । पवन प्रधान बसै तेहि ठाऊँ ॥
सताइस कोठा सुताचल नाऊँ । मन अलीप बैठे तेहि ठाऊँ ॥
अठाइस कोठा धरनीधर नाऊँ । माया मोह बसै तेहि ठाऊँ ॥
उंतिस कोठा कमंची नाऊँ । बादल मेघ उठै तेहि ठाऊँ ॥
तिसवाँ कोठा निरमल नामूँ । साहिब पलँग बिछा तेहि ठामूँ ॥
इकतिस कोठा करोमल नामूँ । नवो नाथ बसते तेहि ठामूँ ॥
बत्तिस कोठा बनासुर नामा । नौ कुत्ते बैठे तेहि ठामा ॥
तैंतिस कोठा अनंधू नामूँ । जम का तेज बसै तेहि ठामूँ ॥
चौंतिस कोठा जमाउत नामा । जमुना नदी बसै तेहि ठामा ॥
पैंतिस कोठा सकरदू[2] सेता । कामदेव जहँ झरि झरि बहता ॥
छत्तिस कोठा गनकू नामूँ । क्रोध कलेस बसै तेहि ठामूँ ॥
सैंतिस कोठा अवर धुर धुंधा । बैठ कृष्न जहँ डारै फंदा ॥
अरतिस कोठा बंसबल नाऊँ । चौथा कामिनि हैं तेहि ठाऊँ ॥
उन्तालिस करियाधर नाऊँ । बैठे दया धरम तेहि ठाऊँ ॥
चालिस कोठा किरिकोता नामूँ । सात समुद्र बसैं तेहि ठामूँ ॥
इकतालिस भैरादे नामा । नवौ कुली नाग तेहि ठामा ॥
बयालीस कुंभेसुर नाऊँ । बारह कुंभ बसैं तेहि ठाऊँ ॥
तैंतालिस भगताधर नावाँ । भय और त्रास बसै तेहि ठावाँ ॥

---

(१) मुं० दे० प्र० के पाठ मैं "परकुटी" है । (२) एक लिपि मैं "सरंदू" नाम लिखा है ।

चवालीस कुसमाधर नाऊँ। चारौ बेद बसैं तेहि ठाऊँ॥
पैंतालिस मायारट नाऊँ। रोग अरु दोष बसै तेहि ठाऊँ॥
छेयालीस मलया गिरि नावाँ। हंस बिहंग बसै तेहि ठावाँ॥
सैंतालीस हलासुर[१] नामा। तीरथ अरसठ हैं तेहि ठामा॥
अरतालिस कुकरंदर न्यारा। जहँ है सत्त सुकृत[२] का द्वारा॥
कोठा उंचास मरमी नाऊँ। पवन अकास उठै तेहि ठाऊँ॥
कोठा पचास घूघर नामूँ। हरि को तेज बसै तेहि ठामूँ॥
कोठा इक्यावन मजकुर नामा। सहस कँवल फूला तेहि ठामा॥
बावन कोठा जरादे नामूँ। अगिनी जरै ऊँच तेहि ठामूँ॥
त्रेपन कोठा तेराधर नामूँ। धीर गँभीर बसै तेहि ठामूँ॥
चैावन कोठा सिसंधर नावाँ। सत संतोष बसै तेहि ठावाँ॥
पचपन कोठा हिँडोला नामूँ। नारी नवो बसै तेहि ठामूँ॥
छप्पन कोठा निरधर नाऊँ। अठारा भार बसै तेहि ठाऊँ॥
सतावन कोठा कफादे नावाँ। जीव की मीच बसै तेहि ठावाँ॥
अट्ठावन सुमेरबल नावाँ। मंगल पुरुष चरित्तर गावाँ॥
उनसठ कोठा छैसुंदर नाँमा। आतम रूप बसै तेहि ठामाँ॥
साठ कोठा धैालाधर नाऊँ। तीनो लोक मही तेहि ठाऊँ॥
इकसठ कोठा जैसुंदर नामूँ। बलधर पुरुष बसै तेहि ठामूँ॥
बासठ कोठा हीरापुर नामूँ। नीर चुवै झरि झरि तेहि ठामूँ॥
त्रेसठ कोठा कलाकर नावाँ। चौथा भवन बसै तेहि ठावाँ॥
चौंसठ तिल बिक्रम कहलावै। जल थल कुंभ बसै तेहि ठाँवै॥
पैंसठ कोठा सुरतसर नामूँ। जप तप जज्ञ करै तेहि ठामूँ॥
छासठ कोठा सिखरिचल नाऊँ। जोगी असंखन जोग कराऊँ॥
सरसठ कोठा अनंदी भाई। जहँवाँ काल बसन नहिं पाई॥

---

(१) एक लिपि मेँ "कोलाहर" नाम दिया है। (२) मुं० दे० प्र० की पुस्तक मेँ "सुकृत" की जगह "मुक्त" है।

अरसठ कोठा चितादे नाऊँ । चित का चक्र फिरै तेहि ठाऊँ ॥
उन्हत्तर कोठा सनीता नाऊँ । ज्ञानी बुद्ध बसै तेहि ठाऊँ ॥
सत्तर कोठा सलीका नाऊँ । सुन्न की धुन्न उठै तेहि ठाऊँ ॥
इखत्तर कोठा उदाधर नाईं । जहँ जग पालक बैठि रहाईं ॥
बहत्तर कोठा गंजधर नाऊँ । करनी मूल बसै तेहि ठाऊँ ॥
कोठा बहत्तर कहेउ बखानी । ले लख भीतर जो पहिचानी ॥
यह घट देखि देखि सोइ भाखा। बूझि बूझि साधू मन राखा ॥
रामायन घट कहि समझाई । काया भीतर कथि दरसाई ॥
काया खोज मुक्ति जब होई । बिन खोजे सब गये बिगोई ॥
काया भीतर सब की पूजा । सिव सनकादि आदि नहिं सूझा ॥
बाहिर कथि कथि रहे भुलाई । काया भीतर वस्तु न पाई ॥
कोठा बहत्तरि हम कहि दीन्हा । कोऊ न काया भीतर चीन्हा ॥
सास्तर संसकिरत में फूले । ऋषी मुनी जोगेसुर भूले ॥
या से राह घाट नहिं पाई । बहे कर्म भौजल के माईं ॥

॥ दोहा ॥

सत्त नाम सूरति गहै, सतगुरु सरन निवास ।
तुलसी तरँग तरास ज्यौं, लखि पहुँचै तेहि पास ॥

॥ छंद ॥

घट की गति गाई भाखि सुनाई ।लखि पाई पद पार कही ॥
जो जो परमाना घट मठ जाना । ठाम ठिकाना ठौर मई ॥१॥
तुलसी तस देखा घट बिच लेखा । पेखा तत मत पूर जही ॥
आगे जस होई भाखौं सोई । जो जो सिद्ध[1] समाधि लई ॥२॥

॥ सोरठा ॥

सिध चौरासी नाम, घट भीतर सब देखिया ।
ता कर कहौं बखान, जस जस ठीका नाम गुन ॥

---

(१) मुं० दे० प्र० के पाठ में "सिंध" है जो छापे की भूल मालूम होती है ।

॥ चौपाई ॥

सिध चौरासी घट में होई । ता को देखा सुरति बिलोई ॥
ता कर ठौर ठिकाना भाखौं । आदि अंत ठीक कर ताकौं ॥
सिद्ध सिद्ध के नाम बताऔं । छानि भेद सूच्छम दरसाऔं ॥

॥ सिद्धों के नाम[1] ॥

१ अजोनी सिद्ध	१९ जैपाल सिद्ध
२ अजर दया ,,	२० अजया काल ,,
३ पवनगिरी ,,	२१ केदारली ,,
४ उचंद कँवल ,,	२२ रतनागिरि ,,
५ उदद कँवल ,,	२३ मेलमहंत ,,
६ पेषनादार ,,	२४ उदया ,,
७ नालीवर ,,	२५ झकझेला ,,
८ कोमार ,,	२६ उषमजार ,,
९ बालागिर ,,	२७ मनउतगिरि ,,
१० जैदेव ,,	२८ सरपसोष ,,
११ नलमोवर ,,	२९ जंभीर नागर ,,
१२ परसोतम ,,	३० हंस मोह ,,
१३ त्रिकुोमल ,,	३१ बिराज ,,
१४ पुरुषोपत ,,	३२ ललित दया ,,
१५ नलवोली ,,	३३ करुनामय ,,
१६ बाइभक्ष ,,	३४ बाष जार ,,
१७ नाल पाजरी ,,	३५ जीव भूषन ,,
१८ पायापाल ,,	३६ उदोत साह ,,

(१) एक लिपि में यह नाम-भेद है—११-नल कमोद, १५-विनवो, १६-मलकृत, २५-कमाल, २६-उप्मज, २८-बालपोष ।

३७ जगतधार	सिद्ध		६१ गौड़ आसन	सिद्ध
३८ साह पाल	,,		६२ पक्ष पती	,,
३९ परन पोप	,,		६३ भाउ नाद	,,
४० नौनागर	,,		६४ पोहप माल	,,
४१ ज्ञानपती	,,		६५ नरदया	,,
४२ साधगिरि	,,		६६ इंद्र मनी	,,
४३ नलदेव	,,		६७ डंभीर	,,
४४ सहस अपढ़	,,		६८ कहूकितोहल	,,
४५ सुकृत जीव	,,		६९ जंभीर नाद	,,
४६ ऊच माया	,,		७० द्याल पती	,,
४७ सिंह नाद	,,		७१ तेनौगार	,,
४८ सहज तेज	,,		७२ काल मुनी	,,
४९ बेरंग नाद	,,		७३ प्रेम मुनी	,,
५० फूल काज	,,		७४ हंस करनाग	,,
५१ केदार कोठ	,,		७५ मल मोद	,,
५२ सुचलेन	,,		७६ कूर नाकर	,,
५३ मजा गुनी[१]	,,		७७ सुषन सरीष	,,
५४ तानी गंभीर	,,		७८ सुरति लोक	,,
५५ जगपती	,,		७९ साध बाच	,,
५६ गंधर्ब सूत[१]	,,		८० सुख बाच	,,
५७ रतना गिरी[१]	,,		८१ नेह नाथ	,,
५८ सरोज मल	,,		८२ बस करन	,,
५९ कुल कुंभ	,,		८३ भय मेटन	,,
६० पिगोभ	,,		८४ सुच भाव	,,

(१) एक लिपि में यह नाम-भेद है—५३-नाजगुनी, ५६-मदार, ५७-अल्प सार।

॥ चौपाई ॥

चौरासी सिधि कथि बतलाई । सिधि इतने घट भीतर छाई ॥
साधू कोइ करै परमाना । जिन घट के अंदर पहिचाना ॥

॥ सोरठा ॥

चौरासी सिधि देखि, घट रामायन मैं कहे ।
अंतर काया पेखि, भिन्न भिन्न दरसाइया ॥

॥ चौपाई ॥

प्रकृति पचीस कहौं अनुसारी । ये सब घट के माहिं बिचारी ॥
काया भेद देखि हम चीन्हा । ता कर लच्छ भाखि सब दीन्हा ॥

॥ सोरठा ॥

प्रकृती भेद बिचार, नाम लोक सबको कहो ।
तुलसी तनहिं निहार, मन इस्थिर जब होइ जेहि ॥

॥ चौपाई ॥

कौन कौन प्रकृती रे भाई । ता कर घर मैं दँव बताई ॥

॥ प्रकृतियाँ के नाम ॥

१ भाव	प्रकृति	१२ उदासमुद्र	प्रकृति
२ क्रता	,,	१३ चंचलराज	,,
३ दँहधर	,,	१४ मजा गुन	,,
४ उषमजार	,,	१५ मजा नंद	,,
५ इंद्रजै	,,	१६ अभयानंद	,,
६ मोहदधि	,,	१७ चतुरदया	,,
७ सुषम जार	,,	१८ कजाकोग	,,
८ मोह धन	,,	१९ उचालम्भ	,,
९ केदारखंड	,,	२० दया भवन	,,
१० सफाकंद	,,	२१ ह्रस भोग	,,
११ नलदया	,,	२२ कामिनि जोग	,,

२३ मोहजार प्रकृति
२४ नौ जोग ,,
२५ भँवर सोग[1] प्रकृति

॥ चौपाई ॥

प्रकृति पचीस यही हैं साधौ । सब जीवन को इनहीं बाँधौ ॥
सत्य सत्य मैं आखौं भाई । इनकर भेद कहौं समझाई ॥
पच्चीसौं का घर हम भाखा । सत्य सब्द हिरदे मैं राखा ॥
प्रकृति पचीस कहौं समझाई । मूढ़ जीव ज्ञानी होइ जाई ॥

॥ प्रकृतियों के सुभाव ॥

१ भाव को सुभाव—आलस निद्रा जम्हाई ।
२ क्रता को ,, काम क्रोध बिकार ।
३ दँहघर को ,, खावै पोवै सुख बिनोद ।
४ उपमजार को ,, मोर तोर निंदा
५ इंद्रजै को ,, हँसै खेलै रोवै ।
६ मोहदधि को ,, मान गुमान बड़ाई प्रभुता ।
७ सुषमजार को ,, उच्चाट भय त्रास और डंड ।
८ मोह घन को ,, सिकार उदासी जारै वारै जीव जंत्र मंत्र सेवा करै ।
९ केदार खंड को ,, एककाम चित्त रहै कामिनि सुख ।
१० सफाकंद को ,, चोरी राति बिराति आवै जावै ।
११ नलदया को ,, होम बहुत करै और आसा लगावै ।
१२ उदासमुद्र को ,, चित चंचल छगुनिया टेढ़ा चलै कर मोड़ै ।
१३ चंचलराज को ,, खरा लेवै खरा देवै खरी बात खरा रहै
१४ मजा गुन को ,, निडर निरभय निरमोह ।
१५ मजा नंद को ,, दया धर्म पुन्य पट कर्म

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में "भँवर जोग" है ।

१६ अभयानंद को सुभाव—तीरथ बरत मठ बनावै।
१७ चतुरदया को ,, बहुत गावै बजावै नाचै नैन उलारै।
१८ कजाकोग को ,, झूठ बोलै मीठा रहै स्वारथ रत।
१९ उचालंभ को ,, ज्ञान ध्यान गुरू सब्द कुछ न रक्खै।
२० दया-भवन को ,, नीके कपरा खाना बिछौना नीक बसिबो।
२१ ईस-भोग को ,, देव पूजै फूल पत्र चढ़ावै पीछे द्रव्य माँगै।
२२ कामिनि-जोग को ,, भले मनुष्यन मैं रहै ऊँचे संग बैठै नीचे संग न करै अच्छी बात कहै और प्रीति न तोरै।
२३ मोहजार को ,, कुबचन भाखै पहिले दे पीछे माँगै माया तकै।
२४ नौजोग को ,, तरंग बाहिर मन भरमै शोक मैं रहै।
२५ भँवर-जोग को ,, मीठा बोलै कौड़ी जाते प्रान जाय।

॥ चौपाई ॥

देखो संतो प्रकृति सुभाऊ। ये सुभाव घट माहिँ रहाऊ।

॥ सोरठा ॥

यह सुभाव घट माइँ, भिन्न भिन्न करि भाखिया।
लेखा अजब बनाइ, चीन्हे सुरति सँवारि कै॥

॥ चौपाई ॥

घट भीतर नौ नारी भाखो। सो तुलसी ने देखा आँखो॥

॥ नाड़ियन के नाम ॥

१ इड़ा नाड़ी
२ पिंगला ,,
३ सुषमना नाड़ी
४ भामिनी ,,

५ रमना	नाड़ी	८ हरि कामिनि	नाड़ी
६ करजाप	„	९ वरना	„
७ हंस-वदनी	„		

॥ पाँच इंद्रियन के नाम ॥

१ अपान	इंद्री	४ उदान	इंद्री
२ प्रान	„	५ व्यान	„
३ समान	„		

॥ इंद्रियन के वास ॥

१ अपान का बास–नाभी मैं है ।
२ प्रान का बास–मान सरोवर तट वार है ।
३ समान का वास–कलेजे मैं है ।
४ उदान का बास–कंठ मैं है ।
५ व्यान का बास–सब शरीर मैं है ।

॥ सोरठा ॥

इंद्री अर्थ बिचार, नाम भेद सब भाखिया ।
ठीका ठौर निहार, यह पुकार तुलसी कहा ॥

॥ चौपाई ॥

यह इंद्री का किया निषेदा । मन चीन्है सोइ जाने भेदा ॥
या की साखि सोत सब गाई । अब सुन्नन को कहौं लखाई ॥
बाइस सुन्न सोध हम लीन्हा । ताकर भिन्न भिन्न कहुँ चीन्हा ॥

॥ सुन्नन के नाम ॥

१ धुंधार	सुन्न	३ नौनार	सुन्न
२ सब्दार	„	४ अजसार	„

५ बिलंद	सुन्न	१४ पलक	सुन्न
६ सुखनंद	,,	१५ खलक	,,
७ अछरंद	,,	१६ झलक	,,
८ सबसंध	,,	१७ सरवाट	,,
९ ब्रह्मंड	,,	१८ दसघाट	,,
१० सबअंड	,,	१९ खिरकाट	,,
११ भैभंड	,,	२० अजआठ	,,
१२ नौखंड	,,	२१ सतलोक	,,
१३ अलख	,,	२२ परमोख	,,

॥ सोरठा ॥

बाइस सुन बर्तमान, जानि संत कोइ परखिहै ।
गगन गगन परमान, सुन्न सुन्न भिनि भिनि लखै ॥

॥ चौपाई ॥

सुन बाइस कै भाखैँ लेखा । सो कोइ साधू करै बिबेका[1] ॥
भिन्न भिन्न ग्रंथन मैँ गाई । बूझै वोही भेद जिन पाई ॥
सुन्न सुन्न निज निरनै भाखा । तुलसी निरखि देखि निज आँखा ॥

॥ सोरठा ॥

कह निरनै निरधार, सुन्न सुन्न बिधि योँ कही ।
सुरति उतर गई पार, सुन बाइस वर भाखिया ॥

॥ चौपाई ॥

बाइस सुन का कहैाँ बखाना । सुन्न सुन्न का ठैार ठिकाना ॥
जो जेहि सुन्न जैान असथाना । भाखैाँ जोई सुन्न जेहि नामा ॥
सत्तलोक सत के तहँ राजा । रामायन मैँ भाख समाजा ॥
सत्त केत सत नाम कहइया । ता से निरगुन ब्रह्म जो भइया ॥
सोला निरगुन कहि कै भाखा । भिनि भिनि भेद कहैाँ मैँ ता का ॥
एक सुन्न इक निरगुन होई । निरगुन सुन्न एक है सोई ॥

(१) मुं० दे० प्र० के पाठ मैँ "करि है पेया" है ।

निरगुन चौधा चौधा सुन्नी। पंद्रा धर्म सुन्न है भिन्नी॥
सोला सुन्न निरंजन नामा। रचा ताहि ब्रह्मंड समाना॥
सत्तनाम से उपजा सोई। ऐसे सोला निरगुन होई॥
यह सब पिंड ब्रह्मँड के माईं। सोला निरगुन सुन्न समाईं॥

॥ सोरठा ॥

छे सुन बाइस माहिं, रहा भेद आगे कहौं।
तुलसी निरखि निहार, सुन बाइस चढ़ि देखिया॥

॥ मंगल ॥

सुन सुन री सखि, सैन बैन पिय के कहौं।
बोलै मधुरे बोल, चोल चित्त मैं सहौं॥१॥
छिन छिन रहौं पिय पास, स्वाँस कहुँ ना रुचै।
जैसे जल बिन मीन, तलफ मन[1] के विचै॥२॥
सुन सखि चैन चिताव, भाव बिधि मैं मिली।
छूटी तन मन आस, पास पिय के चली॥३॥
चौधा भवन भौ पार, सार सुन मैं गई।
पुनि पंद्रा के पार, सार सोला सही॥४॥
सोला लोक मँझार, तार स्रुति से चखी[2]।
निराकार जहँ जोति, होत हिये मैं लखी॥५॥
सत्रा सुरति चलि चाल, ताल तट देखिया।
मान सरोवर घाट, हंस तहँ पेखिया॥६॥
एक हंस छबि तेज, कोटि रबि राजही।
सोभा भूमि अपार, सो हंस बिराजही॥७॥
करि हंसन सँग केल, सैल आगे चली।
आली अगम की साख, आँख हिये की खुली॥८॥

---

(१) मुं० दे० प्र० के पाठ मैं "मन" की जगह "जल" है जो अशुद्ध जान पड़ता है।
(२) एक लिपि मैं "चखी" की जगह "पखी" है।

सुन अठरा के माहिँ, जाइ निर्ख देखिया।
आतम से परे भिन्न, परमातम पेखिया ॥९॥
सुन्न उलट उन्नीस, चेति आगे चली।
खिरकी अजब अनूप, पुरुष ता मैँ मिली ॥१०॥
परे पुरुष पद चीन्ह, गई सुन बीस मैँ।
सत्त पुरुष सुख धाम, सुन्न इक्कीस मैँ ॥११॥
गैब नगर पिय पार, सखी सतलोक ही।
चढ़ी अगमपुर धाइ, पाइ पति पै गई ॥१२॥
सत्त पुरुष की पैज, सेज पति की लई।
गई भवन के माहिँ, पाइ जस जो कही ॥१३॥
बाइस सुन वर्तमान, जान कोइ लेइँगे।
कोनी जिन जिन सैल, संत सोइ कहैँगे ॥१४॥
तुलसी निज तन तूल, मूल मन मैँ वसी।
जिन बूझा नहिँ भेद, बेद भौ मैँ फँसी ॥१५॥

॥ सोरठा ॥

स्रुति पद परम निवास, चढ़ि अकास पति पै गई।
पिय पद सुरति बिलास, सेज वास जस जस कही ॥१॥
पिय मोरे दीनदयाल, काटि जाल न्यारी करी।
अमर बुटी अज माल, सो पियाइ मो कैा दई ॥२॥
पिय पद पूर पियास, अमी पियाइ अमर करी।
सूरति अगम निवास, महल बास अपने करी ॥३॥

॥ दोहा ॥

पिय प्रभुता निज धाम, काम टहल मो कैा कही।
रहो भवन के माहिँ, अमल बास मो पै नहीँ ॥

॥ सोरठा ॥

पृथ्वी पवन अकास, नीर नास सब होइँगे।
अगिन सूर अरु चंद, बंद बास पुनि पुनि नसै ॥

॥ चौपाई ॥

पिय सँग अजर अमर भया बासा। आदि अंत हमरा नाहिं नासा ॥

॥ मंगल ॥

अमर बूटी मोरे यार, प्यार पिया ने दई।
काटी जम की जाल, काल डर ना रही ॥१॥
मैं पिय मोर अनूप, रूप पिय में गई।
दरसै एकै नूर, सूर स्तुति से भई ॥२॥
जुगजुग अमर अहवात[१], साथ पिय के सखी।
जावँ न आवौं हाथ, साथ पिय के पखी ॥३॥
नौतम निरखि निहारि, सार दसवें वही।
आगे अजब अजूब, खूब खुलि कै कही ॥४॥
पिय मोरे दीन-दयाल, चाल चीन्हा सही।
सुख सागर सुख चौज, मौज मुख से दई ॥५॥
अंड खंड ब्रह्मंड, कोई करता नहीं।
हमरा सकल पसार, सार हम से भई ॥६॥
धरती गगन अकास, नास सब होइँगे।
अगिनि पवन जल नास, हमीं हम रहेंगे ॥७॥
ब्रह्मा वेद नसाय, बिस्नु सिव ना बचैं।
बचै नहीं वैराट, कहनि कहौ को पचै ॥८॥
कोई न पावै अंत, संत हम को लखै।
तुलसी बिधि बेअंत, अंत कहि को सकै ॥९॥

॥ सोरठा ॥

वाइस सुन बर्त्तमान, सुरति छान भिनि भिनि कही।
जानै संत सुजान, जिन चढ़ि देखा भेद सब ॥

---

[१] "अहवात" सोहाग को कहते हैं-मुं० दे० प्र० की पुस्तक में "रहाथ" लिखा है जो ठीक नहीं जान पड़ता।

॥ चौपाई ॥

तुलसी संत चरन बलिहारी । चढ़े अगम जिन सुरति सम्हारी ॥
लखलख जसजस भेद सुनाई । साखी सब्द ग्रंथ में गाई ॥
महुँ पुनि चरन लागि लख बोला । जसजस कृपा संत कर खोला ॥
संत चरन सूरति भइ चेरी । मति उन सबबिधि भाँति निबेरी ॥
मैं उन की चरनन बलिहारी । मोहि सोँ अजान जान कियो लारी ॥
सुन्न सुन्न बाइस कर लेखा । खुलि हिये नैन सुरति सें देखा ॥
और सुन्न का भाखैाँ लेखा । कोइ निज संत सुरति सें देखा ॥
तुलसी बूझी मोर अबूझी । जो कोइ संत सैल कर सूझी ॥
मैं अपनी गति कस कस भाखी । कहुँ संत जिन देखी आँखी ॥
मैं किंकर उन कर निज दासा । जिन जिन देखा अगम तमासा ॥
सोइ सोइ देखि देखि कै भाखी । नैन से देखि पेखि उर आँखी ॥
छै सुन का पुनि भेद बताऊँ । न्यारा भिन्न भिन्न दरसाऊँ ॥
कौन सुन्न में कौन निवासा । ता कर भेद कहौं परकासा ॥
प्रथम सुन्न में है निःनामी । ता की गति मति संतन जानी ॥
दूजी सुन का भाखैाँ लेखा । जहँवाँ सत्तनाम को देखा ॥
तीजी सुन्न सब्द एक होई । सुरति सैल कोइ संत बिलोई ॥
चौथी सुन्न कहौं समझाई । पारब्रह्म तहँ रह्यो समाई ॥
संत ताहि परमातम भाखी । सो पुनि देखा हिये की आँखी ॥
पंचम सुन का भेद बताऊँ । पूरन ब्रह्म जीव तेहि नाऊँ ॥
ता को आतम बेद बखाना । जीव नाम आतम कर जाना ॥
षटवीं सुनि मन तन के माईं । इंद्री संग तास लिपटाई ॥
परमहंस तेहि ब्रह्म बतावैं । नेतहि नेत बेद गोहरावैं[१] ॥
सुन तेहि मन कै ब्रह्म बखाना। ता को नाम निरंजन जाना ॥

(१) सुं० दे० प्र० को पुस्तक में इस चौपाई की दूसरी कड़ी यों है-"अहंब्रह्म करि कै गोहरावैं"।

येही निरंजन जोति कहाई । ब्रह्मा बिस्नु सिव सुत है ताही ॥
तिन पुनि रचा पिंड ब्रह्मंडा । सातौ दीप और नौखंडा ॥
जोति निरंजन इनको जानी । ता को संतन काल बखानी ॥
यह जम काल जाल जग डारा । ज्यौं धीमर मछरी गहि मारा ॥
दस औतार निरंजन काला । बाँधे जीव कर्म जग जाला ॥
तीरथ बरत नेम अरु धरमा । कर्म भाव कहियत है रामा ॥
ता को जगत जपै मन लाई । बार बार भरमै भव माहीं ॥
जग सब अंध फंद नहिं बूझै । अंधा भया हिये नहिं सूझै ॥

॥ दोहा ॥

आदि अंत का भेद, कह तुलसी देखा सही ।
लेखा अगम अलेख, लखि अगाध अदवुद कही ॥

॥ छंद ॥

तुलसी गति गाई अगम सुनाई । सुन्न सुन्न भिन भिन्न कही ॥
जस जस जेहि लेखा निज निज देखा । आदि अंत गति सार सई ॥
संतन गति गाई महुँ पुनि पाई । जो उतपति सब आदि भई ॥
जिनही जिन जानी सबहि बखानी । तुलसी उनके लार लई ॥

॥ सोरठा ॥

सब ये कहा बिचार, सार पार गति गाइकै ।
बूझै बूझनहार, जिन ये चाखा अगम रस ॥१॥
तुलसी तिरन[१] समान, अगम भान घटि लखि परा ।
सूझा निज घर धाम, यह अनाम गति यौं कही ॥२॥

॥ चौपाई ॥

नभ घट भूमी भान दिखाना । लखि लखि लखा भेद जिन जाना ॥

॥ सोरठा ॥

घट भूमी बिच भान, जानि भेद भिन जिन कहो ।
सखि सुन देस बयान, रमक रीति उलटी लखो ॥

---

(१) तृन, तिनका ।

॥ कहेरा ॥

सुन हो सखी इक दिसवा। भूमी ऊगै भान।
दिसवा की उलटी रीती। साधू पालै प्रीति ॥टेक॥
मछरी गगन पर गाजा। चंदा चुनै नाम।
दिसवा उरध-मुख कुइया। गइया चुगै चाम ॥१॥
गगन उठै धधकारी। धरै सूरति ध्यान।
खंभा न महल अटारी। प्यारी पिव धाम ॥२॥
तारा अवर नहिं पानी। बानी उठै बिन तान।
खिरकी खुली बिन द्वारें। पारे परे ठाम ॥४॥
नइया कुटी भै पारा। उतरै बिन दाम।
तुलसी अगम गम जानी। स्रुति पायो निज नाम ॥५॥

॥ सोरठा ॥

साहिब एक अनाम, अगम धाम संतन लखा।
भखा भेद जिन जान, तिन तिन बरनि सुनाइया ॥

॥ चैापाई ॥

अब अनाम इक साहिब न्यारा। सुन्न औ महासुन्न के पारा॥
वो साहिब संतन कर प्यारा। सोइ घर संत करैं दरबारा॥
वा घर का कोइ मरम न जाने। नानक दासकबीर बखाने॥
दादू और दरिया रैदासा। नाभा मीरा अगम बिलासा॥
और अनेक संत कहि गाये। जे जे अगम पंथ पद पाये॥
तुलसी मैं चरनन चित चेरा। उन रज चरनन कीन्ह निबेरा॥

॥ सोरठा ॥

संत चरन निज दास, तुलसी ताहि बिचारिया।
पायो निज घर बास, आदि अनामी लखि कह्यो॥

बरनन चार गति बैराग

॥ चैापाई ॥

अब बैराग जोग गति गाऊँ। ज्ञान भक्ति भिनि भिनि दरसाऊँ॥
चारि गती बैराग बताऊँ। जोगी चारि गती गति गाऊँ॥

तीनि ज्ञान का भेद बताई। चौथा ज्ञान जगत जग माईं ॥
तेरा भक्ति भेद बतलाऊँ। भिन्न भिन्न कर कहि समुझाऊँ॥
न्यारा भेद भाव सब केरा। जो जस जिन का भया निवेरा॥
जो जिन की करनी जस भाँती। सो सब संतन कही सनाथी॥
मैं रज पावन उन कर चेरा। निरनय कहौं छानि इन केरा॥

॥ सोरठा ॥

भक्ति ज्ञान और जोग, भोग भाव सब बिधि कहौं।
जो जेहि गति जस भोग, सो तस कहौं बिचारि कै॥

॥ प्रथम बैराग ॥

॥ चौपाई ॥

अब वैराग तीनि गति गाऊँ। भाखौं भेद भिन्न दरसाऊँ।
बेरक्ती[1] बैराग सुनाऊँ। ता कर चिन्ह भिन्न बतलाऊँ।
माया मोह जगत नहिं भावै। काम रु क्रोध लोभ नहिं लावै।
और जगत सँग रहै उदासी। जग संसार करत सब हाँसी।
त्यागी अति संतोष समावा। भूख प्यास निद्रा न सतावा।
और अनेक भाँति रस त्यागी। बन बसि रहै नाम अनुरागी।
बिन सतगुरू धूरि सब जाना। संत सुरति बिन भरमै खाना।
जो कोइ त्याग लाग मन कीन्हा। संगल दीप भोग तेहि दीन्हा।
जो जेहि त्याग भाग जस पावा। सुरति सब्द बिन भौ मैं आवा।

॥ द्वितीय बैराग ॥

॥ चौपाई ॥

परम जोग बैराग बताऊँ। रहनी चाल ताहि दरसाऊँ।
अष्टकँवल उलटै हिये माईं। उलटै कँवल तत्त मन लाई
निस दिन तत्त मती गति राखै। पाँचौ तत्त गती सोइ भाखै।

---

(१) विरक्ति।

तब तन छूटे तत्त समाई। चारि तत्त जिव उपजै जाई॥
फिर तन छूटै खानि समाना। सो पुनि करै जो लेइ निदाना॥

॥ त्रितीय बैराग ॥

॥ चौपाई ॥

त्याग बैराग कैा बरनि सुनाई। छूटै दैँह खानि गति पाई॥
जो जस त्याग भोग तन तैसा। खान पान तन पावै जैसा॥

॥ चतुर्थ बैराग ॥

॥ चौपाई ॥

तन त्यागी वैरागी भाई। जो जेहि लिया देन सोइ जाई॥
बार बार छूटै तन जाई। छूटै तन तहँ गर्भ समाई॥
वहि वहि देइ खाइ पुनि जाई। ऐसे भर्म खानि भरमाई॥
बिना सुरति नहिँ पावै पारा। भरमै भोग परै भौ धारा॥

॥ सोरठा ॥

चारौ गति वैराग, सुरति लाग न्यारी रही।
सत मत गति कोइ जाग, संत सरनि उबरा सोई॥

बरनन जोग

॥ प्रथम जोग ॥

॥ चौपाई ॥

चारौ गति बैराग बखाना। आगे कहैाँ जोग संधाना॥
पिरथम परम जोग गति गाऊँ। भिन्न भिन्न तेहि को दरसाऊँ॥
मुद्रा पाँच अवस्था चारी। तीनि ज्ञान पुनि बानी चारी॥
सहस कँवलदल सुरति लगावै। आतम तत्त अकास समावै॥
पुनि तन छुटि पावै नर देही। भोग भुगति पुनि भव रस लेही॥
पावै मुक्ति बास कर चीन्हा। मुक्ति भोग पुनि होइ अधीना॥

॥ द्वितीय जोग ॥

॥ चौपाई ॥

दूजा जोग कहौं समझाई । इड़ा पिंगला सुषमनि माईं ॥
बंक नाल पट मारग जाई । मन भया भिन्न सुन्न के माईं ॥
देखै जोति निरखि निज नैना । तन छूटै सुपने की सैना ॥
जो कछु कर्म भाव जग कीन्हा । छूटै देह भोग फल लीन्हा ॥
सुरति सब्द त्रिन भये अचीन्हा । ता सों हो गये जोग अधीना ॥
बिन सतसंग भेद नहिं पावै । ता ते कर्म भोग भव आवै ॥

॥ सोरठा ॥

जोग जुगति गति गाइ, नहिं अकाय गति पायऊ[१] ।
बिन सतसंग नसाइ, सुरति सब्द चीन्हे बिना ॥१॥
ज्ञान गती कथि गाइ, जो अघाइ आगे कही ।
ताहि पाइ मति माइँ, सो तुलसी सब बिधि कही ॥

बरनन ज्ञान

॥ प्रथम ज्ञान ॥

॥ चौपाई ॥

अब सुनु ज्ञान ठान गति गाऊँ । ता का भेद भाव बतलाऊँ ॥
रेचक पूरक कुंभक कहिये । ता का भेद सबै सुनि लैये ॥
चारि अवस्था तन मैं भाखो । तुरिया तत्त चारि अभिलाखो ॥
परमहंस ता की मति जाना । मन करता को ब्रह्म बखाना ॥
जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति कहाई । तुरिया चौथी भेद न पाई ॥
तुरियातीत बसै वोहि पारा । सुनि पुनि है मन का व्यौहारा ॥
मनमत चलै मान मद माईं । मन करता को ब्रह्म बताई ॥
ता ते भै गति मति नहिं पावै । बार बार भै माहिं समावै ॥

---

(१) मुं० दे० प्र० के पाठ में "पायऊ" की जगह "गायऊ" है जो अशुद्ध जान पड़ता है।

सतगुरु सब्द भेद नहिं जानै। आपी आप ब्रह्म मन मानै॥
सास्तर सिंध सार बतलावै। ता ते भौजल पार न पावै॥
चीन्है संत सुरति गति न्यारी। तौ पुनि उतरै भौजल पारी॥
आपा आप पाप गति खोवै। तब सतसंग संत गति जोवै॥

॥ द्वितीय ज्ञान ॥

॥ चौपाई ॥

औरहि ज्ञान सुनौ जग केरी। बेद पुरान जाल भौ बेरी॥
पंडित पढ़ पढ़ ज्ञान सुनावै। आदि गती गम भेद न पावै॥
झूठी आस बास सब केरी। फिरिफिरि स्वाँस आस भौ बेरी॥
जो जो कर्म करै सोइ पावै। बार बार भौ भटका खावै॥
मन मैं मान मोट कर जानै। ता ते परै नरक की खानै॥
भक्ती भाव भेद नहिं पावै। ऊँची जाति मान मन लावै॥
साध संत मन मैं नहिं आवै। ऊँचा ज्ञान आप ठहरावै॥
नीचा होइ संत को जानै। संत कृपा कछु जानै आनै॥
संतन भेद बेद से न्यारा। नीच होइ पुनि पावै सारा॥
ऊँचा मान सदा मन राखै। सोइ सब जगत जीव कह भाखै॥
पूजन अपनी चाल बतावै। ऐसे सकल जीव भरमावै॥

॥ सोरठा ॥

यहि बिधि जग मत ज्ञान, पंडित भूले भरम मैं।
बाक ज्ञान परमान, संत भेद चीन्है नहीं॥

बरनन भक्ति

॥ चौपाई ॥

अब सुनु भक्ति भाव कर लेखा। रामायन मैं कीन्ह बिबेका॥
भक्ति भाव नौ बरनि सुनाई। ता से भिन्न चारि पुनि भाई॥
नौ फल भाव बेद[1] बतलावै। जो जस करै भोग तस पावै॥

---

(१) सुं० दे० प्र० की पुस्तक मैं "बेद" की जगह "भेद" चौपाई ३ मैं और

नौ की राह मुक्ति नहिं पावै। दसवीं अविरल भक्ति[1] लखावै॥
एकादस अनुपावन लेई। बार बार मुक्ती वर देई॥
भेद भक्ति कर भाखौं लेखा। इष्ट भाव मन बसै विवेका॥
अब अभेद का भेद अभेदा। ता को मरम न पावै बेदा॥
कोइ कोइ साध संत गति पाई। जिन की सूरति सब्द समाई॥
सूरति सैल करै असमाना। जोगी पंडित मरम न जाना॥
परमहंस सन्यासी भाई। उन का मरम नहीं उन पाई॥
जगत जाल संसार बिचारा। उन की गति कोइ पावै न पारा॥

॥ सोरठा ॥

तेरा भक्ति बयान, सो प्रमान संतन कही।
तुलसी तनहिं बिचारि, सुरति भेद समझै कोई ॥१॥
नौ जग माहिं पसार, दसवीं कछु कछु भिन्न है।
एकादस मुक्ति मँझार, द्वादस गति मति मुक्ति मय[2] ॥२॥
अब अभेद गति गाइ, तेरह येहि विधि यों कही।
ये साधन के माइँ, सुरति सब्द जा ने लखी ॥३॥

॥ छंद ॥

चारौ बैरागा जोग समाधा। तीनि ज्ञान गति गाइ दई॥
नौ चारौ भक्ती जो निज उक्ती। भाषि भेद सब गाइ कही॥
जोई जिन जानी संत बखानी। चरन चेत चित लाइ लई ॥१॥
सूरति सर चेती छाँड़ि अचेती। सुरति सैल नभ माहिं लई॥
फोड़ा असमाना निरखि ठिकाना। पच्छिम किवारी द्वार गई ॥२॥
परमातम पाया जीव छुड़ाया। पारब्रह्म पद कँवल मई॥
कँवला निज फूला मिटि गया सूला। जीव गती तजि ब्रह्म भई ॥३॥
आगे इक द्वारा अगम पसारा। सत्तलोक वोहि नाम कही॥
वहँ है सतनामा ब्रह्म न जाना। वे सत साहिब अगम सही ॥४॥

---

[1] "भक्ति" की जगह "मुक्ति" चौपाई ४ में दिया है जो आगे के वर्णन से अशुद्ध जान पड़ता है। (२) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में "मय" की जगह "मन" है।

तीनें से न्यारा लोक पसारा। चौथे पद के पार वही ॥
जहँ है निःनामी कोउ न जानी। तीनें पट के पार रही ॥५॥
कहैं अगम अनामी ठीक न ठामी। संतन जानी सार सही ॥
अंबर असमाना मही न भाना। चाँद सुरज तत तारे नहीं ॥६॥
पानी नहिं पवना अगिनि न भवना। बेद भेद गति नाहिं लई ॥
ब्रह्मा नहिं बिस्ना राम न किस्ना। सिव सिद्धी नहिं पार लई ॥७॥
निर्गुन नहिं सर्गुन नहिं अपबर्गुन। पिंड ब्रह्मंड दोउ नाहिं कही ॥
जोती नहिं सोती अगम न होतो। पारब्रह्म की आदि नहीं ॥८॥
नहिं कार अकारा नाहिं निरकारा। सत्त नाम सत सत्त सही ॥
नहिं नाम अनामी तुलसी जानी। जाइ समानी सार मई ॥९॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी अगम अनाम, अगत भेद का से कहैं।
कोउ न मानै बात, संत अंत कोउ ना लखै ॥१॥
निगम न पावै बेद, नेति नेति गोहरावही।
ब्रह्म न जानै भेद, सत्त नाम निज भिन्न है ॥२॥
एक अनीह[1] अनाम, संत सुरति जानै यही[2]।
वे पहुँचे वोहि धाम, सो अनाम गति जिन कही ॥३॥
तुलसी अगम विचार, सार पार गति पद लखा।
वह अलेख का ठाम, तुलसी तरक बिचारिया ॥४॥
सुरति अटा के पार, आठ अटारी अधर मैं।
तुलसिदास लियो सार, सुरति सिंध से भिनि भई ॥५॥

॥ चौपाई ॥

आठ अटारी सुरति समानी। मंगल ठुमरी करी बखानी।
जस जस सूरति चढ़ी अटारी। तस तस बिधि मैं भाखी सारी ॥

(१) बेफ़िकर। (२) मुं० दे० प्र० के पाठ में "जानै यही" की जगह "वहाँ जावही" है।

॥ मंगल ॥

आठ अटारी महल, सुरति चढ़ि चाखिया।
ठुमरी माहीं भेद, भाव सब भाखिया ॥१॥
संत पंथ का अंत, साध कोइ बूझिहै।
प्यारी पुरुष मिलाप, साफ स्रुति सूझिहै ॥२॥
जस जस मारग रीति, राह समझाइया।
प्यारी अटारी माहिं, जाइ सोइ गाइया ॥३॥
मन मथ कीन्हा चूर, सूर स्रुति ले चढ़ी।
गुरु पद पदम मँझार, पुरुष पै जा खड़ी ॥४॥
बिधि बिधि ठुमरी माहिं, गाइ तुलसी कही।
जो कोइ चीन्है भेद, संत सोई सही ॥५॥

॥ सोरठा ॥

ठीका ठुमरी माहिं, आठ अटारी अधर की।
सूरति पदम बिलास, बिधी बयालिस पद मिली ॥

॥ ठुमरी १ ॥

अली अटकी सुरति अटारी। मन हटकर हारा री ॥टेक॥
यह अँग संग भंग ले लटकी। सूली स्वर्ग नर्क औ भटकी ॥
दीन्ही सतगुरु घट की तारी। चटकी मति फटक फटा री ॥१॥
ये ले लार पार स्रुति सटकी। निरखी अलख आदि घट घट की।
हक लख[1] लागी बिरह करारी। हिये खटकी कसक कटारी ॥२॥
नौलख खेल कला ज्यों नटकी। सूरति सहसकँवल झर झटकी ॥
लीला सिखर निकर नित न्यारी। दधि मटुकी घिरत मठा री ॥३॥
तुलसी ताल कही तिल तट की। भइ धुनि ररंकार रस रट की॥
ये दस रस बस सुरति सँवारी। पिउ पट को खोलि किवारी ॥४॥

---

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में "लक्" है जिस का अर्थ कहीं नहीं मिलता, अलबत्ते "लफ" शब्द के अर्थ संस्कृत में 'चखने' और 'पाने' के हैं।

॥ ठुमरी २ ॥

झँझरी पिय झाँकि निहारी। सखि सतगुरु को बलिहारी ॥
दीन्हे दृग सुरति सँवारी। चीन्हा पद पुरुष अपारी ॥१॥
चली गगन गुफा नभ न्यारी। जहँ चंद न सूर सिहारी ॥
तुलसी पिय सेज सँवारी। पौढ़ी पलँगा सुख भारी ॥२॥

॥ ठुमरी ३ ॥

सलिता जिमि सिंध सिधारी। सूरति रत सब्द बिचारी ॥
जहँ सुन्न न सुन्नी न्यारी। मत मीन महासुन पारी ॥१॥
नहिँ गुन निरगुन मत झारी। निज नाम निअच्छर भारी ॥
जहँ पिंड ब्रह्मंड न तारी। तुलसी जहँ सुरति हमारी ॥२॥

॥ ठुमरी ४ ॥

ए अली आदि अंत अधिकारी। पिय प्यारी प्रीति दुलारी ॥
हम कीन्हा खेल पसारी। सब रचना रीति हमारी ॥१॥
करता नहिँ काल पसारी। हम अगम पुरुष की नारी॥
ठुमरी सोइ संत बिचारी। तुलसी नित नीच निहारी ॥२॥

॥ ठुमरी ५ ॥

ए गुइयाँ पिय हम हम पिय एकी। कोइ फरक न जानौ नेकी ॥
कोइ बूझै संत बिबेकी। जोइ अगम निगम नहिँ लेखी ॥१॥
जिन अटल अटारी पेखी। पिय रूप न रेख अदेखी ॥
कोइ कंथ न पंथ न भेषी। तुलसी सब मारग छेकी ॥२॥

॥ सोरठा ॥

ठुमरी ठौर ठिकान, अगम भान स्तुति पद लखा।
चखा अमर रस ज्ञान, पार पुरुष पद मैँ मिली ॥१॥
पिया भवन के माइँ, जाइ जोइ जस जस कही।
रही पुरुष पद छाइ, लई आदि अपने गई ॥२॥

॥ दोहा ॥

पुरुष पदम सम सोइ, तुलसी सूरति लखि चली।
ज्यौँ सलिता जल धार, लार सुरति सब्दै मिली ॥

॥ सोरठा ॥

हम पिय पिय हम एक, लखि बिबेक संतन कही ।
भई अगम रस भेष, देखा दृग पिय एक होइ ॥१॥
हमरा सकल पसार, वार पार हमहीं कहो ।
संत चरन की लार, आदि अंत तुलसी भई ॥२॥

॥ दोहा ॥

निरखा आदि अनादि, साधि सुरति हिये नैन से ।
करै कोइ संत बिचार, लखि दुर्बीन स्रुति सैल से ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी निरखि देखि निज नैना । कोइ कोइ संत परखिहै बैना ॥
जो कोइ संत अगम गति गाई । चरन टेकि पुनि महूँ सुनाई ॥
अब जीवन का कहौं निबेरा । जा से मिटै भरम बस बेरा ॥
जब या मुक्ति जीव की होई । मुक्ति जानि सतगुरु पद सेई ॥
सतगुरु संत कंज मैं बासा । सुरति लाइ जो चढ़ै अकासा ॥
स्याम कंज लीला गिरि सोई । तिल परिमान जानि जन कोई ॥
छिन छिन मन को तहाँ लगावै । एक पलक छूटन नहिं पावै ॥
स्रुति ठहरानी रहै अकासा । तिल खिरकी मैं निस दिन बासा ॥
गगन द्वार दीसै इक तारा । अनहद नाद सुनै झनकारा ॥
अनहद सुनै गुनै नहिं भाई । सूरति ठीक ठहर जब जाई ॥
चूवै अमृत पिवै अघाई । पीवत पीवत मन छकि जाई ॥
सूरति साथ संध[1] ठहराई । तब मन थिरता सूरति पाई ॥
सूरति ठहरि द्वार जिन पकरा । मन अपंग होइ मानो जकरा ॥
चमकै बीज गगन के माईं । जबहि उजास पास रहै छाई ॥
जस जस सुरति सरकि सत द्वारा । तस तस बढ़त जात उँजियारा ॥
सेत स्याम स्रुति सैल समानी । झरि झरि चुवै कूप से पानी ॥
मन इस्थिर अस अमी अघाना । तत्त पाँच रँग बिधी बखाना ॥

---

(१) मुं० दे० प्र० के पाठ मैं "संध" की जगह "संग" है ।

स्याही सुरख सपेदी होई । जरद जाति जंगाली सोई ॥
तिल्ली ताल तरंग बखानी । मोहन मुरली बजै सुहानी ॥
मुरली नाद साध मन सोवा । बिष रस बादि बिधी सब खोवा ॥
खिरकी तिलभरि सुरति समाई। मन तत देखि रहै टक लाई[1] ॥
जब उजास घट भीतर आवा । तत्त तेज और जोति दिखावा॥
जैसे मंदिर दीप किवारा । ऐसे जोति होत उँजियारा ॥
जोतिउजासफाटि पुनि गयऊ । अंदर चंद तेज अस भयऊ ॥
देखै तत सोइ मनहि रहाई । पुनि चंदा देखै घट माईं ॥
चंद्र उजास तेज भया भाई । फूला चंद्र चाँदनी छाई ॥
सूरति देखि रहै ठहराई ।ज्यौं उजियास बढ़त जिमि जाई॥
ज्यौंज्यौं सूरति चढ़ि चलि गयऊ। सेता ठौर ठाम लखि लयऊ ॥
देख सैल ब्रह्मंड समाई । तारा अनेक अकास दिखाई ॥
महि अरु गगन देखि उर माईं । और अनेकन बात दिखाई ॥
कछुकछुदिवससैलअस कीन्हा । ऊगा भान तेज को चीन्हा ॥
तारा चंद्र तेज मिटि गयऊ । जिमि मध्यान भान घट भयऊ॥
ज्यौं दोपहर गगन रबि छाई । तैसे उजास भया घट माईं ॥
ता के मधि मैं निरखि निहारा। घट मैं देखा अगम पसारा ॥
सात दीप पिरथी नौ खंडा । गगन अकास सकल ब्रह्मंडा ॥
समुँदर सात प्राग पद बेनी । गंगा जमुना सरसुती बहिनी ॥
औरै नदी अठारा गंडा । ये सब निरखि परा ब्रह्मंडा ॥
चारौ खानि जीव निज होई । अंडज पिंडज उषमज सोई ॥
अस्थावर चर अचर दिखाई । यह सब देखा घट के माईं ॥
भिनि भिनि जीवन कर विस्तारा। चारि लाख चौरासी धारा ॥
और पहार नार बहुतेरा । जो ब्रह्मंड मैं जीव बसेरा ॥
कछु कछु दिवस सैल अस कीन्हा। तीनि लोक भीतर मैं चीन्हा ॥

---

(१) मं० दे० प्र० के पाठ मैं "टक लाई" की जगह "टकराई" है ।

जो जग घट घट माहिँ समाना। घट घट जग जिव माहिँ जहाना ॥
ऐसे कइ दिन बीति सिराने। एक दिवस गये अधर ठिकाने ॥
परदा दूसर फोड़ि उड़ानी। सुरति सुहागिनि भइ अगमानी॥
सब्द सिंध मैं जाइ सिरानी। अगम द्वार खिरकी नियरानी ॥
चढ़ि गइ सूरति अगम ठिकाना। हिये लखि नैना पुरुष पुराना ॥
ता मैं पैठि अधर मैं देखा। रोम रोम ब्रह्मंड का लेखा ॥
अंड अनेक अंत कछु नाहीं। पिंड ब्रह्मंड देखि हिये माहीं ॥
जहँ सतगुरु पूरन पद वासी। पदम माहिँ सतलोक निवासी ॥
सेत बरन वह सेतइ साँईं। वहँ संतन ने सुरति समाई ॥
सत्तहि लोक अलोक सुहेला। जहँ वाँ सुरति करै निज केला ॥
सूरति संत करै कोइ सैला। चौथा पद सत नाम दुहेला ॥
परदा तीसर फोड़ि समानी। पिंड ब्रह्मंड नहीं अस्थानी ॥
जहँवाँ अगम अगाधि अघाई। जहँ की सत गति संतन पाई ॥
महुँ उन लार लार लरकाई। उन सँग टहल करन नित जाई ॥
महुँ पुनि चीन्ह लीन्ह वह धामा। वरनि न जाइ अगमपुर ठामा ॥
निःनामी वह स्वामी अनामी। तुलसी सुरति सैल तहँ थामी ॥
जो कोइ पूछै तेहि कर लेखा। कस कस भाखौं रूप न रेखा॥
तुलसी नैन सैन हिये हेरा। संत विना नहिँ होइ निवेरा॥
निज नैना देखा हिये आँखी। जस जस तुलसी कहि कहि भाखी ॥

॥ सोरठा ॥

पिंड माहिँ ब्रह्मंड, ताहि पार पद तेहि लखा।
तुलसी तेहि की लार, खोलि तीनि पट भिनि भई ॥१॥
तुलसि संत अनुकूल, कँवल फूल ता मैं घसी।
लसी जाइ सत मूल, फँसी पाइ सतगुरू सरन ॥२॥
खुलि गये अगम किवार, लील सिखर के पार होइ।
गिरा गगन के पार, पाइ सैल अस विधि कही ॥३॥

अंडा फूट अकास, होइ निरास सूरति चली।
अगम गली निज पाइ, तहँ आसन तुलसी कियौ ॥४॥
हिरदे हरष समाइ, पाइ ताहि गति कस कही।
कोइ कोइ संत समाय, ताही तैं गति तस भई ॥५॥

॥ छंद ॥

तीनौं पट बाहिर कहुँ नहिं जाहिर। अगम अगत की राह लई ॥
खोला वह द्वारा अगम पसारा। सतगुरु पुर के पार गई ॥१॥
सतलोक दुहेला कीन्ही सैला। अगम अकेला लार भई ॥
ता से पद न्यारा निरखि निहारा। तासु अनामी नाम नहीं ॥२॥
फूला निज कँवला सूरति सम्हला। नील सिखर तन तार लई ॥
अंडा निज फूटा दस दिस टूटा। छूटि सुरति असमान गई ॥३॥
तुलसी तन सैला घट बिच खेला। संतकृपा से राह लई ॥
ब्रह्मंड न पिंडा नहिं नौ खंडा। रवि चंदा तहँ तार[1] नहीं ॥४॥
पानी नहिं पवना अगिन न भवना। गगन गिरा के पार भई ॥
देखा सत्त सैला अगम अकेला। सूरति केला सब्द मई ॥५॥
तुलसी मत पाई संत लखाई। पास समाई गाइ कही ॥६॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी निरखि निहारि, नैन पार निज देखि कै।
यह अदेख की बात, जिन अदृष्टि हिरदे लखा ॥१॥
तुलसी तुच्छ अबूझ, जबै सूझ सूरति लखी।
अलख खलक के पार, निःअच्छर वो है सही ॥२॥
संत चरन पद धूर, तुलसी कूर कारज कियौ।
लिया अगम पद मूर, सूर संत अपना कियौ ॥३॥
मैं उनकी बलिहार, लार लागि पारै कियौ।
चौथा पद निज सार, सो लखाइ संतन दियौ ॥४॥

---

(१) तारा।

॥ चौपाई ॥

तुलसी मैं अति नीच निकामा। मैं अनाथ गति बूझि न जाना ॥
मैं अति कुटिल कूर कुबिचारी। सत सत संत सरनि निरवारी ॥
अब मैं अपना औगुन भाखी। निरनय जी[1] को कोइ नहिं राखी॥
अपनी चाल गती गुन गाऊँ। मोहिं सौं अधम और नहिं नाऊँ ॥
संत दयाल दीन-हितकारी। मोरे औगुन नाहिं बिचारी ॥
संत सरल चित सब सुखकारी। मो को पकरि हाथ निरवारी ॥
कहँ लगि उनके गुन गति गाऊँ। मोर अचेत लखी नहिं काहू ॥
मोरी तपन ताप निज हेरा। तुलसी नीच का कीन्ह निबेरा ॥
कोटिन जिभ्या जो मुख होई। तौ मैं बरनि सकौं नहिं सोई ॥
कोटिन कल्प-बृच्छ जो होई। तौ सरवर पावै नहिं कोई ॥
तिन की तीनिलोक रजपावन। कस बरनौं मोरे मन भावन ॥
तिन कौ भेद वेद नहिं पावै। वोहू नेति नेति गोहरावै ॥
दस औतार और तिरदेवा। वोहु न उनको पावै भेवा ॥
कहँ लग कहौं संत गति न्यारी। मोरी मति गति नाहिं बिचारी ॥
तीनि लोक का पटतर लाऊँ। उन सम तुलसी कहा दिखाऊँ ॥
मैं मत त्राहि त्राहि करि भाखी। ऐसो कौन बताऊँ साखी ॥
संतन की गति कस कस गाऊँ। अस कोइ देखि परै नहिं ठाऊँ ॥

॥ छंद ॥

मोरी मति नीची माहुर सींची। संत चरन के लार भई ॥
करमन कर मैली बिष रस पेली। संत चरन चितजाइ बसी[2] ॥१
मति महा अति रंका मन निःसंका। बिष रस कस की धार मई ॥
कहँ लग गोहराऊँ अंत न पाऊँ। संत चरन की लार लसी ॥२॥

---

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में "निरनय जी" के बदले "नेरे नज़ीक" दिया है जो ठीक नहीं मालूम होता। (२) मुं० दे० प्र० के पाठ में "जाइ बसी" की जगह "चाहि लई" है।

दरसन पाये करम नसाये। पाप पुन्य सब छार भई ॥
मोहिं निरमल कीन्हा दयानिधि चीन्हा। ऐसे सिंध दरियाव मई ॥४
तिनकी रज पावन तुलसी अपावन। मो से अधम को धाम दई ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी नीच निहार, संत सरन न्यारा किया।
महुँ पुनि उतरौं पार, संत चरन रज धूरि धर ॥

॥ दोहा ॥

तुलसी मन निरमल भयौ, सूरति सार सुधार।
संत चरन किरपा भई, उतरै भौजल पार ॥

॥ सोरठा ॥

घट रामायन सार, ये अगार गति यों कही ॥
बूझै बूझनहार, बिन सतगुरु पावै नहीं ॥

॥ दोहा ॥

सतगुरु चरन निवास, निस दिन सूरति बसि रही।
संत चरन अभिलाष, पल छिन छिन छूटै नहीं ॥१॥
घट रामायन माहिं, अर्थ भेद अंदर सही।
रावन लंका राम, यह अकाम गति ना कही ॥२॥

॥ सोरठा ॥

दसरथ सीता नाहिं, भरत चत्रगुन ना कह्यो।
ये निरखौ घट माहिं, बाहिर गति मति भरम है ॥१॥
घट रामायन माहिं, घट बिधिगति मति सब कही।
परखै परम निवास, यह अकास अंदर मई ॥२॥

॥ चौपाई ॥

रावन राम भेद समझाई। रामायन सब घट बिधि गाई ॥
संतन की गति अगत अगोई। अगम निगम घर सुरति समोई ॥
संत गती गति वेद न जाना। सिम्रित सास्तर और पुराना ॥
पंडित भेष भक्त और ज्ञानी। जोगी परमहंस नहिं जानी ॥
सावग तुरक तोल नहिं पाया। भरमे सब्रहि काल गोहराया ॥

॥ दोहा ॥

पंडित ज्ञानी भेष, यह अदेख गति ना लखो ।
स्रावग तुरक न देख, संत सार अंदर चखो ॥

॥ चौपाई ॥

ये सब भूल भाव गति गाई । तन भीतर काहू नहिँ पाई ॥
ये तन भीतर संतन देखा । यह अदेख गति कहैँ अलेखा ॥
गंगा जमुना और त्रिवेनी । तन भीतर ब्रह्मंड की सैनी ॥
पृथ्वी पवन गगन आकासा । यह सब देखे घटहि निवासा ॥
पाँच तत्त जल अगिनि समाना । पिंड माहिँ ब्रह्मंड वखाना ॥
रबि चंदा तारागन होई । और अनेक विधान समोई ॥
बाहिर भर्म भेद गति गावैँ । पाहन पानी से लै लावैँ ॥
तीरथ बरत जो चारौ धामा । यह सब पाप पुन्य निज कामा ॥
पूरब पच्छिम फिर फिरि धावैँ । सत्त पुरुष की राह न पावैँ ॥
सत्त पुरुष सत नाम कहाई । वह अनाम गति संतन पाई ॥
सत्त नाम से निरगुन आया । यह सब भेद संत बतलाया ॥
पाँच नाम निरगुन के जाना । निरगुन निराकार निरबाना ॥
और निरंजन है धर्मराई । ऐसे पाँच नाम गति गाई ॥
सोई ब्रह्म परचंड कहाई । ता को जपै जगत मन लाई ॥
दस औतार ब्रह्म कर होई । ता को कहिये निरगुन सोई ॥
तिन पुनि रचा पिंड ब्रह्मंडा । सात दीप पृथ्वी नौ खंडा ॥
सब जग ब्रह्म ब्रह्म करि गाई । आदि अंत की राह न पाई ॥
यह गतिमति बिधि मैँ पुनि भाखा । कोई जगत न सूझो आँखा ॥
यह विधि सत मति भेद बताई । काहू के परतीत न आई ॥
कासी पंडित और अचारी । जोगी परमहंस ब्रह्मचारी ॥
कहै तुलसी कोइ भेद न पाया । यह सब भाव भेद भरमाया ॥

हाल काशी का

॥ दोहा ॥

तुलसी ग्रंथ पसार, कासी नगर सगरे भई।
पंडित ज्ञानी भेष, जैन तुरक सब मिलि कही ॥१॥
तुलसी बाम्हन साध, गंगाजी पर रहतु है।
निंदत सिम्रित बेद, यह अभेद गति कहतु है ॥२॥

॥ चौपाई ॥

सब पंडित मिलि मता उठाई। या को करिये कौन उपाई ॥
नैनू नाम इक पंडित भारी। तेहि पंडित मिलि सोच बिचारी॥
तुलसी नाम इक साध कहाये। जिन सब नेम अचार उठाये ॥
ग्रंथ बनाइ कीन्ह एक भाषा। तीरथ बरत एक नहिं राखा ॥
वा कै भेद भाव सब लीजै। केहि बिधि ज्ञान समझ तेहि कीजै॥
स्यामा समझ एक बतलाई। रहत पास कोइ ताहि बुलाई ॥
पंडित एक कही समझाई। रहत अहीर सोइ भाखि सुनाई॥
नाम जाति इक हिर्दे अहीरा। निसि दिन आवै हमरे तीरा[1] ॥
सुनै कथा पुनि सेवा करई। रात दिवस वस पासै परई[1] ॥
नैनू मिलि सब बाम्हन भाई। तिनि पुनि हिर्दे अहीर बुलाई ॥
सब पंडित अस पूछन लाई। कौन ज्ञान यह कहत गुसाँई ॥
वेद भेद मरजाद उठावै। सिम्रित सास्तर ना ठहरावै ॥
गंगा जमुना अंतर मानै। है परतच्छ ताहि नहिं जानै ॥
पूजा पत्री और अचारा। तिरथ वरत कहै झूठ पसारा ॥
राम रहीम एक नहिं मानै। यह कछु ठौर और कछु ठानै ॥

॥ दोहा ॥

दीन्हा हिर्दे जवाब, साफ बात बिधि यौं कही।
गति सत संत अपार, पंडित बिधि जानै नहीं ॥

---

(१) यह दोनों कड़ियाँ मुं० दे० प्र० की पुस्तक में नहीं हैं।

॥ चौपाई ॥

हिरदे अहीर ज्वाब अस दीन्हा । संत गती कोइ बिरले चीन्हा ॥
मैं तौ अपढ़ जाति अज्ञाना । तुम पंडित पढ़े बेद पुराना ॥
संतन की गति कहैाँ बुझाई । तुमहुँ न बेद भेद नहिँ पाई ॥
पढ़िपढ़ि पंडित पचिपचि हारी । बेद न भेद संत गति न्यारी ॥

॥ सोरठा ॥

नैनू कहै बिचार, यह निकाम कस भाखेऊ ।
यह जड़ जाति गँवार, बेदन सोँ न्यारी कहै ॥

॥ चौपाई ॥

नैनू सुनि पुनि मारनि धाये । पंडित और अनेक बुलाये ॥
सब से कहै सुनौ तुम ज्ञाना । यह अहीर कस करत बखाना ॥
सब पंडित मिलि यह बिधि ठानी । या की करौ प्रान की हानी ॥
यह सब मिलि कर मता उठाई । हिरदे ऊपर लात चलाई ॥

॥ सोरठा ॥

तुरक तकी इक स्वार, जात हते दरबार को ।
घोड़ा फेरि निहार, यह बिवाद कैसे भई ॥

॥ चौपाई ॥

सेख तकी इक तुरुक सवारा । ते पुनि जात हते दरबारा ॥
सुन करि बात बाग उन मोड़ा । फेरि लगाम कीन्ह उन घोड़ा ॥
सेख तकी पूछी पुनि बाता । तैं कहु कैान कैान सी जाता ॥
केहि कारन यह झगरा होई । सो सब भेद कहैा बिधि सोई ॥

॥ सोरठा ॥

नैनू निरखि पुकार, सेख तकी को देखि कर ।
ये का कहत गँवार, बिधि कुरान मानै नहीं ॥

॥ चौपाई ॥

नैनू कहै सुनौ मेहरबाना । बेद कितेब न मानै पुराना ॥
राम रहीम एक नहिं मानै । पंडित काजी झूठ बखानै ॥

॥ सोरठा ॥

हिरदे कही बिचारि, सेख तकी जो तुरक से ।
तुम बूझौ दिल माहिँ, खुदा एक सब मैं कहै ॥

॥ चौपाई ॥

हिरदे कहै तकी सुनु सेखा । सब मैं कहै खुदा है एका ॥
गाय मार बकरी तुम खइया । येहि किताब मैं कह्यो गुसँइयाँ ॥
सब मैं नूर मुहम्मद केरा । काटि गला पुनि पैहौ बेरा ॥
येही कितेब कुरान बखाना । जिन्दा को मुरदा करि जाना ॥
सोई मुसलमान है भाई । नबी नाम हर दम लै लाई ॥
रोजा कर कर खून बिचारा । ये गुनाह नहिँ बक्सनहारा ॥
झूठा रोजा झूठ निवाजा । झूठा अल्ला करै अवाजा ॥
वा साहिब की राह न पाई । सब जहान में रहा समाई ॥

॥ सोरठा ॥

सेख तकी सुनि बात, ज्वाब स्वाल बोले नहीं ।
धर्मा जैनी जाति, संग बात कीन्ही सही ॥

॥ चौपाई ॥

धर्मा नाम जाति इक जैनी । उन सब सुनी हमारी कहनी ॥
धर्मा स्रावग कहै बिचारी । जैन मता है सब से भारी ॥
येमति आदि साध नहिँ जानै । तैं मत झूठा बाद बखानै ॥
चौबीसौ तीर्थंकर जानी । आदि नाथ हैँ हमरे स्वामी ॥
तिनकी आदि कहा तुम जानौ । नाहक्र बेगुन बादि बखानौ ॥

॥ सोरठा ॥

ह्रिदे कहै सुनु बात, जैन मता पुनि सब कहौँ ।
सुनौ भेद बिख्यात, आदि अंत सब समझि कै ॥

॥ चौपाई ॥

हिरदे कहै सुनो हो भाई । आदि नाथ की आदि सुनाई ॥
जो तुम सुनो कहौँ बिधि नाना । हम सब कहैँ सुनो दै काना ॥

प्रथम जुगल्या धर्म बिचारी। आई छींक भये सुत नारी ॥
होते छींक प्रान तेहि जाई। कन्या पुत्र भये तेहि ठाईं ॥
ता पीछे कुलकर की बाता। चित दे सुनौ कहौं बिख्याता ॥
चौथा कुलकर भेद बखाना। ता मैं नभ राजा इक जाना ॥
मुरा देबि तेहि भाखौं भेवा। जाकर ऋषभराय भये देवा ॥
भागवत कहै ताहि अवतारा। तिन का सुनौ आदि निरवारा ॥
ता ने तप कीन्हौ निरबाना। मुक्ति पाइ पुनि काल समाना ॥
ऐसे भये और चौबीसा। पुनि पुनि आये मुक्ति पद ईसा ॥
ता मैं प्रथम ऋषबदेव होई। भाखा तिन जग थापा सोई ॥
आगे भेद न उनहूँ जाना। यह सुन सार भेद निरबाना ॥
जग थापा पुनि धर्म चलाई। आदि पुरान मैं देखौ भाई ॥
कहं नौकार जाप बतलाई। जाकी बिधी कहौं समझाई ॥
जाप भेद मैं कहौं पुकारी। दिल अपने मैं लेउ बिचारी ॥
अरिहंत सिद्ध भाखि विधि नामा। अरियानं उज्झानं जाना ॥
लोये सर्ब साध को कीन्हा। ये नौकार मंत्र उन लीन्हा ॥
सुनि धरमा तब चकृत भयऊ। सब बरतंत जैन कौ कहेऊ ॥

॥ दोहा ॥

सुनि धर्मा यह भेद, ये अभेद कछु भिनि कहै।
जैन मता समझाइ, ये अकाय कछु अगम है ॥

॥ चौपाई ॥

सेख तकी पंडित भये एका। धर्मा धर्म कि बाँधी टेका ॥
ये तीनौं तुलसी पै आये। हिरदे ऊपर बाँह चढ़ाये ॥
और अनेक मूरख बहुतेरे। कोइ सूधे कोइ चलैं अनेरे ॥
हिरदे अहीर चले सब झारी। जहँ तुलसी ने कुटी सँवारी ॥
हिरदे अहीर साथ भख भारी। तब तुलसी ने मता विचारी ॥
सब चलि आये कुटी के पासा। जब तुलसी मन कियौ हुलासा ॥

उठि के चरन गहे सब केरे । कीन्ही दया दीन तन हेरे ॥
बाम्हन पंडित धर्मा जैनो । सेख तकी से कीन्ही सैनो ॥
नैनू पंडित सैन सँवारा । धर्मा हिये उठै जस झारा ॥
यह दोनौं मिलि मता बिचारी । सेख तकी को आगे डारी ॥
नैनू नोक टोक इक भारा । यह इनके हैं गुरू बिचारा ॥
पूछो भेद कहैं निरवारा । इन कस भाखा झूठ पसारा ॥

॥ सोरठा ॥

हिरदे कहै निहोर, स्वामी तुलसी बिधि सुनौ ।
मैं कछु कही न और, ये अबूझ बूझो नहीं ॥

॥ चौपाई ॥

हिरदे कहै सुनौ हो स्वामी । मैं कछु कही रीति गति ज्ञानी ॥
नैनू पंडित कहै बिचारी । इन सब ज्ञान कही गति न्यारी ॥
इन सब धर्म कर्म जग पेला । अस कस ज्ञान कहै यह चेला ॥
इन सब बेद कितेब उठावा । जोगी जैन नहीं ठहरावा ॥
और अनेक बात नहिं मानै । अस कह मंत्र सुनायौ कानै ॥
तब तुलसी सुनि आदर कीन्हा । प्रीति भाव उठि आसन दीन्हा ॥
दीन बिधी सब अपनी गाई । चरन परसि के सीस चढ़ाई ॥
मैं अनाथ हौं तुम्हरो बारा । छिमा करो मैं दास तुम्हारा ॥
मैं औगुन की खानि अपारा । तुम गुन सीतल अपरम्पारा ॥
तुम पंडित मैं अपढ़ अयाना । करो दया तुम कृपानिधाना ॥
ये हिरदे कछु ज्ञान न पावा । औगुन ज्ञान जो तुम्हैं सुनावा ॥
सीतल भये धीर तब आई । सुनि अस बचन बैठि भुँइ माईं ॥

॥ सोरठा ॥

तकी तुरक कह बात, तुलसी सुनियौ भेद अब ।
सब हिरदे बिख्यात, जो गुनाह इन ने किया ॥

॥ चौपाई ॥

सेख तकी जब बचन सुनाई । तुलसी सुनियौ चित्त लगाई ॥

हिरदे कुफ़र बात सब कीन्हा । रोजा निमाज मेटि सब दीन्हा॥
और किंतेब कुरान उठाये । खुदा नबी कर खोज मिटाये ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी तकी विचार, सब सँवारि बिधि मैं कहौं ।
कहुँ कुरान निरधार, जो किताब भाखो सबै ॥

सम्बाद साथ तक़ी मियाँ के

॥ चौपाई ॥

तुलसी कहै तकी सोँ बाता । या का तकी सुनौ बिख्याता ॥
चौधा तबक़ कुरान बतावा । और चौबीस पीर पुनि गावा ॥
फजल मुहम्मद कीन्ह जहाना । आब ताब पट अवर निदाना ॥
तबक भिन्न चौधा बतलावैा । भिनि चौबीस पीर दरसावैा ॥
कैान तबक़ मैँ कैान बयाना । सो तकी कहिये हक्क इमाना ॥
कैान तबक़ मैँ नबी का बासा । तबक तबक़ का कहैा खुलासा ॥
सुनकर तकी ज्वाब अस दीन्हा। कहैाँ हक्क जो करैा यक़ीना ॥
अल्ला ने मुख कही जुबाना । जा से भये किंतेब कुराना ॥
जाहिर किये पैगम्बर भाई । सब जहान खिलक़त के माईँ ॥
कर सरियत सब राह चलाई । तकी कहै स्याँ तुलसी साँईँ ॥
खिलकत खबर जहान जनावा। पैगम्बर पर हुकम चलावा ॥
सरा[1] राह सरियत[1] की बाँधैा। अल्ला हुकम राह को साधैा ॥
मुसलमान जो नाम कहावै । हक्क इमान कुरान बतावै ॥

॥ तुलसी साहिब बाच ॥

॥ दोहा ॥

तकी तोल जाना नहीं, कहैा कुरान की बात ।
दिल दरियाफ़्त अपने करो, जो कुरान बिख्यात ॥१॥
खुदा चून बेचून[2] है, अस अस कहत कुरान ।
बिन जुबान अल्ला मियाँ, कस कस किया बखान ॥२॥

---

(१) शरअ और शरीअत । (२) बेमिसाल ।

अल्ला अलिफ जुबान, बिना बदन जाहिर नहीं।
जुबाँ बदन के माहिं, तौ बेचूँ कहना नहीं ॥३॥

॥ चौपाई ॥

तकी मियाँ हक बोल सुनावौ। अल्ला तौ बेचून बतावौ ॥
उनके बदन जुबाँ नहिं भाई। कैसे कितेब कुरान बनाई ॥
कागद स्याही कस लिख मारा। बिन जुबान कैसे बिस्तारा ॥
अल्ला मियाँ कितेब बनाई। कहौ जुबाँ बिन कैसे गाई ॥
ये तौ दिल बिच साँच न आवै। तुलसी तकी बोल नहिं भावै ॥
बिन जुबान मुख कहा कुराना। अल्ला के नहिं बदन जुबाना ॥
चूँ बेचून नमून न ज्वाबा[1]। सुनौ तकी म्याँ कहै किताबा ॥
वहि कितेब क़ह खुदा जुबाना। अल्ला मुख से भये कुराना ॥
जो जुबान नहिं उनके भाई। तौ कस कहे कुरान बनाई ॥
या की तकी तोल बतलावौ। दिल में समझ बूझ समझावौ ॥
दिल और रूह राह बतलैयै। तब कुरान का गाना गैयै ॥
रूह रकान असमान ठिकाना। केहि बिधि गई राह पहिचाना ॥
सो घर का म्याँ भेद बतावौ। चौथा तबक तोल समझावौ ॥
सुनकर तकी सका नहिं बोला। मुख भया बंद जुबाँ नहिं खोला ॥
तुलसी कहै कहौ कस भाई। जा से दिल बिच होइ निसाई ॥
सुनकर तकी ज्वाव अस दीन्हा। मुरसिद मियाँ मरम हम चीन्हा ॥
तुलसी तकी दीन जब देखा। तब भाखा बिधि भेद बिसेखा ॥
साँची महजित तन को जाना। जा में चौथा तबक समाना ॥
मक्का भिस्त हज्ज येहि माहीं। मुल्ला काजी राह न पाईं ॥
मुहम्मद नूर जानि सब केरा। दोजख भिस्त में किया बसेरा ॥
नूर नबी ने सब का कीन्हा। तुम हलाल बकरी कस कीन्हा ॥

---

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में "न ज्वाबा" की जगह "जवाबा" है जो ठीक नहीं जान पड़ता।

गुनहगार दोजख की रीती । करौ खून ये वहुत अनीती ॥
जो महजित उन आप बनाई । सो हलाल करि कै तुम खाई ॥
मिट्टी महजित कबर बनाई । झूठा हक्क ईमान बताई ॥
साँची महजित तन मन साँई । खिलकत खुदा खलक के माई ॥
नूर नबी सब माहिँ बिराजा । जाकी हर दम उठै अवाजा ॥
नूर नबी सब माहिँ बिचारा । तब दोजख से होइहै न्यारा ॥
नासुत मलकुत जबरुत भाई । लाहुत राह नबी की पाई ॥
लामुकाम रब साहिब साँई । वाको खोज भिस्त तब पाई ॥
सेख तकी तक थक रहे भाई । जवाब स्वाल मुख से नहिँ आई ॥

॥ चौपाई ॥

सुनौ तकी कहुँ खोज न पावै । कहा किताब ज्वाब नहिँ आवै ॥
काजी मुल्ला पढ़े कुराना । खुदा खुदा कहे खोज न जाना ॥
खोलि किताब देखिये भाई । खुदा आदि कहौ कहँ से आई ॥
खुद खुदाइ कर कहै कुराना । खुद खुदाइ का मरम न जाना ॥
ये खुदाइ ना कहिये भाई । ये तौ खुद खुदाइ की छाँहीँ ॥
जहँ खुदाइ रहता है साँई । उस खुदाइ का अंत न पाई ॥
तकी खुदा तुम एक बतावो । खुद खुदाइ का खोज लगावो ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी तकी तलास, खुदा बास कहु कहँ हता ।
नहिँ जब जिमीँ अकास, कोइ किताब स्वाँसा नहीँ ॥

॥ दोहा ॥

मंसूर मियाँ पस्तो कहै, तकी बूझ दिल माइँ ।
खुद खुदाइ की राह का, खुदा खोज नहिँ पाइ ।

॥ पश्तो १ ॥

खोल देखो रे किताबैँ, आद अव्वल कौन था (म्याँ) ।
नहिँ ज़मीँ असमान ख़िलक़त, खुद खुदा तब था कहाँ ॥१॥
क़ुफ़ल खोले रे कुराना, मूल स्याना भेद का ।
था क़लम स्याही न काग़ज़, और न था आदम मियाँ ॥२॥

नहिँ मुहम्मद रब न रे जब, नहिँ पैयम्बर पीर थे।
नहिँ नवी का नाम निसबत, भिश्त दोज़ख़ नहिँ रचे ॥३॥
क़ाज़ी मुल्ला रे बेहोशो, खोज करो दिलदार का।
मन सुआ मनसूर जब से, आशिक़ जो चश्मे यार का ॥४॥

॥ पश्तो २ ॥

यह ख़ुदा ना है रे कुदरत, ख़ुद ख़ुदा कोइ और है (म्याँ)।
जिन ख़ुदा को तख़्त बख़्शा, वह सकस कहो कौन है ॥१॥
दिल दिया और रूह रोशन, है हसन तन हुस्न को।
जब तबक़ चौधा दिये हैँ, आदि ख़ुदा को जानिये ॥२॥
कुल जहाँ आलम है कुन से, पट अबर अल्ला से है।
यह हर इक ना कोइ किसो पै, भेद दोस्तो दिल मिलै ॥३॥
महरम मियाँ मनसूर आशिक़, वह है बेचूँ वेनमूँ।
यह किताबोँ में नहीं है, ख़ुद ख़ुदा का राज़ है ॥४॥

॥ पश्तो ३ ॥

ऐन अन्दर चश्म को रे, खोल देखो कौन है (म्याँ)।
कुल ख़लक़ आलम इसम बिच, दिल हिये में ख़सम है ॥१॥
नहिं किताबोँ में रे है कुछ, कुल कुराने छूँछ है।
वह पिया आलम की आँखियाँ, और कहीं नहिं पूछ ले ॥२॥
हुस्न है रे हंस जा से, हुस्न तन बिच मेँ रहा।
भूल अपनी आद अव्वल, कट मरे मन मौज मेँ ॥३॥
होश ग़ाफ़िल है रे दोज़ख़, दिल दिया नहिँ यार को।
बूझ बिल-आख़िर[1] ख़राबी, इश्क़ ज्योँ मनसूर हो ॥४॥

॥ पश्तो ४ ॥

देख कुछ नहिँ इस जहाँ मेँ, सब फ़ना हो जायँगे (म्याँ)।
रहै रब का नाम मरदो, लोग लशकर कूँच है ॥१॥

---

(१) अंत को।

चार दिन ख़ूबी ख़लक़ मैं, अन्त मरना हक़ है (म्याँ)।
ज्यों धुएँ का मेघडम्बर, कुल मिटै इक पलक मैं ॥२॥
तन को देखो आशिक़ो, बस ख़ून चमड़ी हाड़ है।
जब निकल जावै पवन, तब गाड़ मिट्टी मैं मियाँ ॥३॥
यार अज़ीज़ाँ ने कफ़न मैं, बाँध धरा ताबूत पर।
जोरू अम्मा कुल कुटम सब, मनसूर तन मन झूठ है (म्याँ) ॥४॥

॥ पश्तो ५ ॥

खोज मुरशिद रे मुरीदो, राह रोशन यार को (म्याँ)।
रूह मेहर मुरशिद के दसतोँ, दिल फ़ज़ल दिलदार मैं ॥१॥
रूह चढ़ावौ रे अबर को, हो ख़बर उस यार को।
ला पै जब रब राह चीन्है, पल मैं लखै इसरार को ॥२॥
क़ुफ़ल खोले रे अधर के, रूह से फोड़ असमान म्याँ।
जान मलकूत नासूत को, जबरूत की कर क़दर म्याँ ॥३॥
जा मिलै लाहूत रे जब, होश हो हाहूत का।
लौ लगी जो ला के अन्दर, रब मिले मनसूर को ॥४॥

॥ दोहा ॥

रब्ब राह लौ लाह मैं, खुदा खोज दिल माहँ।
रब खोदाइ से अलग है, खुद खुदाय तेहि नावँ ॥१॥
बूझौ खोज किताब मैं, सब कुरान कुल झार।
कर तलास काजी सुनौ, कहि मनसूर पुकार ॥२॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी तकी निहार, कहि पुकार मनसूर ने।
मुरसिद खोज बिचार, बन मुरीद मुरसिद मिलै ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी कहै तकी सुन बाता। खुद खुदाइ मालिक है दाता ॥
उनका खोज खुदा नहिँ पाया। नहिँ कितेब लिखने मैं आया ॥
काजी मुल्ला खोज न पावै। दे दे बाँग खुदा गोहरावै ॥

अब खुदाइ का खोज बताऔं। खुदा राह और भिस्त लखाऔं॥

॥ रेख़ता ॥

अजब अनार दो भिस्त के द्वार पै।
लखै दुरवेस फक्कीर प्यारा ॥१॥
ऐन के अधर दोउ चस्म के बीच मैं।
खसम को खोज जहँ झलक तारा ॥२॥
उसी बिच फकत खुद खुदा का तखत है।
सिस्त से देख जहँ भिस्त सारा ॥३॥
तुलसी तत मत मुरसिद के हाथ है।
मुरीद दिल रूह दोजख नियारा ॥४॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी भिस्त मिलाप, खुदा खोज येहि विधि मिलै।
चौथा तबक निवास, कहौ कुरान किस बिधि कहै॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी तबक तरक पहिचानौ। तब मियाँ तकी भिस्त को जानौ॥
बिन मुरसिद पावै नहिं घाटा। ये सब समझ खोज ले बाटा॥
सुनकर तकी बहुत भये दीना। बन्दा गुनहगार नहिं चीन्हा॥
चरन पकड़ पुनि सीस गिरावा। तुम फक्कीर हम मरम न पावा॥
तुम खुदाइ की जाति अजाती। हम इनके सँग भये सँगाती॥

॥ दोहा ॥

तकी कहै तुलसी मियाँ, तुम गुरु पीर हमार।
गुनह बकस अपना करौ, बंदा तकी तुम्हार ॥१॥
तकी दीन तुलसी लखा, पका दीन मत माइँ।
झका तका अपनी तरफ़, गुनहगार तुम पाइँ ॥२॥
तको तबक जाना नहीं, नबी नूर नहिं पाइ।
भिस्त दोजख मैं तुम रहे, कैसे मिलै खुदाइ ॥३॥

॥ रेख़ता नसीहत ॥

तुलसी तबक जाना नहीं, बेहोस गाफिल हो रहा ।
जिस ने तुझे पैदा किया, उस यार को चीन्हा नहीं ॥१॥
नाहक अदम दम खोवता, मुरसिद पकड़ नाहिं डूबहो ।
तुलसी खलक कुल ख्याल है, आसिक़ मुहब्बत कर सही ॥२॥
खोजो मुहम्मद दिल-रहम, जिस इस्म से आलम हुआ ।
तुलसी नबी निरखै नहीं, जहँ लग मुसल्लम है नहीं ॥३॥
रब रूह मरहम ना हुआ, रब देख अंदर है सही ।
तुलसी तकी बूझा नहीं, जग में जिया तो क्या हुआ ॥४॥
गन्दा नजिस क्यों हो रहा, इस जक्त में रहना नहीं ।
अरे ऐ तकी तल्लास कर, तुलसी फना होना सही ॥५॥
चारो चसम[1] को खोल कर, देखो जुलम जालिम वही ।
जबरील को तैं ना लखा, तुलसी खबर खोजा नहीं ॥६॥
रोजा निमाज हर दम किया, उस यार को दिल ना दिया ।
खोजा नहीं अपना पिया, तुलसी तकी दोजख लिया ॥७॥
नासूत मलकूत जबरूत हैं, लाहूत लौ तैं ना लिया ।
हाहूत हिये खोजा नहीं, ला में रबी जीता पिया ॥८॥
तुलसी तकी तालिम[2] दिया, हर दम गुनह बंदा हुआ ।
मुरसिद मुरीदी दस्त है, पावे तकी अपना किया ॥९॥
तुलसी रहम राजी हुआ, तोला तकी अपना किया ।
दिया दस्त दरदी जान कै, तुलसी तकी मुरसिद हुआ ॥१०॥

॥ दोहा ॥

तकी दीन तुलसी लखा, दीन्हा पंथ लखाइ ।
सुरति सैल असमान कर, चढ़े गगन को धाइ ॥

॥ चौपाई ॥

तकी दीन गति गाइ सुनाई । दीन्हा सूरति पंथ लखाई ॥

---

(१) अंतर और बाहर की दृष्टि । (२) शिक्षा ।

॥ सरन में आना तकी मियाँ का ॥

॥ दोहा ॥

तकी दस्त दोउ जोड़ि कै, करि सलाम सिर टेक ।
नेक नजर अपनी करौ, बंदा तकी निहाल[1] ॥

॥ चौपाई ॥

नेक निहाली नजर निहारौ । तुलसी बंदा तकी सम्हारौ ॥
हमरा गुनह माफ सब कीजै । फजल करौ फिर अज्ञा दीजै ॥
चले तकी मारग को जाई । कासी नगरी पहुँचे आई ॥

॥ दोहा ॥

चले तकी मारग गये, बीच बजार मँझार ।
कर्मा पल्लीवाल की, गये दुकान के पास ॥

संबाद जैनियों के साथ

॥ चौपाई ॥

कर्मचंद इक पल्लीवाला । स्रावग जैन धर्म मत पाला ॥
सो करै वनिज बजाजी कोरा । ताहि दुकान आग तेहि मोरा ॥
कर्मचंद ने कीन्ह सलामा । आदर बहुत कीन्ह सनमाना ॥
सेख तकी कहै सुन रे भाई । कहैं फकीर अक[2] खुदा गुसाईं ॥
ता को सब बरतंत सुनावा । कर्मचंद तुलसी ढिंग आवा ॥
कर्मचंद और धर्मा जैनी । सब पूछी पुनि हमरी कहैनी ॥
कौन धर्म यह साध कहावा । जैन को धर्म मर्म जिन पावा ॥
धर्मचंद और कर्मा जैनी । थापी उन निज अपनी कहैनी ॥

॥ प्रश्न तुलसी साहिब ॥

कहि तुलसी तुम मर्म बताओ । जैन धर्म का भेद सुनाओ ॥

॥ उत्तर कर्मचंद और धर्मा ॥

कर्मचंद और बोले धर्मा । होइ मुक्ति जब काटै कर्मा ॥
तप कर संजम बन को जावै । हरी त्याग कर जीव बचावै ॥

---

(१) मु० दे० प्र० की पुस्तक में "लेवो तकी अलेक" है । (२) या कि ।

टाटक ध्यान जपै नौकारा। जब या जीव को होइ उबारा॥
कोसिस ऐसी कठिन अपारा। काटै कर्म जीव निरवारा॥
तीर्थंकर चौबीसो जाना। कर्म काटि पहुँचे निरबाना॥

॥ सोरठा ॥

धर्मा कही जनाइ, जैन धर्म संजम बिधी।
तुलसी सुनौ समाइ, तब पुनि फिरि आगे कहौं॥

॥ प्रश्न तुलसी साहिब ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी पूछै ताइ, भेद कहो निरबान को।
तुम कस पायो जाइ, सो देखी अपनी कहो॥

॥ चौपाई ॥

तुम देखी अपनी बतलावौ। करनी और और की गावौ॥
साँची करनी अपनी भाई। तुम कुछ और और की गाई॥
तीर्थंकर पहुँचे, निरबाना। कर्म काटि वे जाइ समाना॥
तुम तेहि करनी भाखि सुनाई। हाथ कहा कहो तुम्हरे आई॥
जीवत मिले देखिये आँखी। ता की करनी कह कर भाखी॥
खावै भूख जाइ पुनि ताही। ऐसी बात कहो समझाई॥
अब जो तुरत तलब सो पावै। तब तुलसी की प्यास बुझावै॥
तुम तो कही जुगन की बानी। देखौं अबै सुनौं जो कानी॥
देखौं अबै तो मन पतियावै। ऐसो तत्त बात मन भावै॥
ये सब कही सुनी हम जानी। मुए मुक्ति की करो बखानी॥
मूए पर कोइ आवै न भाई। जीवत मैं केहु पहुँचि न पाई॥
ता की खबर साँच कस आई। सो धर्मा तुम कहो सुनाई॥
ये तो अंध अंध कर लेखा। मानौ जो जोइ नैनन देखा॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी तुरत बताइ, जो निज नैनन लखि परै।
सरै जीव को काज, परे पार गति देखिये॥

॥ चौपाई ॥

सो साँची मानैं हम भाई । ऐसी धर्मा कहो सुनाई ॥

॥ उत्तर धर्मा ॥

॥ दोहा ॥

कहै धर्मा तुलसी सुनौ, कहौं भेद बिस्वास ।
बिन संजम पावै नहीं, तप जप बिना उपास ॥

॥ प्रश्न तुलसी साहिब ॥

॥ सोरठा ॥

सुनु धर्मा त्रिधि बात । संजम तप मुक्ती नहीं ॥
पद पावै निरवान । चढ़ि अकास मुक्ती मिलै ॥१॥
निज निरवान बिधान । कहौं भेद भिन भिन सुनो ॥
पद निर्वान निज पार । संत सार आगे चखै ॥२॥

॥ रेखता ॥

निकट निरवान की सान जग मैं लखौ ।
फटिक बिच सिला पर स्याम माईं ॥१॥
काल की जाल दरहाल जा को कहैं ।
भये चौबीस भी मुक्ति पाई ॥२॥
गुन मिलि गोह चौथा गुनठान हैं ।
चौथा जमराय जहँ बसत भाई ॥३॥
अधर अठबीस लख लोक राजू कहै ।
काल निरबान रत रहत राही ॥४॥
देव मुनि दैत्य गंधर्व और मानवी ।
केवली[1] काल मुख सकल जाई ॥५॥
दास तुलसी निरवान पद निरखि कै ।
छाँड़ि ये राह घर अधर माईं ॥६॥

---

(१) पूरा ज्ञानी जो मुक्ति का अधिकारी हो गया है उस को जैन मत में "केवली" कहते हैं ।

॥ ग़ज़ल १ ॥

जैनी जो जैन नैन सूझै नाईं।
आतम को छाँड़ि पुजैं पाहन जाईं ॥१॥
कर कर पूजा विधान अष्टक गावैं।
भादों बिधि मंदिर सब स्रावग आवैं ॥२॥
चावल रँग माँड मँडै मनसैं आप का।
नंदेसुर पूजि दीप करैं बाप का ॥३॥
और अढ़ाई दीप माँडि करते पूजा।
अंदर आतम्म ब्रह्म नाहीं सूझा ॥४॥
करते कल्यान पाँच कामधेनु की।
पूजैं वेहोस फूटि हिये नैन की ॥५॥
जिन ने तन साज किया जानौ भाई।
वा की बिधि भूलि भाव पाहन लाई ॥६॥
तुलसी ये फंद कीन्ह काल पसारा।
धरमन की टेक बाँधि बूड़े सारा ॥७॥

॥ ग़ज़ल २ ॥

ढूँढत गिरिनार सिखरि आबू जाते।
सतगुरु बिन मेहर नहीं काबू पाते ॥१॥
बूझै सतसंग संग संतन माईं।
अंदर पट खोल बोल देत दिखाई ॥२॥
जिन के बड़े भाग सोई निरखि निहारा।
रहते जग बीच बीच जग से न्यारा ॥३॥
उनको वोहि चाल हाल घट मैं देखै।
पूछै कोइ चीन्हैं नहिं बात बिसेखै ॥४॥
खोजत पहाड़ सिखर मूरति माईं।
तुलसी नौकार जपैं सूझै नाईं ॥५॥

॥ चौपाई ॥

पद निरबान भूमि बतलाई । केवलि ज्ञान तिथंकर गाई ॥
तप संजम पूजा बिधि बानी । ये गति चारि माहिँ भै खानी ॥

॥ दोहा ॥

जप नौकार निकाम सब, आदि सार नहिँ जान ।
पद निरबान के पार की, तुलसी करत बखान ॥

॥ शब्द ॥

अद्भुत आज अलेखा री, सखि सइयाँ कै भेषा ॥टेक
उदित मुदित दोइ सहर सुहावन, स्याम सेत नित देखा ।
अजर खेत्र नभ फटिक सिला पर, पद निरबान बिसेखा ॥१॥
सिलि पिलि बिजै खेत्र बिंद्राचल, लील सिखर पर ठेका ।
समुँदर सात पार जल खंडा, अंडा अब ले पेखा ॥२॥
निरखत चारि खानि गति चारी, बिधिबिधि जीव बिसेखा ।
केवलि ज्ञान होत गुंकारा, देखे केवली अनेका ॥३॥
ये निरवान भूमि मत मारग, आगे जान न लेखा ।
स्रावग जैन धर्म मत माहीँ, इनके वोही टेका ॥४॥
आतम ज्ञान ध्यान बतलावैँ, आगे भेद न पावैँ ।
सास्तर साखि भाखि बिधि देखैँ, खोजत मुए अनेका ॥५॥
या के परे भिन्न गति न्यारी, सुनि ब्राइस बिधि देखा ।
ता के परे पार सत साहिब, सो पद संतन लेखा ॥६॥
सुन्न सुन्न प्रति प्रति पद माहीँ, जहँ निरवान न पेखा ।
केवलि ज्ञान आतमा नाहीँ, धरम करम नहिँ एका ॥७॥
सूर चंद नहिँ धरनि अकासा, तेज पवन जल छेका ।
ता के परे पार निर्खि न्यारा, तुलसी हिये दृग देखा ॥८॥

॥ दोहा ॥

तुलसि भूमि निरबान की, धर्मा सुनौ बयान ।
केवलि ज्ञान गोंकार का, तुलसी करत बखान ॥१॥

फटिक सिला नभ ऊपरै, केवलि करत बखान ।
तुलसी चढ़ि असमान पर, निरखा भिनि भिनि छान ॥२॥
निरबान निरखि आगे चली, सुनि अँड बाइस पार ।
नहिँ निरबान गति वहँ चलै, तुलसी देखा झार ॥३॥
जीव अचर चर अंड के, जो ब्रह्मंड के माइँ ।
सूरति चढ़ि असमान पर, तुलसी देखा जाइ ॥४॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी धर्म बिलोके सारी । तुरक जैन बाम्हन मत झारी ॥
जग थापन जैनी बतलावैं । ऋषब देव कीन्हा बिधि गावैं ॥
तीथंकर चौबीसौ बानी । तुरक पीर चौबीस बखानी ॥
मुहम्मद थापन कीन्ह जहाना । बाम्हन ब्रह्मा बेद बखाना ॥
मुहम्मद तुरक बाम्हन बतलावैं । तीसर जैनी अस अस गावैं ॥
अस अस तीनौं कहत बखाना । झूठ साँच कहौ केहि को माना ॥

॥ दोहा ॥

गुनष्टान चौथा कहे, जैन मते मैं जान ।
तुरक तबक चौथा कहे, बाम्हन भवन बखान ॥१॥
चौथा भवन बाम्हन कहैं, तीनौ मत इक सार ।
आदि पार कोइ ना कहै, लखा न रचनेहार ॥२॥

॥ रेख़ता ॥

चौथा तबक किताब कुरान मैं ।
पीर चौबीस पुनि वोहू गावा ॥१॥
अल्ला रचि खेल सब जहान आलम किया ।
आब और ताब पट अबर आवा ॥२॥
सरा का खेल मुहम्मद से करि कहैं ।
येही बिधि तुरक तकरीर लावा ॥३॥

जैन मत माहिँ गुनष्टान चौथा कहैँ।
बिधी भगवान चैाबीस गावा ॥४॥
ऋषबजी रचन संसार की थापना।
आपने मते की वोहू लावा ॥५॥
बेद पुरान संसार बाम्हन कहै।
बिधी भगवान चैाबोस गावा ॥६॥
चतुरदस लोक लीला बरनन करैँ।
रचा बैराट जग बिधि बनावा ॥७॥
झूठ और साँच कहाे कैान को कोजिये।
हिन्दू और तुरक पढ़ भूल पावा ॥८॥
जैन सोइ जिंद बुँद आदि को ना लखा।
तीनि मैँ किनहुँ नहिँ चीन्ह पावा ॥९॥
दास तुलसी कहै अगम घर अधर है।
संत बिन भेद नहिँ हाथ आवा ॥१०॥

॥ चैापाई ॥

बाम्हन तुरुक जैन मत माईं। करता की गति केहु न पाई ॥
मत अपने अपने की गावैँ। तीनैाँ करता तीनि बतावैँ ॥
थापा जग रचि एक बनाई। ये तीनौँ मिलि तीनि बताई ॥

॥ सोरठा ॥

धर्मा धर्म पसार, जैन बिधी कस कस कही।
भिनि भिनि कहो बिचार, तप संजम उपवास बिधि ॥

॥ चैापाई ॥

ब्रत संजम जप तप बतलावो। कहै तुलसी भिनि बिधि दरसावो ॥
कस कस चलन बात बिधि कहिये। स्रावग बिधि पुनि धर्म सुनइये ॥
स्रावग कैान बात बिधि पालैँ। सोई कहो कैान बिधि चालैँ ॥
धर्मा अष्टक बाँचि सुनाई। तुलसो सुनियौ चित्त लगाई ॥

॥ उत्तर धर्मा ॥

॥ अष्टक १ ॥

जल नीर निरमल मिष्ट । हिमकर बासनं[१] ॥१॥
धार ते भंडार भै के । चरन स्रीपति चर्चनं ॥२॥
सोइ पूजि पावै सेव सुखदाता । दुरियत कर्म के खंडनं ॥३॥
स्रीपारसनाथ जप सूरज जैनराई । मूल नायक वंदनं ॥४॥
तुम चंद्र - वदनी । चंदा पुरी परमेसुरा ॥५॥
कैलास गिरि पर ऋषभ जनवर । चरन कँवल हृदे धरा ॥६॥

॥ अष्टक २ ॥

कुमकुम जो मंजन अगर केसर । मलयागिरि घिसि चंदनं ॥१॥
अकल दुक्ख निरवार भै के । चरन स्रीपति चर्चनं ॥२॥
सोइ पूजि पावै सेव सुखदाता । दुरियत कर्म के खंडनं ॥३॥
स्रीपारसनाथ जप सूरजजैनराई । मूल नायक वंदनं ॥४॥

॥ अष्टक ३ ॥

वेल फूल चमेलि चंपा । कास कसोदिनि केतकी ॥१॥
तास परमल बास ऊधै । अगर आगर सेवती ॥२॥
सोइ पूजि पावै सेव सुखदाता । दुरियत कर्म के खंडनं ॥३॥
स्रीपारसनाथ जप सूरज जैनराई । मूल नायक वंदनं ॥४॥

॥ अष्टक ४ ॥

खरि खरेला दाख खिरनी । आम स्रीफल लाइया ॥१॥
नारियल नौरंग केला । प्रभुजी के चरन चढ़ाइया ॥२॥
मोरो इतनी बिनती दयाल कै । प्रभु नाथ के गुन गाइया ॥३॥
तुम चंद्र - वदनी । चंदा पुरी परमेसुरा ॥४॥
केलास गिरि पर ऋषभ जनवर । चरन कँवल हृदे धरा ॥५॥

---

(१) नं० दे० प्र० की पुस्तक में "नहिं मकर बासन" दिया है जिसका अर्थ समझ में नहीं आता।

॥ चौपाई ॥

धर्म पूजा विधी बताई । सुनि तुलसी संजम समझाई ॥
स्रावग भिन्न भिन्न जेहि जाती। स्रावग धर्म जो भये सँगाती ॥
तिनकी बात कहौँ समझाई । जेहि जेहि विधी आदि चलि आई ॥
प्रातहिं उठि अस्नानहिं जावै । पानी छानि आपु फिर न्हावै ॥
पूजा विधी विधान करावै । पूजा करि फिर आरति लावै ॥
मंदिर बैठि करै पुनि जापा । माला सूत्र लेय सोइ साफा ॥
दरसन करि पुनि घर को आवै। हरी वस्तु कछु नाहीं खावै ॥
दुइज पंचमी पालै सोई । आठैं ग्यारस यह विधि जोई ॥
चौदसि पाँच बरत नित पालै। स्रावग धर्म येही विधि चालै ॥
ता कर होय स्वर्ग मैं बासा। देव लोक पुनि करै निवासा ॥
और उपास विधी बतलाऊँ। स्रावग धर्म कर्म गति गाऊँ ॥
मासिक मन पखवारा कीन्हा। मुख धोवन मुख पानी लीन्हा ॥
अठवाई तेला जिन जाना । और अनेक उपास विधाना ॥
बेला विधि और करै घनेरा । साधै कर्म कटै भौ बेरा ॥
ऐसा धर्म कर्म जोइ जाना । सो प्रानी पहुँचे निरबाना ॥
आदि नाथ केवलि अस भाखी। सास्त्र पुरान कही सब साखी ॥
और जो सुनो आदि की बानी। जो केवली मुख कही बखानी ॥
आदि पुरान प्रथम यों भाखा। जुगल्या धर्म बखानी साखा ॥
एक पुरुष इक नारी होई । आवत छींक मुए पुनि दोई ॥
नासिका माहिं छींक होइ सोई । कन्या पुत्र भये पुनि दोई ॥
ऐसे कछू दिवस गये बीती । चौथा कुलकर की यह रीति ॥
चौथा माहिं एक नभ जानो । मुरा देवी ताही की रानी ॥
तिनके ऋषभ देव पुनि भयेऊ । काटि कर्म तीर्थंकर कहेऊ ॥
तिन पुनि जगत भाव विधि थापा । कह्यो नौकार मंत्र पुनि जापा
ता की साखि सुनौ चित लाई। जाप विधी मैं कहौँ सुनाई ॥

॥ सोरठा ॥

सेठ सुदरसन एक, सूली चोर मारग दियौ ।
मंत्र सुनायौ कान, तुरत चोर स्वर्गं गयौ ॥

॥ चौपाई ॥

सूली चोर एक जो दीना । सेठि सुदरसन जाप यकीना ॥
अरिहंत सिद्ध दोइ नाम सुनावा । पूरा मंत्र होन नहिं पावा ॥
स्वर्ग विमान तुरतही आवा । चोर प्रान सुरलोक पठावा ॥

॥ प्रश्न तुलसी साहेब ॥

॥ दोहा ॥

तुलसी पूछै बात, धर्म यह विधि कस भई ।
जैन विधी कही झार, सो वृतंत पूछौं तुही ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी कहै सुनौ तुम भाई । धर्म आपना भाखि सुनाई ॥
ता मैं वहम एक मोहिं आवो । ताकी बिधि भिनि भाखि सुनावो
सेठ सुदरसन मंत्र सुनावा । सूली चोर स्वर्ग कस पावा ॥
अब तुम को बरतंत सुनाऊं । तुम्हरे सास्तर से दरसाऊँ ॥
ये पुरान मैं देखौ जाई । ता की बात कहौँ समझाई ॥
सेठ सुदरसन जाप सुनावा । ता का भर्म भेद मोहिं आवा ॥
तुम पुरान की भाखौ कहनी । सेठ एक रहे स्रावग जैनी ॥
ता की कथा कहौँ बिधि नाना । सो वृतंत विधि सुनियौ काना ॥
उन इक नेम जाप कर लीना । दीपक तेल रहै जाप यकीना ॥
दीपक तेल करै सोइ जापा । खुटै तेल तब सूझै आपा ॥
ऐसी कठिन ठान तेहि ठानी । जाप इष्ट दूजा नहिं मानी ॥
ता के घर इक नार सयानी । उन का इष्ट नेम सोइ जानी ॥
वा के पुत्र एक रहे भाई । ता कर ब्याह कीन्ह बहू आई ॥
सो अजान कछु मरम न जाना । तेल दिया तेहि देखि बिहाना ॥

बैठा ससुर जाप तेहि देखा। तेल खुटै तब डारै पेखा ॥
डारत तेल राति गइ बीती। वो अंजान कछु जानै न रीती ॥
प्यास माहिं उन प्रान गँवाया। मैंडक जनम जाइ जल पाया ॥
सासु रही बहू के ढिंग सोई। उन जानी बहू जागत होई ॥
यह बरतंत सत्त है भाई। सो पुरान मैं देखौ जाई ॥
ऐसी टेक जाप तिन कीन्हा। जनम जाइ मैंडक कौ लीन्हा ॥
सेठ सुदरसन मंत्र सुनावा। कैसे चोर स्वर्ग पहुँचावा ॥
ऐसी जाप टेक जिन कीन्हा। अंत जनम मैंडक कौ लीन्हा ॥
सो तुम हम को भेद बतावो। कैसे भई बहुरि समझावो ॥
कहै तुलसी धर्मा सुनु बाता। आगे कहौं सुनौ बिख्याता ॥
तुम्हरा सास्तर कहै बखानी। ये पुरान मैं देखौ बानी ॥
जबै सेठानी पानी जाई। मैंडक गगरी बैठा आई ॥
मैंडक अपने घर को लाई। पानी पनैड़े मैं लै जाई ॥
आदिहि नाथ समोसन भयऊ। सैन कराय दरस को गयऊ ॥
मैंडक हाथी पाँव कुचाना। भया देवता कहै पुराना ॥
देव भया कहौ कहँ कौ गइया। केते दिवस देव तन रहिया ॥
सेठ जीव पुनि कहाँ समाना। या कौ आगे करौ बखाना ॥

॥ सोरठा ॥

कहै तुलसी धर्मा सुनौ, लखि पुरान बिख्यान।
देव भोगि मृत लोक में, आये उन के प्रान ॥

॥ चौपाई ॥

देव माल पुनि जाय सुखाई। चारौं गति जिव जाइ समाई ॥
पुनिपुनि जीव कर्म बस रहिया। जाप प्रताप यही बिधि भइया ॥
आगे या को कहौ बखाना। सेठ जीव पुनि कहाँ समाना ॥
यह पुरान तुम्हरा बिधि गावै। येही मुक्ति भाव दरसावै ॥
कहौं धर्मा यह साँची बाता। तुम्हरे मत का कहा बिख्याता ॥

ऐसे स्वर्ग मुक्ति को भाखै। ये तो कर्म भोग बस राखै ॥
पुनिपुनि आवै पुनिपुनि जाई। बार बार भौ भटका खाई ॥
वा घर को है पंथ नियारा। खोजि जीव भौ उतरै पारा ॥
जो कोइ जिवत आदि घर पावै। सतगुरु पलक माहिँ दरसावै ॥
हिया खुलै नैनन से देखै। तुलसी सोई बात परेखै ॥
स्वर्ग नर्क तुम भाखौ भाई। यह तो झूठो मन नाहिँ आई ॥
वा घर जीव बतावै चैना। ता की तुलसी मानै बैना ॥
कर्म पलक में तोड़ि बिनासै। ऐसे सतगुरु का मत भासै ॥
धर्मा कहौ सेठ की भाई। सो जिव कहौ कहाँ भरमाई ॥
जप नौकार बिधी अस भाखो। या से परे काल की फाँसी ॥

॥ दोहा ॥

धर्मा यह बिधि योँ भई, मन में लेउ बिचार।
स्वर्ग नर्क और मुक्ति कहि, बाँधे कर्म करार ॥१॥
आगे आदि पुरान की, सुनौ साखि बिस्तार।
आदि नाथ केवलि कह्यो, जुगल्या धर्म बिचार ॥२॥
तुलसो कहै धर्मा सुनौ, जुगल्या धर्म बिचार।
कहो उन को किनने किया, सो बिधि कहौ सम्हार ॥३॥

॥ चौपाई ॥

प्रथम जुगल्या बिधि कहि भाखी। आदि पुरान बतावै साखी ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी कहै पुकार, कहौ जुगल्या कस भयौ।
उन तन कौन सँवार, कुलकर नभ कस कस कहै ॥

॥ उत्तर धर्मा ॥

॥ चौपाई ॥

सुनियौ तुलसीदास गुसाँई। कहि पुरान सोइ साखि सुनाई ॥
इनका करता बिधी न भाई। ऐसे सास्तर साखि बताई ॥
अंडा सृष्टी आदि अनादा। फूटै न बनै येही बिधि साधा ॥

॥ प्रश्न तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

बिन करता कौने बिधि भयेऊ। जुगल्या जन्म नाम कस कहेऊ॥
याकी भिनि भिनि चीन्ह चिन्हावौ। करता बिन कस कस बतलावौ॥

॥ उत्तर धर्मा ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी सुनौ समझ यह जाना। जस जस आदि पुरान बखाना॥
जुगल्या परे धर्म नहिं गावा। जो बूझा सो बरनि सुनावा॥

तुलसी साहिब का वाक्य कि जैन मत के अनुसार उतपत्ति जुगल्या और जगत की कैसे हुई

॥ चौपाई ॥

सुनु धर्मा उतपति बतलाऊँ। सार सवैया में समझाऊँ॥
जस जस भया जैन कै लेखा। भिनि भिनि भाखौं भेद बिबेका॥
धर्मा सुनौ कान दे भाई। जैन धर्म की आदि बताई॥

॥ सवैया—नभ रीति जैन मत ॥

जैन को जान कहौं मत छान, सो आदि बखान निरबान की बानी।
आदि पुरान कहौं जो प्रमान, सो ताके बयान मैं जैन की जानी॥
जुगल्या धर्म जो प्रथम कही, सोइ छींकत प्रान तजे नर नारी।
सोइ छींक से होइ कन्या सुत दोइ, सो ऐसी कहै बिधि बात बिचारी॥
अब पीछे केहि की साखि देऊँ, भये चौधा कुलकर तेहि कहाये।
धेनु जो काम कही कल्प बृच्छ, सो ताहि समय मैं रहे अस गाये॥
ताहि के माहिं रहे नभ राइ, सो साखि पुरान मैं भाखि सुनाये।
चौधा मैं एक रहे नभ नेक, सो रानी मुरादेबी नाम धराये॥
ता के भये सुत नाम ऋषब, सो जब से पाँच धनुष की काया।
ता ने कियो तप ध्यान निरबान, सो जाना जोई जा मैं मुक्ति को आया॥

आगे का भेद न जाने निखेद, सो खेद भये पुनि काल ने खाया।
मुक्ति भये जग जीव रहे, पुनि आतम अंड को खंड बताया।
सो यहि विधि आदि पुरान सही, सो कही जग जैन मती अस गाया॥
आँवले प्रमान जो अंड लखा, सो भखा तीनो लोक के जीव की जाती।
यहि विधि आदि पुरान कहै, सो देखि लई विधि भेद की वाती॥
केवलि ज्ञान कहैँ जो प्रमान, सो गुन गोंकार से सास्त्र बनाये।
गंद्रपसेन से वैन सुने, सो गुने मन माहिँ जो भाखि सुनाये॥
वोही पुरान करै जो प्रमान, सो देव ऋषभ ने थापन ठानी।
मंत्र नौकार दियौ येहि कार, सो अरिहंत सिद्ध की कीन्ह बखानी॥
अरियानं नाउँ उज्झानं भाउ, सो सरबइ साध सो लैाय लगाये।
पाँचोइ पद पैँतीसोइ अच्छर, सो सब जैन मती गति गाये॥
जोइ निरबान को काल बखान, सो केवली खाइ चौबीस नसाये।
वे जो दयाल बिधी विधि भिन्न, सो चिन्ह चौबीसोइ नेक न पाये॥
ये विधि भेद कहै तुलसी, तत आतम जोग तीथंकर गाये।
आगे का अंत कहैँ सब संत, सो पंथ मते मत नेक न पाये॥

॥ सवैया २ ॥

कोइ स्रावग होइ चरचा मुख सोइ, तौ भाखैँ विधी जाकौ भेद बतावै।
तुम्हरे मत ज्ञान का ध्यान कहैाँ, जो पुरान की पूछैाँ सो भाखि सुनावै॥
जुगल्या जोइ धर्म प्रथम्म कहै, तन छूटि मरै पुनि कहाँ समावै।
नाक की नोक से छींक कही, सुत कन्या सरीर को कैान बनावै॥
जुगल्या जोइ नाम कह्यौ केहि काम, सो केहि की जुबान से नाम धरावै।
तब केवलि ज्ञान नहीं भगवान, न भाखो पुरान नाम कस पावै॥
औरहु एक कहैा तुम नेक, सो देइ कुलकर को कैान बनावा।
तिधि थापन नाहिँ बाम्हन जाइ, न पुरान सुनाइ तैा कुल कस पावा॥
कहैँ नभराइ सुरादेवी ताहि, सो ऋषभ बनाइ कहैा को कहावा।
कर्महि काटि ऋषभ जो गये, सो निरबान ठिकान कहैा केहि ठाँवा॥

आँवले प्रमान जो अंड कह्यौ, सो हथेली के बीच मैँ कैसे दिखावा।
केवलि कार कहौ ओंकार, सो सीस के पार कौने बिधि आवा॥
टाटक ध्यान कहा जो बखान, सो कहौ मन को केहि राह चढ़ावा।
या की बिधी बिधि बात कहै, सुन स्रावग नाम जो ता को कहावा॥
पाहन पूजे से सूझा नहीं, हिये नैन से जानि निहारि कै पावै।
नौकार की जाप करै नित आप, सो ताप तीनोँ तन साफ सतावै॥
मुए करै आस स्वर्ग की बास, परै जम फाँस को भेद न पावै।
तुलसी तत माहिँ निहारि पकै, सो लखै बिधि आतम माहिँ समावै॥

॥ सवैया ३ ॥

तुलसी जो बखान कहै सुनि कान, सो भूले पुरान मेँ भेद न पायौ।
पहिले भयौ नभ नाम अकास, सो बास कियौ तन आस मैँ आयौ॥
सरीर मेँ जोइ मुराइ रह्यौ, मुरादेवी ता को नाम बतायौ।
जो ये मन जब ऋषभ भयौ, सो रह्यो रस धाम ऋषभ्ब कहायौ॥
आगे सुनौ सोइ बात गुनौ, जुगल्या मन इच्छा से द्वैत मेँ आयौ।
छौंक जो नाक मेँ स्वाँस करै, सो मरै जो अकास को तेज नसायौ॥
जब नासिका स्वाँस मेँ बास भयो, सो कह्यौ मन इच्छा के पुत्र बनायौ।
मन इच्छा मिलि कुल भास भई, सो गुन इंद्री कुल प्रकृति कहायौ॥
ता को बैराट कहैँ भगवान, चौथा जम कुलकर बास बसायौ।
काल कौ बृच्छ सरीर कह्यो, सो कामना काम जो धेनु सुनायौ॥
आपने आप कियौ जग थाप, सो मन निरगुन नौकार बतायौ।
जगत भुलाइ जो धर्म चलाइ, सो टेक बँधे चारौ गत्ति मैँ आयौ॥
जगत जहान कौ भर्म दियौ, सोइ कर्म बताइ जो आपहु आयौ।
येही बिधि जगत कौ नास कियौ, पुनि आपनी राह कौ भेद न गायौ॥
इंद्री बस कीन्ह ऋषभ देव चीन्ह, सो टाटक गुन मैँ ध्यान लगायौ।
सुनि नासिका ध्यान कियौ जो प्रमान, सो जोग अरंभ से आतम पायौ॥

येहि कार के लार गुंकार भयौ, त्रिकुटी मध बीच अवाज सो आयौ।
येहि तत्त में मन जो लाग रहैा, सो अँवले प्रमानै अंड कहायौ ॥
अंड के बीच से जीव सही, सो केहि विधि मुक्ति की बात को गायौ।
मुक्ति भई भैा खानि मई, पुनि मुक्ति को भोग के जीव कहायौ।
येहि बिधि तोलि कहै तुलसी, सो आगे कैा भेद उनहुँ नहिँ पायौ॥

॥ सवैया ४ ॥

स्रावग ख्यात कहैाँ जो बिख्यात, सो आदि अनादि की बात सुनाऊँ।
जुगल्या जोइ धर्म न कुलकर कर्म, ऋषब्ब न नभ्भ मुरादेवी नाऊँ॥
पानी न पवन जमीं नहिँ भवन, सो अगिनि अकास न तत्त न ठाऊँ।
चंदा न सूर न आतम मूर, नहीं मन कूर जा कैा भेद बताऊँ॥
जब पिंड न अंड नहीं ब्रह्मंड, सो कहे नव खंड बने न बिसाऊ।
जबै सतपुरुष रहे सुख धाम, सो वा मैँ बसैँ सतलोक कहायौ॥
ता ने कियौ सब ठाट बैराट, सो सोला निरबान को ता ने बनायौ
सोला मैँ एक को दीन्ह निकार, सोई निराकार ने जगत भुलायौ॥
पुरुष के अंस से जोति भई, सो वही निराकार की कहियै लुगाई।
ता के पुत्र भये पुनि तीन, सो ब्रम्हा बिस्नु महेस कहाई॥
कुंभ निरबान के अंग से जान, लिये पाँचौ तत्त बैराट बनाई।
काल निरबान जो ठाट कियौ, सो बैराट मैँ जोति और काल समाई॥
ता कैा कहै भगवान अज्ञान, सो जाही ने जीव चराचर खाई।
सो ताही को पूजि चलै नर चालि, सो काल निरबान ने जाल बिछाई॥
अंड के पार कह्यो नहिँ सार, सो जार पसार रहे गति माईँ।
मुक्ति बताय दई सो कही, बड़े भाग भये कहि भाखि सुनाई॥
औरहु फंद कहैाँ दुख दंद, सो अंधेइ जीव को मुक्ति बताई।
मुक्ति भये जग जीव रहे, बहु पंचम काल मैँ दीन्ह उड़ाई॥
ये सब काल निरबान की जाल, सो जीव को डालि कै काल चबाई
सास्तर धान किये जो पुरान, सो धर्म की टेक मेँ जीव बुड़ाई।
तुलसी बिधि बात कहैाँ जो धनी, सो धनी को भुलाइ भ्रमाइ छिपाई॥

॥ सवैया ५ ॥

तुलसी नर जीव निरबान कहूँ, पति पार पिया घर आदि लखाऊँ।
थिर थोव सुरति से तत्त लखै, सो पकै नभ नाल कँवल के ठाऊँ॥
तेहि के मद्ध मिलै दल द्वार, सो पार चढ़ै दल आठ में आई।
जहँ जोति कैा बास अकास के पास, सो तत्त के पार से सार दिखाई
पुनि स्रुति सैल से खेल चढ़ै, नव लाख कँवल के दल के माईँ।
ता मैँ लखै रबि चंद की संध, सो तारा अनेक अकास सुहाई॥
पुनि ता के परे दल सहस कँवल, सो जल मैँ जानि निरबान के ठाईँ।
ता के परे जल कोर के घोर, सो अविगति काल ने जाल बिछाई॥
ता पै फटिक सिला पै मिला, नभ स्याम कैा बास बसै येहि माईँ।
आगे चली सुनि साखि अली, सो आतम ताल के तट मैँ आई॥
ता के परे दल दोइ कँवल, सो सुन्न प्रमातम बास कराई।
ता के परे सत सब्द का बास, सो चढ़ी सत सूरति सब्द मैँ आई॥
ता के परे दल चारि कँवल, सो साहिब सत्त पुरुष कहलाई।
ता के आगे की गैल की सैल कहैाँ, खिरकी बिन द्वार मैँ पार है भाई॥
जहाँ निःअच्छर नाम के पार, सो सार अनाम का धाम न ठाँई।
सूरति सैन की चैन कहैाँ, पल माहिँ पिया पद आवै न जाई॥
सुन जोग न ज्ञान बैराग नहीँ, तप संजम ध्यान की कैान चलाई।
सूरति सैल करै असमान, सो फोड़ निसान को पार चढ़ाई॥
जो कहैाँ मत संत कैा अंत नहीँ, सो वही घर संत बसैँ नित जाईं।
जहँ काल निरबान की गम्म नहीँ, तहँ केवली काल परे मुख जाई।
कोइ सूरति राह चढ़ै सोइ संत, सो पंथ पिया तुलसी कैा कहाई॥

॥ सोरठा ॥

धर्मा धर्म बिचार, जैन सार सगरी कह्यौ।
कुलकर जुगल्या लार, नभ राजा और ऋषब सब ॥१॥
सार सवैया माइँ, गाइ भेद बिधि सब कही।
जस जस जैन जनाइ, जो उत्पति सुनि सब भई ॥२॥

सास्तर संथ बिचार, बिधि पुरान मत देखि कै।
धर्म जैन जस कार, पुनि अगार तुलसी कही ॥३॥

॥ उत्तर धर्मा ॥

॥ चौपाई ॥

धर्मा सुनि मन बात बिचारी। तुलसी कही जैन से न्यारी ॥
संत मता है अगम अपारा। स्रावग जैन धर्म से न्यारा ॥
हम ने जुगल्या प्रथम बताया। ता के परे भेद नहिं पाया ॥
और कुलकर नभ राइ बखाना। हम आगे का मर्म न जाना ॥

॥ प्रश्न तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

जुगल्या प्रथमहिं कौन बनावा। कहौ उन तन कैसे कर पावा ॥
तन बिन देह कौन बिधि आवा। ता कौ पहिले कौन बनावा ॥
तन तत पाँच कहाँ से अइया। सो धर्मा बिधि बरनि सुनइया ॥
पाँच तत्त बिन कैसे कहिया। तत्त बिना कैसे बिधि भइया ॥
पिंड ब्रह्मंड धरती आकासा। केहि बिधि भया कहौ परकासा
पाँच तत्त जब कहँ से आये। कौन जुगल्या जबै बनाये ॥
कर्म धर्म कछु हते न भाई। तब ये जीव कहाँ से आई ॥
सो घर हम से भाखि सुनावै। तब तुलसी के मन मैं आवै ॥
पद निरबान कहौ तेहि भाई। ता की बिधि कहौ कौन बनाई ॥
या की बिधी कहौ समझाई। पद निरबान कहाँ से आई ॥
नहिं निरबान हता जब अंडा। तब को हता परे ब्रह्मंडा ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी मानै जान, या के आगे भिन्नि कहौ।
हता नहीं निरबान, सो बिधि बरनि सुनाइये ॥

॥ चौपाई ॥

कहै तुलसी धर्मा सुनु बाता । आगे कहौं बिधी बिख्याता ॥
छींक होत उपजे सुत नारी । कन्या पुत्र कहौ बिधि सारी ॥
कहँ से आये कहाँ पुनि गइया । इनकी रचना केहि बिधि भइया

॥ सोरठा ॥

कहौ धर्मा समझाइ, या के आगे को हता ।
उन तन कौन बनाइ, भाखौ या की आदि सब ॥

॥ चौपाई ॥

और आगे बिधि पूछौं भाई । पूजा तुम ने भाखि सुनाई ॥
अष्टक जल चंदन तुम कहिया । और नैवेद्य पुष्प बिधि लइया ॥
केवली केवल की कही साखी । कहौ का की पूजन उन भाखी ॥
तब केवली प्रतच्छ रहाई । मूरति बिधि जब हती न भाई ॥
उन पूजा कहौ किन की कहिया । मूरति खोज तबै नहिं रहिया ॥
तब पूजा कहौ केहि की भाखी । या कौ भेद बतावौ साखी ॥
नायक[1] मूल बंदना कीन्हा । तुम पाहन पूजा कस लीन्हा ॥
उन कछु और भेद कहि भाखी । सो तुम्हरी सूझा नहिं आँखी ॥
कही धर ध्यान देख उन चाखा । तुम पाहन पूजा कस राखा ॥
अपने घर का भेद न जानी । औरन से कहौ ज्ञान बखानी ॥

॥ सोरठा ॥

धर्मा कहौ बखान, पाहन पूजा कस करौ ।
नायक[1] मूल विधान, ता की पूजा बिधि कहौ ॥

॥ चौपाई ॥

तप संजम उपवास बताई । जो त्यागै सो पावै भाई ॥
तप कर राज मिलै पुनि जाई । राज भोग पुनि नर्क समाई ॥
कष्ट फल पावै पुनि भोगा । परै चारि गति उपजै सोगा ॥
इंद्री दवन उपास कराई । बार बार भौसागर आई ॥

---

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में "नाइ के" है ।

इंद्री भोग करै पुनि सोई । अस बिधि इंद्री संजम होई ॥
जीवन मुक्ति पलक मैँ पावै। सो संजम हमरे मन भावै ॥
जीवत मुक्ति देखिये आँखी। ऐसी बिधि कोइ कहिये भाखी ॥
एक पहर मैँ मुक्ति बतावै। सो सतगुरु मोरे मन भावै ॥
आदि और अंत पलक मैँ पावै। सारा भेद नजर मैँ आवै ॥
जब देखैँ हम अपने नैना । तब मानैँ सतगुरु के बैना ॥
कष्ट करै तप बन को जावै। मरे गये का खोज बतावै ॥
ऐसी झूठ बात नहिँ मानैँ । देखा परै सुनै जो कानै ॥

॥ दोहा ॥

तुलसी धर्मा सोँ कहो, कर्मा सुनियौ बात ।
दोइ मिलि भेद बतायऊ, कर्मा धर्मा साथ ॥

॥ चैापाई ॥

कर्मा धर्मा भेद बताई । ये बिधि तुम्हरे सास्तर गाई ।
या से हम कछु भिनि दरसाई। ता का भेद कहैा ,समझाई ॥
तुम्हरे मत की पूछौँ बाता । ता की प्रथम करैा बिख्याता ॥
ये बिधि भिन्न भाँति कहि भाखी। कर्मा कहैा याहि की साखी॥
या की बिधी बिधी बतलावै । सो सब भेद भाव दरसावै॥
हम जोइ पूछि पूछि बिधि बानी। सो सो सब सब कहैा बखानी॥

॥ उत्तर धर्मा और कर्मा ॥

॥ चौपाई ॥

कर्मा धर्मा योँ कहि बोले। भेद हमार सबै तुम खोले ॥
सास्तर हमरे जो बिधि गाई। सो तुलसी तुम भाखि सुनाई ॥
या सोँ भिनि हम कहा बतावा। भिन्न भिन्न सब तुम दरसावा ॥
कर्मा धर्मा ये बिधि बोला । बुद्धि हमारि खाइ झकझोला ॥
तुलसी तुम तैा अगम बखाना। नहिँ सास्तर नहिँ जानै पुराना ॥
पुनि इक भर्म भाव दिल आई। स्वामी तुलसी भाखि सुनाई ॥

तुम तौ मुक्ति आज दरसावा। या कौ भर्म बहुत मोहिं आवा ॥
और सबै भाखी तुम खासी। पुनि इतनी मोरे नहिं भासी ॥
मुक्ति गती तुम आज बतावा। सो नहिं जैन मते में गावा ॥
चौथे काल मुक्ति बतलावे। पंचम काल जैन नहिं गावे ॥
स्वामी तुलसी यह बिधि कहिये। ता में मुक्ति आज बिधि पइये ॥
ऐसी कौन जो बिधी कराई। ता सोँ आज मुक्ति गति पाई ॥
जो जो तुम ने भेद बखाना। सो तो हम सुपने नहिं जाना ॥
जो जो सास्तर कहै पुराना। सो तुम मुख से करी बखाना ॥
सो साँची सब मन में आई। चित में खूब खूब ठहराई ॥
तुम ने आगे भेद बखाना। हम पुनि परे कछू नहिं जाना ॥
ये तौ सत्त सत्त कहि भाखो। मुक्ति आज होइ कहिये साखो ॥
हम तुम्हरे चरनन बलिहारी। कहा धर्मा हम सरन तुम्हारी ॥
हम अजान कछु बूझि न बाता। तुम कही आदि अंत बिख्याता ॥
मुक्ति भाव मो को दरसावौ। मोरे दिल का भर्म नसावौ ॥

॥ सोरठा ॥

धर्मा अस बिधि बोल, स्वामी दीन दया करौ।
मुक्ति बिधी गति खोल, भाखि अगम गम सब कहौ ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी कहत बुझाइ, कर्मा धर्मा सब सुनौ।
आगे कहौं लखाइ, मुक्ति बिधी दरसाइ कै ॥

॥ चौपाई ॥

कहै तुलसी सुन अगम सँदेसा। आदि अंत दरसाऔं देसा ॥
प्रथम रहे इक पुरुष अनामा। चौथे पद के पार ठिकाना ॥
जब नहिं रहे गगन आकासा। चंदा सूरज नहिं परकासा ॥
धरती अगिन न पवन निवासा। पानी जगत रहे नहिं बासा ॥

पिंड ब्रह्मंड लोक नहिँ होई । और अलोक विधी नहिँ सोई ॥
चौथा पद रचना नहिँ ठानी । ता के आगे पुरुष अनामी ॥
तासु लहर सत साहिब भयेऊ । सत्त नाम संतन ने कहेऊ ॥
या की विधी विधी गति गाई । बिन सतसंग नहीँ दरसाई ॥
होइ सतसंग कहैँ सब लेखा । खुले नैन हिरदे से देखा ॥
तीनौँ लोक पार है चौथा । ता के परे अनामी सो था ॥
तासु लहर उपजा सत नामा । चौथे पद की रचना ठाना ॥
ता से भये सोला निरबाना । जिन मैँ एक को करौँ बखाना ॥
सोला निरगुन है निरबानी । निराकार जाही को जानी ॥
जोति निरंजन सोई कहाई । ता को संत काल गोहराई ॥
सास्तर नाम कहै निरबाना । सोई जीव को काल निदाना ॥
जा ने जग जम जाल पसारा । जगत थापना कीन्ह विचारा ॥
दस औतार जाहि के चीन्हो । ब्रह्मा विस्नु महेसा तीनो ॥
जिन ने भाखा बेद बिचारा । जग मैँ फैला काल पसारा ॥
पूजा पत्री नेम अचारा । देवल पूजा विधी सँवारा ॥
संजम और उपवास बतावा । ता मैँ सकल जीव उरझावा ॥
ये निरबान काम अस कीन्हा । मुक्ति राह का भेद न दीन्हा ॥
मुक्ति काल चौथे बतलाई । पंचम काल जो दीन्ह छिपाई ॥
सास्तर अस पुनि कीन्ह पुराना । धर्म चलाइ जीव उरझाना ॥
ये सब भेद कहा हम जानी । यह विधि जैन धर्म निरबानी ॥
सोई काल सब जाल बिछाई । सत्त पुरुष की राह न पाई ॥
सत्त पुरुष का भेद नियारा । जहँवाँ संत करैँ दरबारा ॥
संत सरन जो प्रानी जावै । ता को संत राह बतलावै ॥
धर्मा कर्मा चक्कत भयेऊ । ये तो अगम गाइ गति कहेऊ ॥
बिन सतसंगति पावै नाहीँ । तुलसी कहै सबै गोहराई ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी तत्त बिचार, संत भेद न्यारा कहैं।
सो पहुँचै वहि द्वार, अगम सार तेहि लखि परै ॥१॥
मुक्ति कहैं निरआर, संत चरन लागी रहै।
फिरै संत की लार, करै संत निरबार जेहि ॥२॥

॥ चौपाई ॥

संत सुरति से चढ़ैं अकासा। गगन फोड़ि वो करैं निवासा॥
पाँच तत्त का वहाँ न बासा। चंद सूर जल पवन न स्वाँसा॥
पार परे सत पुरुष अकेला। संत सुरति नित करती सैला॥
जो कोइ दीन लीन होइ आवै। ता को सतगुरु राह बतावै॥

॥ दोहा ॥

मुक्ति कहैं समझाइ, संत चरन डोलत फिरैं।
सो आदरैं न ताइ, पाइ लगन लागी रहै॥

कहै तुलसी सुन मुक्ति बखाना। धर्मा कर्मा सुनियौ काना॥
मुक्ति संत की निस दिन दासी। परी रहै चरनन के पासी॥
संत जिवत दरसावैं जाई। सतसँग करै बहुत लौ लाई॥
तुम कहौ पंचम काल न पावै। चौथे काल मुक्ति को जावै॥
अब तुम सुनियौ चित्त लगाई। तुम्हरे सास्तर ग्रंथ लखाई॥
महावीर तीर्थंकर कहिया। बरस अठारासै तेहि भइया॥
जेहि तुम कहौ मुक्ति को गयऊ। मुक्ति पाइ तीर्थंकर भयऊ॥
जेहि तुम कहौ मुक्ति गति गाई। पंचम काल मुक्ति कस पाई॥
तुम कहौ आज मुक्ति नहिं जाई। तौ उन ने कहौ कहँ से पाई॥
सो उन को तीर्थंकर कहिया। पंचम काल मुक्ति कस भइया॥
या की बिधि मन माहीं पेखो। सास्तर ग्रंथ जाइ कै देखौ॥
अपनी भूल न बूझौ भाई। मुक्ति भई सो कहौ सुनाई॥
आज मुक्ति ततकालहि पावै। संत चरन में जो लौ लावै॥

॥ शरण में आना कर्मा और धर्मा का ॥

॥ छंद ॥

तुलसी यह भाखा सुनि सब साखा, कर्मा धर्मा दीन भये ।
इन कही बुझाई सब बिधि गाई, भिन्न भिन्न दरसाइ दये ॥१॥
हमरा मत भाखा दीन्ही साखा, सास्तर बिधि बिधि साखि दई ।
हमरे मन मानी बहु बिधि जानी, सत्त सत्त सब तत्त कहो ॥२॥
झूठा जंजाला सब बिधि काला, हम अपने मन जानि लई ।
तुलसी तुम स्वामी सत्त बखानी, धर्मा कर्मा चरन लई ॥३॥
चरनन लिपटाने तुम को जाने, दीन जानि अब सरन लई ।
स्वामी मति बूझा आँखी सूझा, पूजा दूजा दूर भई ॥४॥
तुलसी प्रतिपाला होउ दयाला, करौ निहाला सरन लई ।
प्रभु दाया कीजै सरनै लीजै, दीजै चरन मति नाहिं बही ॥५॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी देखि बिहाल, तुरत निहाल ता पर भये ।
सुरति सैल बतलाइ, तब जिव की संसय गई ॥१॥
धर्मा कर्मा जाइ, तुरत सीस चरनन धरे ।
लीन्ही अज्ञा पाइ, उठे धाइ घर को चले ॥२॥

करिया नामी जैन स्त्री का तुलसी साहिब के दर्शन को आना और शरण लेना ।

॥ चौपाई ॥

धर्मा कर्मा मारग जाई । कासी नगर लौटि कै आई ॥
अपना अपना मारग लीन्हा । अपने भवन गवन जिन कीन्हा ॥
कर्मा घर इक नारि सयानी । पूजै साध महातम जानी ॥
जैन धर्म में बहुत मलीना । सुनि कर बात कान उन दीन्हा ॥
भोर भये देखौं कब चरना । दीन होइ जाऔं उन सरना ॥

करिया नाम नारि कर होई । कर्मा कही दीन जिन रोई ॥
बिरह माहिं जिन राति बिताई । भोर भये उठि कै चल धाई ॥
सखि सोइ साथ जात को लीन्ही । पाँच नारि मिलि चलीं अधीनी ॥
पूछत पूछत मारग जाई । पाँच पचोस मिले मग माईं ॥
कोइ न सुनै बात दै काना । पूछै तुलसी केर ठिकाना ॥
पूछत पूछत हिरदे भेटी । जिन पुनि जाइ बताई कूटी ॥
कुटी आइ चरनन उन लीन्हा । दीन डंडवत बिनती कीन्हा ॥
मैं तो सरन तुम्हारे स्वामी । चरन देहु मोहिं अंतरजामी ॥

॥ दोहा ॥

नारि दीन तुलसी लखी, बोले बचन रसाल ।
हीन दीन जेहि देखि कर, दरसन दिये विसाल ॥

॥ चौपाई ॥

करिया देखि तुलसी अस कहिया । कहौ कहाँ सोँ आवन भइया ॥
पुरुष नाम तेहि सखी बताई । कर्मा नारि दरस को आई ॥
तुलसी दीन हीन जेहि जानी । करिया पूछ बचन मन मानी ॥
हाथ जोरि करिया कहै स्वामी । जग संसार भाव भ्रम खानी ॥
जीव गती की राह बतावौ । जग मैं आइ महा दुख पायौ ॥
तुलसी कहै जगत सुख भारी । काहे उदास भई तुम नारी ॥
कन्या पुत्र सकल परिवारा । सुख संपति भोगो तुम सारा ॥
करिया कहै इक अरज हमारी । या जग सँग संसार दुखारी ॥
तन बिनसै जैसे जल ओरा[1] । जग जम जाल करत है जोरा ॥
तन सराय दिन चारि बसेरा । या मैं कोऊ न काहू केरा ॥
धन संपति दिन चारि विलासा । पुनि तन छूटि झूठ सब आसा ॥
ऐसे या जग का ब्यौहारा । जनम जात जूवा जस हारा ॥
जैसे रंग पतंग उड़ाई । हवा जात तन जैसे जाई ॥

---

(१) ओला ।

ये तन मन दिन चारि निवासा । छूटै तन जमपुर मैँ बासा ॥
भाई बंद सकल परिवारा । त्रिया पुत्र सब झूठ पसारा ॥
या के सँग बूड़त जग जाना । छूटै तन फिर नर्क समाना ॥
ये जग संग रंग भँग जाना । आदि अंत नहिँ मिलै ठिकाना ॥
या से साध संग सुखकारी । ऐसे ज्वाब दीन्ह तेहि नारी ॥

॥ दोहा ॥

करिया कहै स्वामी सुनो, झूठा जगत पसार ।
लोभ मोह मद फँसि रहे, क्यौँ कर उतरै पार ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी करिया बहुत भुलाई । ता के मन मैँ एक न आई ॥
पहिले जगत भाव दरसावा । ता के मनहिँ झूठ सब भावा ॥
ऐसी नारि पोढ़ जब जानो । मन तेहि केर मरम पहिचानी ॥
बुद्धि सुद्ध सीतल चित गाता । हित कर बचन प्रीति की बाता ॥
बिरह भाव बिधि हिरदे भीनी । ऐसो नारि पार रस चीन्ही ॥
ऐसा तोल बोल जब जाना । तब तेहि सगरा भेद बखाना ॥
गुप्त भेद सत सत दरसावा । ता कर हिया उमँगि अस आवा ॥
दीन्ही सुरति संध तेहि हाथा । अज्ञा ले पुनि नायो माथा ॥
संग सखी सब अचरज लाईँ । कैान बस्तु येहि कान सुनाई ॥
घट का चार बसेरा पाई । पुनि सिर नाय पाँय घर आई ॥
कर्मा नारि पूछ बिख्याता । कहो कहाँ गइ कैाने साथा ॥
तब करिया बरतंत सुनावा । तुलसी बरनन बिधी बतावा ॥
सुनि कर्मा मन भयो अनंदा । अब तोर छूट काल कर फंदा ॥
करिया संग सखी इक जैनी । ता कर नाम रहै पुनि सैनी ॥
तुलसी दरस गई दरबारा । पुरुष भेद सुनि पायो सारा ॥
सुना पुरुष तेहि भर्म समाना । नारि गई घर भया बिराना ॥
पुरुष नाम है कालू जेही । नग्र लोग कहि बरजत तेही ॥

कालू नारि धाइ धमकाई। ये फ़कीर ढिंग जान न पाई॥
कालू कहै मोर दुखदाई। जक्त लोग थूकै मुख माई॥
मोरी पाग आव[1] तैं खोवा। अस कहि धाइ धाइ कै रोवा॥
पाड़ पड़ोसन अस समझावै। अब यह कहूँ जान नहिं पावै॥
सब घर टेरि टेरि कह दीन्हा। घर बाहर इन जान न दीन्हा॥
निकर सकै नहिं बाहर जाई। घर मैं बैठि हिये दुख पाई॥
तुलसी ज्ञान तेहि हिये समावा। कर तुलसी तुलसी गोहरावा॥
पुनि तेहि नारि कार एक कीन्हा। हेमा कहार बुलाइ उन लीन्हा॥
तेहि सन कहि तुलसी बिधि सारी। दरसन करौं स्वामी दरबारी॥
वा को दिये टका दुइ चारी। गये तुलसी जहँ कुटी सँवारी॥
हिरदे अहीर मिल्या तेही बाटी। हेमा ताहि भेंटि चढ़ि घाटी॥
जिन सैनी बरतंत सुनाया। हिरदे चल ता के घर आया॥
सैनी हिरदे से लै लाई। स्वामि कुटी मोहिं देव बताई॥
ता के जाइ मैं परसौं पाँई। दरसन मिलै और नहिं चाही॥

॥ सोरठा ॥

हिरदे कहै सुन बात, सैनी साबित धीर घर।
ये सब जगत लबार, या से बच करि चालिये॥

॥ दोहा ॥

सैनी मन धीरज नहीं, बिरह बिथा की लार।
सार भेद मो से कहौ, तब दिल समझि सिहार॥१॥
हिरदे कहै सैनी सुनौ, सूरति देउँ लखाइ।
लै लगाइ ऊपर चढ़ौ, निज घर अपना पाइ॥२॥

॥ चौपाई ॥

हिरदे तेहि को सुरति लखाई। पुनि उठि कै अपने घर आई॥
तुलसी से सब कथा सुनाई। सुनि तुलसी कै मन सुख पाई॥

---

(१) आबरू।

एक दिवस ऐसी बिधि भयऊ । सैनी करिया के ढिंग गयऊ ॥
करिया ने अस बचन उचारा । तुलसी पै चलिहैं दोउ लारा ॥
प्रात राति चलिहैं दोउ संगा । तैं अपना चित करौ न भंगा ॥
समझ बूझ अपने घर आई । चलने की बिधि मति ठहराई ॥
निस पुनि बीत गई अधराती । पुनि दोउ उठि चालीं सँग साथी ॥
पहुँचीं तहाँ कुटी निज साजा । तुलसी तुलसी करै अवाजा ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी पूछै बात, अर्ध राति कस आइया ।
करिया कहि बिख्यात, सैनी के सँग मैं चली ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी कहै सुनौ तुम बाता । कस आई तुम आधी राता ॥
करिया सैनी कहै कर जोरा । तुम्हरे दरसन को मन दौरा ॥
अब इक अरज सुनौ हो स्वामी । तुम मोहिं दीन्ह सुरति सहदानी ॥
सुरति सैल हम निस दिन पाला । सो तुम सुनियो दीनदयाला ॥
दृग द्वारे दीसै इक खिरकी । ता मैं होइ सुरति मोरि सरकी ॥
चढ़ि गइ चटक जाइ वहि द्वारा । फटिक सिला के होगइ पारा ॥
वहँ जो कौतुक देखा जाई । सो स्वामी सब भाखि सुनाई ॥
तहँवाँ लोक अलोक समाना । ता का कहिये कैान बिधाना ॥
ता के परे अधर रस देखा । नहिं तहँ लोक अलोक अलेखा ॥
जो निज नैन निरखि कै जानी । मुक्ती भरै वहाँ कैा पानी ॥
अस अस कहत रात गइ बीती । मन परतीत काल सोँ जीती ॥
भोर भयो जब आज्ञा लीन्ही । सूरति उठी गवन तब कीन्ही ॥
करिया सैनी चरन पखारी । आज्ञा लेकर भवन सिधारी ॥

॥ सोरठा ॥

गईं भवन के माहिं, तुलसी सब्द निरखत चलै ।
उठै घोर घर माहिं, ता मैं निस दिन बसि रहै ॥

॥ चौपाई ॥

करिया सैनी घरहि सिधाईं । अपने अपने मंदिर आईं ॥
निस दिन उठै गगन घनघोरा । ता मैं अटकि रहै मन मोरा ॥
कर्मा धर्मा रहे पुनि दोई । भोर भये उठि पहुँचे सोई ॥
तीजे सेख तकी उठि धाये । तीनौं मिलि तुलसी पै आये ॥
बैठे भेद भाव सब चीन्हा । तीनौं बात आपनो कीन्हा ॥
धर्मा कर्मा भेद बतावा । निज निरबान भेद हम पावा ॥
सो निरबान पार इक द्वारा । निरखा फटिक सिला के पारा ॥
जहँवाँ देखा पुरुष नियारा । ता की सोभा अगम अपारा ॥
ता का भेद निरबान न पावै । नैन सोँ देखि नजर मैं आवै ॥
कर्मा धर्मा बोले बोली । गुप्त राखि परगट नहिं खोली ॥
दोउ मिलि भाखी अस अस बाता । तुलसी समझि लीन्ह बिख्याता ॥
सेख तकी उठि कै तब बोला । अपनी बिधी बात सब खोला ॥
खुदावंद इक अरज हमारी । मैं मुरीद मुरसिद की लारी ॥
फजल नज़र मेरे पर कीजै । मेरी अरज चित्त मैं दीजै ॥
बंदे ने बकसीसी पाई । सो हजरत मैं कहौं सुनाई ॥
एक रोज फजल अस कीदा । रूह चढ़ गई अगम के दीदा ॥
चौथा तबक देख वहँ जाजा । जहाँ नबी की उठै अवाजा ॥
रूह दौड़ पट अबरा तोड़ा । चौथा तबक रूह से फोड़ा ॥
लै लगि जाइ लाह के माईं । साहिब रब्ब बसै तेहि ठाँईं ॥
चूँ बेचूँ बेज़वाबी साँईं । वो साहिब दिल अंदर पाई ॥
खुद खुदाइ वो मालिक प्यारा । मुहम्मद खुदा दोऊ से न्यारा ॥
अल्ला नबी रसूल न जाना । चौथा तबक से अधर ठिकाना ॥

॥ सोरठा ॥

तकी तका निज खेल, मुरसिद तुलसी सोँ कहै ।
यहि बिधि कीन्ही सैल, सो अदबुद अंदर लखा ॥

॥ चौपाई ॥

कहै तकी सुन मुरसिद प्यारे । मिहर फजल से जाइ निहारे ॥
हर दम रूह लहर लहराई । बिरह भाव हर वक्त सताई ॥
रूह लिपट लिपट तेहि बूझै । साम सुबह कुछ और न सूझै ॥
दम दम बिरह लहर अकुलानी । जेहि बिधि मीन भुलानी पानी ॥
अस्त रवी जस कँवल बँधाना । चंदा अस्त कमोदनि जाना ॥
चंदा अस्त बीत जब जाई । तब वा को कहँ बिरह समाई ॥
ये जहान खिलकत है अंधा । बिरह भाव बूझै कोइ बंदा ॥

॥ सोरठा ॥

कमोदनी बिलखाइ, चंद अस्त आसिक गये ।
बिलखै बिरह बेहाल, चंद देखि निस हरखही ॥

॥ चौपाई ॥

सेख तकी दिल बिरह समानी । आवै न बात नैन बहै पानी ॥
दम दम बिकल खुदाइ पुकारी । तन मन सुध बुध सकल बिसारी ॥

॥ शेर ॥

बेहोशिये आदम से, वह ख्याल जुदा है ।
बाहर जो है मुहम्मद, अंतर में खुदा है ॥

॥ सदा[१] ॥

ऐ बेहोश प्यारे तैं यार बिसारा ।
खिलक़त का खेल सबै झूठ पसारा ॥ १ ॥
इक पल में फ़ना होत देख जक्त असारा ।
इन नैनों से देख तेरा कौन है यारा ॥ २ ॥
अपनी तू आदि देख कहँ से आया ।
उस यार को बिसार के तैं कहँ को लाया ॥ ३ ॥
हम ने दिल बीच यार अंदर पाया ।
उस बिरहिन के तन में रोम रोम में छाया ॥ ४ ॥

---

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में यह सदा नहीं है ।

वो मरती बेहाल पिया पिया पुकारै।
तन मन में नहिं होश नहीं बदन निहारै ॥ ५ ॥
ऐसी बेहोश सहै सूल कटारी।
जैसे तन बीच सेल तेगा मारी ॥ ६ ॥
ऐसी बिरहिन के बीच बिरह सँवारी।
सोई बिरहिन तो लगै पिउ को प्यारी ॥ ७ ॥
जा का यह हाल सोई अधर सिधारी।
तुलसी सो नारि भई जग से न्यारी ॥ ८ ॥

॥ ग़ज़ल १ ॥

अरे ऐ तक़ी तकते रहो, मुर्शिद ने दस्त पंजा दिया।
बेहोश बिरह बिरहिन लिया, पिय पीर की बातैं कहो ॥१॥
अरे ऐ शिताबी आ पिया, बिरहा सरप मुझ को डसा।
निसरै न चंदा जाय के, सूझा नहीं नैनन किया ॥२॥
चंदा बेदरदी तैं हुआ, दरदी कमोदिन क्या किया।
हर दम बिरह में हूँ बिकल, चंदा बिना दम दम मुआ ॥३॥
बिरहिन पिया बेहोश है, तन मन बदन सूझै नहीं।
बूझै चशम बिन क्या कहै, दिल हेर रहम-दिल दोस्त है ॥४॥
हर वक्त हाज़िर मैं खड़ी, नैना नज़र नदियाँ बहीं।
याँ कोई मेरा महरम नहीं, अब तो चरन मैं आ पड़ी ॥५॥
आशिक़ इश्क़ हर दम लहर, दिल से जुदा दरदी हुआ।
कहौं क्या जो सिर खटकै जुवा, हर दम हिये बिच मैं लहर ॥६॥
इस इश्क़ में ग़ाफ़िल फिरौं, कहुँ बस नहीं बेहोश हौं।
दम की ख़बर कुछ ना रहै, अब तो दिलै बिच मैं मरौं ॥७॥
पल पल इसम दिल यों किया, ये तलब के ताईं चहौं।
तुलसी तक़ी खुब समझ के, तब यार का मारग लिया ॥८॥

॥ ग़ज़ल २ ॥

अरे ऐ तक़ी दीदार दिल, दिल दिल दिलों विच तिल मैं दिल।
नैना नज़र से आन मिल, खिलखिल ख़ुशी दिल कर मियाँ ॥१॥
चल गैल गैंद तक़ आज पिल, ऐसे हिये बिच आन हिल।
झोका न दे दर्दी जलल, अरे हाल मिल फिर ना निकल ॥२॥
दिल दूर से दरदी फ़ज़ल, इस राह से पहुँचै मँज़ल।
अरे बूझ ले सूझै अदल, उसकी मेहर दिल मैं शकल ॥३॥
मन मार हो दिल मैं कुसल, प्यारा अधर आवै अज़ल[1]।
ये वक़्त फिर आवै न कल, पानी बिना पावै न थल ॥४॥
देखो नज़र कोइ ना अचल, भल भल भला सोई सथल।
तुलसी तक़ी मुर्शिद से मिल, कर दोस्ती फिर बेख़लल ॥५॥

॥ ग़ज़ल ३ ॥

तिल मैं नक़ल न्यारी अक़ल, मुर्शिद शकल रूह राह चल।
चल आज मिल पावै असल, पी प्यार मिल सोवै अचल ॥१॥
नल राह रल गुस्ले कँवल, पावै तु फल होवै सुफल।
अरे ऐ मुसाफ़िर जल्द चल, होगा वहाँ तुझ पर फ़ज़ल ॥२॥
अज आज अल कूकै कँवल, स्वाँसा निकल हर दम ख़लल।
झल झिल झिलल आमिल अमल, पल पल परे पर पाखिलल ॥३॥
तक़ी जो तुल तुलसी अतुल, देखौ ज़लल ये जहान फल।
कुछ ना असल हम हैं अबल, आख़िर निकल न्यारा हुआ ॥४॥

॥ रेख़ता[2] ॥

दिल दिल हिया हुलसै पिया, दीदा लहर हर दम मेहर।
पाऊँ ख़ुशी आशिक़ रहूँ, दिल से रहम-दिल यारिया ॥१॥
मेरे मियाँ मैं प्यारिया, तन मन बदन सब वारिया।
बदनाम सुद्ध बिसारिया, रहुँ लै लपट नैनों जिया ॥२॥

---

(१) अजल (अरबी शब्द) = तुर्त। (२) यह रेख़ता, मुं० दे० प्र० की पुस्तक में नहीं है।

माँगूँ मेहर कीजै किया, इस इश्क़ से आशिक़ लिया ।
लागी रहूँ हर दम हिया, माने मने सब कुछ दिया ॥३॥
पाऊँ मेहर महलन रहूँ, आऊँ अटारी कर कहूँ ।
बिजली अँध्यारी सम चहूँ, उमगै कड़क बदरी सहूँ ॥४॥
चुनरी रँगीली रँग चुवा, पानी घटा हर दम धुआँ ।
कोइ ना अकेली लार लै, हर दम मियाँ मनुआँ मुआ ॥५॥
ख़िलक़त ख़लक़ थूकै सुवा, तन मन बदन हारी जुआ ।
पौढ़ी पलँग हर वक्त सुवा, जागूँ मेहर माँगूँ दुआ ॥६॥
अरे ये अधर आदर करै, ये जक्त की जाली जरै ।
भावै नहीं ज़ेवर ज़हर, तुलसी तक़ी ख़िलक़त मरै ॥७॥

॥ दोहा[१] ॥

तुलसी तक़ी निहार, निकर न्यार पारै हुआ ।
खुद खुदाइ की लार, जग जहान सगरा सुआ ॥

॥ छंद[१] ॥

तुलसी तक पाया अगम लखाया, गिरा गजल सोइ भाखि कही ॥
सूरति चढ़ि जागी अगम को भागी, लखा अलख की आदि भई ॥
देखा सब न्यारा अगम पसारा, मुरसिद ने जद राह दई ॥
तकी तलब बुझानी प्यारा जानी, खुद खुदाइ की राह लई ॥
मुरसिद मत पाया दसूतन आया, फजल मेहर की मौज भई ॥
रूह चढ़ी असमाना फोड़ निसाना, देखि आदि की आदि कही ॥

॥ दोहा ॥

तकी तलब मुरसिद भरी, तुलसी पीर हमार ।
दस्त फजल अपना करौ, रहम रब्ब दरबार ॥१॥
मुरसिद फजल गुलाम पर, करौ रहम-दिल प्यार ।
अबै हुकम मुझ पर करौ, अज्ञा होइ दीदार ॥२॥

(१) यह दोहा और छंद मुं० दे० प्र० की पुस्तक में नहीं हैं ।

॥ चौपाई ॥

तुलसी हुकम तकी को दीन्हा । पुनि चलि कै मारग उन लीन्हा ॥
मारग चलि पुनि कासी आये । अपने घर को आन सिधाये ॥

॥ दोहा ॥

कर्मा धर्मा अरु तकी, करिया सैनी नार ।
बस्तु पाइ मारग गहे, दीन्हा पंथ लखाइ ॥

सम्बाद माना, नैनू, स्यामा, पंडितों के साथ ।

॥ दोहा ॥

नैनू पंडित और सब, स्यामा सब मिलि झार ।
कहै भेद तुलसी सुनौ, तुम कीन्हा झूठ पसार ॥

॥ सोरठा ॥

नैनू गुसा गुहार, हार हिये मन तमक से ।
बोला बचन बिकार, तुलसी तुम मिथ्या कही ॥१॥
स्यामा सोच बिचार, अनल झार हिये उठत जिमि ।
क्रोध कुबुधि की लार, लटो लटी कर कर कही ॥२॥
माना मान अपूर, क्रूर क्रूर बोलै सबै ।
बुधि बल मत का कूर, चूर अंग अज्ञान मैं ॥३॥

॥ चौपाई ॥

नैनू स्यामा यों कर बोले । नाक फुलाइ बचन अस खोले ॥
नैन सुरख और मूछैं मोड़ी । भुजा चढ़ी पुनि भौहैं टेढ़ी ॥
मुख सों कड़कि स्वाल अस डारा । तुलसी तुम से करिहैं रारा ॥
तुलसी कहै आदि बिख्याता । नैनू पूछै सब बिधि बाता ॥
वेद पुरान आदि गति गावौ । और ब्रह्मा की आदि बतावौ ॥
सिव स्वामी अरु बिस्नु बिचारा । कहै आदि रचना बिस्तारा ॥
भये भगवान दसौ औतारा । और बैराट का कहै पसारा ॥
ब्रह्मा कहै कहाँ से अइया । उन रचना कौने बिधि करिया ॥

सातौ दीप और नौखंडा । केहि बिधि रचा सकल ब्रह्मंडा ॥
तब साधू तुम पूरे ज्ञानी । आदि अंत की करौ बखानी ॥
स्रावग तुरक मता दरसावा । ये गरीब को ज्वाब न आवा ॥
हम पंडित बिद्या बिधि आगर[1] । बेद बिधी से कहै उजागर ॥
हम सँग जीति जाव गुरुज्ञानी । तुम्हरा साध मता तब जानी ॥
बिना पुरान ज्ञान कहँ पावा । बिन सास्तर कहौ कहँ से आवा ॥
बेद बिना काहू नहिँ पावा । या के परे कोऊ नहिँ गावा ॥
ब्यास मुनी जो पुरान बनाये । नारद सुकदेव को समझाये ॥
राम कृष्न बिधि भाख्यो भेवा । जोगी ऋषी मुनी सब देवा ॥
सब उठाइ अपना मत ठानै । बेद बिधी बिन हम नहिँ मानैँ ॥
सब पंडित मिलि टेकी टेका । बिना निसा नहिँ मानै एका ॥
होहोकार सवन बहु कीन्हा । कासी माहिँ रहन को दीन्हा ॥
कौन मते का साध कहावै । सब को झूठ झूठ बतलावै ॥
यह पुनि साध कहाँ से आवा । कौन गुरू यह ज्ञान पढ़ावा ॥
नैनू नैन गुसा भरि लाये । सरक सरक हमरे ढिग आये ॥
कह तुलसी तुम कहौ जवाबा । अब कस मौन बैठि मोरे बाबा ॥

॥ दोहा ॥

नैनू पंडित तमक सोँ, कह तुलसी से बात ।
इक इक बिधि बतलाइ दे, नहिँ होइ है उतपात ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ दोहा ॥

कह तुलसी नैनू सुनौ, मोरी मनिहौ बात ।
पूछा सोई बताइहौँ, जो चित बसै बिख्यात ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी ज्वाब धीर सोँ दीन्हा । सुनौ भेद भाखौँ मैँ चीन्हा ॥
भाखौँ आदि साध गति न्यारी । नैनू बूझौ बुधि अनुसारी ॥

---

(१) श्रेष्ठ ।

कह तुलसी सुन नैनू पाँडे । पंडित सुनौ सवै चित माँडे ॥
कौन बेद की आदि बखानौं । पंडित कहौ सोई मैं मानौं ॥
बेद चारि ब्रह्मा निज कीन्हा । पंचम सुषम बेद को चीन्हा ॥
छठवाँ प्रसंगे बेद कहाई । वा की विधी सुनौ हो भाई ॥
चारि बेद जो गुप्त रहाई । ता में कागद लगै न स्याही ॥
ता को भेद बेद नहिं जानै । ता के परे कहे को मानै ॥

॥ सोरठा ॥

बेद दसौ बिधि गाइ, का की पूछौ आदि तुम ।
सो मैं देउँ बताइ, नैनू स्यामा भाखिये ॥

॥ चौपाई ॥

तब नैनू कुछ ज्वाब न दीन्हा । मौन रहे कुछ बोल न कीन्हा ॥
तुलसी दसौ बेद बिधि गाई । कौन बेद की आदि बताई ॥
और ब्रह्मा की आदि बखानी । ब्रह्मा अनेक भये उतपानी ॥
कइ उपजे कइ बिनसे भाई । कइ कइ परे कर्म भौ माईं ॥
पूछौ जौन कहौँ जेहि नामा । भाखौ सोइ मैं कहौँ बिधाना ॥
सिव बिस्नू पुनि भये अनेका । नाम कहौ बरनन करौँ जिन का ॥
और भगवान दसौ औतारा । जिन का कहौ कहौँ निरवारा ॥
बहुत बहुत औतारी भइया । जेहि पूछौ तेहि की हम कहिया ॥
पुनि बैराट पूछिया ज्ञाना । भये बैराट अनेक बिधाना ॥
फूटै बनै बनै फिरि फूटै । ऐसे अनेक बार पुनि टूटै ॥
जैसे कुम्हरा घड़ा बनाई । फूटै घड़ा काम नहिं आई ॥
झूठा अस बैराट बनावा । ज्यौँ बाजीगर आम लगावा ॥
आम लगाइ जगत दिखलावै । पुनि कौड़ी माँगन को आवै ॥
रूप बैराट अनेकन कहिया । पुनि पुनि नास सबन को भइया ॥
पुनि पुनि आवै पुनि पुनि जाई । ये सब हैं परलय के माईं ॥
जिन के भये दसौ औतारा । अंधा जग तेहि कहै करतारा ॥

कर्म बंध वे उपजे आई । पुनि पुनि उपजै पुनि पुनि जाई ॥
कइ बैराट नास ह्वै गइया । औतारी कैसे कर रहिया ॥
ता कैां नाम कहौ भगवाना । आये पुनि पुनि बहुरि नसाना ॥
नासपालबिधि इन की होई । और बैराट नसे सब कोई ॥
ब्रह्मा नाभि कँवल से भाखै । फिरि फिरि नास भयै पुनि ता कैा ॥
ब्रह्मा बिस्नु की कहौँ बुझाई । नसि बैराट येहू नसि जाई ॥
चारि खानि के जीव बिचारा । इन का कैान करै निरबारा ॥
मरिहै धरती पवन अकासा । पानी मरै अगिनि कैा नासा ॥
ऐसे सब बैराट नसाना । सो ब्रह्मा का कैान ठिकाना ॥

॥ उत्तर नैनू पंडित ॥

॥ दोहा ॥

नैनू कहै तुलसी सुनौ, सब बैराट नसाइ ।
भगवान रहै इक बृच्छ पै, जब जल बास रहाइ ॥

॥ चैापाई ॥

नैनू कहै जल रहै निदाना । अछै बृच्छ पर श्रीभगवाना ॥

॥ बचन तुलसी साहिब ॥

॥ चैापाई ॥

तुम कहौ जल तत रहै निवासा । तौ बैराट कहाँ भयै नासा ॥
जल के जीव जलहि मेँ होई । जल तत जीव जगत रहा सोई ॥
रहै भगवान और कोइ नाहीँ । तुम अस कहि बिधि भाखि सुनाई ॥
नौलख जोनि खानि जल माहीँ । जल रहिया वे कैसे जाहीँ ॥
पिरथी बिन जल कैसे रहिया । पंडित यह बिधि बरनि सुनइया ॥
अछै बृच्छ रहै जल जाना । ता पर सैन कीन्ह भगवाना ॥
या की बिधि बिधि कहौँ बुझाई । पंडित सुनियौ चित्त लगाई ॥[1]

---

(१) यह चौपाई मुं० दे० प्र० की पुस्तक मेँ नहीँ है ।

॥ प्रलय की सवैया १ ॥

बाम्हन वेद बताइ कहैं, भगवान महाप्रलय सैन कराई ॥
भये तत नास वैराट अकास, अछैवट वृच्छ सो पात के माईं ॥
आतस पिरथी जो पवन नहीं, तब थो न कछू जल जलहि बताई ॥
ये विधि भाखि विचारि कहैं, तौ कहैा थल बिन जल कैसे रहाई
नीर रहै जल जीव सभी, सो पिरथी भये बिन नीर न भाई ॥
वैराट विनास तो ब्रह्मा की नास, तो बेद बिनास भयौ जल माईं ॥
कागद स्याही न कलम बची, तुलसी तब की विधि कौन सुनाई ॥

॥ सवैया २ ॥

महा परलय जल बेद कहै, सुन भेद बिना सब झूठ कहानी ॥
पाँचहि तत्त वैराट नसौ, और ब्रह्मा नसौ नसी वेद की बानी ॥
नाद गये नस वेद बहे, जब कौन कही विधि बात बखानी ॥
ज्ञान विचार से बूझि कहैा, तब सूझि परै हिये आँखि निसानी ॥
नीर भयौ जल तत्त रह्यौ, पिरथी बिन तत्त रह्यौ कस पानी ॥
पिरथी भई जुग तत्त सही, पिरथी और नीर के तत्त मैं खानी ॥
जो कोइ जानि बयान करै, भगवान की नाक मैं स्वाँस समानी ॥
स्वाँस बसे तत तीन फँसे, सो अकास रहे बिन स्वाँस न बानी ॥
चारिहि तत्त रहे रस मब्न, तौ अगिनि कहैा विधि कैसे नसानी ॥
पाँचोइ तत्त कौ ठाट रह्यौ, वैराट नसौ कहैा कैसे बखानी ॥
तुलसी तत तोल के बोल कहै, तिन की हिये आँखि से भाखौ बखानी ॥

॥ सवैया ३ ॥

बास वैराट भयौ तत नास, सो पाँच कौ बास न स्वाँस रह्यौ थो ॥
आदि अकास कैा भास नसौ, पिरथी और पवन निवास नहीं थो ॥
और अनल जल रह्यौ कछु नाहिं, यह बोल रह्यौ जाको बास कहाँ थो ॥
तुलसी जब की विधि बात कहैा, जब कागद स्याही न वेद रह्यौ थो ॥

॥ उत्तर पंडित ॥

॥ सवैया ४ ॥

ब्राम्हन ज्वाब दियौ तुलसी, परलय जल और रहै कछु नाहीं ॥
यहि बिधि बेद बताइ कहै, सोइ स्वाँस मैं बेद भयौ सो बताहीं ॥
सबही बैराट नसै कोइ नाहिं, जल बृच्छ भगवान सो पात के माहीं ॥
और कहैं कछु रहत नहीं, सोइ स्वाँस मैं बेद रहै बतलाहीं ॥
तुलसी सुनि कै मन मौन गही. सुन बोल बैराट मैं स्वाँस नसाही

॥ सवैया ५ ॥

पवन रही जोइ प्रलय कही, ये तो बिधि बात मिली नहिं भाई ॥
अकास और स्वाँस सब तत्त रहैं, सोइ मत्त येही बिधि बेद बताई ॥
नास भये कोइ नाहिं रहै, जब जोइ रह्यो जाके पार सुनाई ॥
पंडित तोल न बोल कही, तुलसी चुप बैठि न बात बताई ॥

॥ बचन तुलसी साहिब ॥

॥ सवैया ६ ॥

पंडित मौन कहै तुलसी, अब भाखि कहौं सुन भेद बताई ॥
नास अकास पवन पिरथी, जल नास अनल्ल न कोइ रहाई ॥
ब्रह्मा और बेद बैराट नसै, सिव चंद न सूर न तारे तराई ॥
निरगुन नास निवास नहीं, सोइ सरगुन सृष्टि की कैान चलाई ॥
ये लखि भेद कहै तुलसी, पुनि परलय भइ ता की लेख लखाई ॥

॥ सवैया ७ ॥

आदि अनादि अगाधि बिधी सुन, याद करिले कहौं महाप्रलय गाई ॥
प्रथम पवन कैा भास नस्यैा, पुनि नीर नस्यैा मिलि स्वाँस के माईं ॥
नीर औ स्वाँस मैं मन अगिनी, चलै तीनोँ भास अकास मैं जाई
चारिहि तत्त के मत्त मिले, पुनि पिरथी नसी वोहि वास मैं आई
पाँचहि तत्त कैा नास भयैा, नसि आइ समाने अलख के माईं ॥
आदि अलख और जोति नसी, सो बसे अविगत्ति मैं जाइ जो भाई ॥

अविगति नास की बात कहौं, नसि जाइ कै हंस मैं बास कराई
आतम हंस प्रमातम बंस, सो ये दोउ नसि गये सुन्न के माईं ॥
सुन्न नसी और धुन्न नसी, सोइ जाइ लसे दोउ सब्द के माईं ॥
सब्द का नास कहौं पुनि बास, सो सत्तपुरुष मैं जाइ समाईं ॥
सत्तपुरुष कैा नास नहीं, सुन महा प्रलय विधि ऐसी बताईं ॥
कोटि प्रलय बिधि आदि अनादि, सो सत्तपुरुष पै एक न जाईं ॥
ता के परे पद आदि अनाम, सो संत बसैं वोहि धाम के माईं ॥
तुलसी निज देखि कै बास विधी, सोइ पास अनाम के संत समाईं

॥ सवैया ८ ॥

बिस्व बैराट हता नहिं ठाट, सो ब्रह्म की बाट कैा घाट कहाँ थो ॥
जीव नहीं तब सीव नहीं, पति पीउ के प्यार मैं जीव बसो थो ॥
जहँ काल कराल की जाल नहीं, तब साह की कोठी मैं माल धरो थो ॥
पिंड ब्रह्मंड न अंड हतैा, तब जीव अजीव न खानि परो थो ॥
जब ब्रह्मा न बेद न खेद हतैा, तब आयौ अभेद न मारे मरो थो ॥
तोल कहै तुलसी निज कै, जब जक्त के जीव का सार कहाँ थो ॥

॥ सवैया ९ ॥

अंड ब्रह्मंड बैराट न पिंड, अखंड जो ब्रह्म की बाट बताऊँ ॥
जीव अजीव न ब्रह्म हतैा, जब जोइ हतैा ता कैा भेद सुनाऊँ ॥
वोहू नहीं कछु और कही, सुन और से भिन्न का भेद लखाऊँ ॥
आदि न अंत कहै सोइ संत, सो पंथ परे पर पार दिखाऊँ ॥
तुलसी तब की विधि बात कहूँ, जब कोइ न थो जा के रूप न नाऊँ

॥ सवैया १० ॥

अब सत्तहि सत्त कहौं मत मूल, नहीं अस्थूल न नाम कहायौ ॥
आदि अनादि की आदि कहौं, सो अगाध उपाध जो एक न गायौ ॥
आदि पुरुष निःनाम अनाम, सो ठाम न ठौर न धाम कहायौ ॥
तास हिलोर भया इक सोर, सोर लहरि समुद्र की खाइ कहायौ ॥
खाइ का ब्यान कहौं सत नाम, सो धाम रहै सतलोक मैं आयौ ॥

नाम निअच्छर की लघुता, रँग ता से भये सोला ब्रह्म जनायौ ॥
तुलसी बिधि ब्रह्म की आदि कही, अब ब्रह्म भयौ जग जीव जो भायौ ॥

॥ सवैया ११ ॥

निरगुन सोला को साखि कहौं, सोइ बास बसै सत दीप के माईं
निरगुन एक की नेक कहौं, बिधि बेद कहै परमातम ताईं ॥
सोइ परमातम सुन्न बसै, ता को धुन्न से आतम जीव कहाईं ॥
मान सरोवर घाट बसै, येही आतम जीव को बाट बताईं ॥
आतम तत्त तमातम मारग, तत्त भये अविगत्ति कहाईं ॥
तुलसी बिधि बात निहारि कहै, सो पुकारि पुकारि कै कहत सुनाईं

॥ सवैया १२ ॥

अविगति रीति करी जग प्रीति, सो ध्यान से जोति कै मान बढ़ायौ ॥
सत्त पुरुष की डोरि गही, सो पुरुष के अंस से जीव जो आयौ ॥
जीव के तेज से जोति भई, जिव जोति मिले भगवान कहायौ ॥
ता को बैराट कहै नर अंध, सो फंद गुना गुन तीन में गायौ ॥
अब तत्त की साखि कहौं बिधि भाखि, सो लाग की लाख कौ ताख बनायौ॥
कुंभ के उद्र अकास औ स्वाँस, अकास जो तीनोइँ तत्त में आयौ
पाँचहि तत्त भये बिधि एक, सो याहि कौ नाम बैराट कहायौ ॥
अकास के नूर से सूर भयौ, तत तारे के बंद से चंद चलायौ ॥
सब ही बिधि बंद बैराट बनौ[1], बिधि भूलि पिया चित नेक न लायौ ॥
तुलसी जब की नहिं बात लखी, जब जाही में नाम अलख्य कहायौ ॥

॥ सवैया १३ ॥

अलख निरंजन नाम सोई, जिन जोति से भोग कियौ भग जाई
तीनिहि बुंद के तीनि भये, सोइ ब्रह्मा बिस्नु महेस हू भाई ॥
पहिले जग जीव अलख्य हतौ, गुन तीनि में मन सो लख्य कहाई
तुलसी बिष भास में बास बस्यौ, सो फँस्यौ बिधि बेद से खानि में आई ॥

---

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक में "बनौ" की जगह "नसौ" है जो अशुद्ध जान पड़ता है।

॥ सवैया १४ ॥

चारोइ बेद की आदि कहौं, पुनि पंचम स्वाँस सुषम्म से आयौ ॥
बेद सुषम की छाया लई, ता से ब्रह्मा ने चारोइ बेद बनायौ ॥
षटवाँ सोइ बेद प्रसंग जोई, सो आये सुषम्म प्रसंग से गायौ ॥
ये षट बेद का भेद कही, सो रहे पुनि चार सो संत बतायौ ॥
चारोइ बेद की आदि कही, सोइ कागद स्याही न लेख लिखायौ
सुनो दस बेद कहै तुलसी, सो कहौ पुनि पंडित कौन बनायौ ॥

॥ सवैया १५ ॥

लख्य रहा गुन तीनि गहा, सो पलक्क[1] मेँ आ कियौ वास बसेरो ॥
ऐसे बैराट भयौ सब ठाट, सो घाट तीनौं गुन बाट मेँ घेरो ॥
रजो कहुँ ब्रह्मा सतो कहुँ बिस्नु, कियौ तम संकर साज घनेरो ॥
भया भगवान बैराट बिधान, सो माया की चाट मेँ काल को चेरो
चंदा रबि नैन नहीँ सुख चैन, सो राहु बिमान करै नित फेरो ॥
देखि दुखी मन राम फिरै, गुन गोरस खानि मेँ कामना पेरो ॥
तुलसी बिधि आदि बिख्यात कही, भगवान नसौ नहिँ कीन्ह निवेरो ॥

॥ सवैया १६ ॥

चारोइ खानि भयौ भगवान, सो याही से नाम अनेक कहायौ ॥
काल बली कियौ जाल छली, सोइ बाँधि चले जो अनेकन आयौ
जोगी जती जग ज्ञान मती, सोइ सीता सती और राम को खायौ
ऋषि मुनि रोवैँ सीस धुनी, और ब्रह्मा बिस्नु महेस चबायौ ॥
तुलसी तत छान बिचार कहै, जब जोइ बच्यो जा को संत बचायौ ॥

॥ सवैया १७ ॥

पंडित भाखि कहैँ बिधि ब्रह्मा ने, चारोइ बेद बनाइ लिये हैं ॥
साम जजुर जो भये हैँ लघू, ऋगु बेद अथरबन चारो किये हैँ ॥
येहि बिधि जगत सुनाइ कहैँ, सो बनाइ कै गाइ जनाइ दिये हैँ ॥

---

(१) मुं०, दे० प्र० की पुस्तक मेँ "पलक्क" की जगह "खलक्क" है।

झूठी जो बात करैं जग साथ, अनाथ अनारी ने मान लिये हैं ॥
ये भी खानि करी तुलसी, सो बेद ने मारि कै घानि किये हैं ॥

॥ सवैया १८ ॥

पंडित बेद का भेद कहौं, जा की उतपति भाखि कै साखि सुनाऊँ ॥
जक्त रहा पीछे बेद भया, जा की आदि कहौं बिधि बात लखाऊँ
पिरथम बैल किसानी हती, धरती बन बोइ कै सन्न[1] कहायो ॥
ता की रसी कर टाट बन्यो, फिर कागदो कूटि कै धोइ ले आयो ॥
पुनि चूने दिवाल पै लेप कियो, सो भयो बिधि कागद लेख लिखायो ॥
तिली जो तेल कियो पुनि पेल, सो तेल से काजल स्याही बनायो
स्याही भई पुनि कलम सही, लिखि ब्रह्मा ने याही से बेद सुनायो
तुलसी तत तोल बिचार कहै, जग बेद के भेद से खानि मैं आयो

॥ सवैया १९ ॥

पंडित झाड़ की आड़ लई, कहूँ ताड़ के पात पर जाल लिखो थो
येहि बिधि बेद बखान करैं, सो अजान न जाने जो बेद कहाँ थो
अस्थावर बावर बृच्छ हते तरु, तीस जो लाख मैं कोन नहीं थो ॥
अठरा बन भाँति की जाति सभी, सो सभी संसार को कार सही थो
उषमज अंडज पिंड हतो, अस्थावर चारि चौरासी बनो थो ॥
पात प्रथम्म भयो तरु को, तुलसी पीछे पात के बेद भयो थो ॥

॥ सवैया २० ॥

बेद मथो जिन पुरान कथो, बहु सिम्रित सास्त्र को ज्ञान हतो ॥
नेम अचार अचारज रीति, सो जीते नहीं जम खायो खतो ॥
परमहि हंस बँधे जड़ संग, सो ब्रह्म अरंग न जानो मतो ॥
जगत अजान रहा रस खान, सो माया के मान मैं रंग रतो ॥
तुलसी जब जानि कै मौन गह्यो, सो कह्यो पद साखी मैं सारो पतो

॥ सवैया २१ ॥

अरे मन मान अचेत अजान, सो ऊसर खेत मैं काह मिलैगो ॥
ये जग संग पतंग को रंग, सो माते मतंग से घानी पिलैगो ॥

---

(१) सन ।

ये जम जाल महा बिकराल, सो खालहिँ खैँचि के भूस भिलैगो ॥
तुलसी तब की बिधि याद करैा, तन छूटै न दैंहो से माल मिलैगो

॥ सवैया २२ ॥

तेल फुलेल करै रस केल, सो माया के फेल मेँ सार भुलानौ ॥
मात पिता सुत नारि निहारि, सो झूठ असार को देखि भुलानौ॥
ये दिन चार बिचार न लार, सो भूलि असार के संग तुलानौ ॥
तासे कहै तुलसो निज कै, तन छूटि गये जम देत उलानौ[1] ॥

॥ सवैया २३ ॥

दृष्टि पसारि के देखि तुही, जग माहिँ रह्यौ कोइ बूझ अमाना ॥
पंडो भभीषन भीम बली, गये खोज गली केहि राह समाना ॥
रावन लंकपती पै हती, सो रती भर संग न देखि निदाना ॥
तू केहि लेखे मेँ देख कहैाँ, तुलसी सतसंग से होत न हाना ॥

॥ सवैया २४ ॥

किये तन काज की लाज करैा, सो बनाइ के साज ले तोहि पठायो
ता को बिसारि दियैा मतिमंद, जगत के फंद मेँ बंद बँधायो ॥
अंत जो कैान बिचार करैा नर, जा ने रच्यैा ता की याद न लायो
लेत हिसाब बनै नहिँ ज्वाब, सो ख्वाब के खेल मेँ तोहि भुलायो॥
तुलसी तब बात बिचार पड़ै, जब आनि चढ़ै जम छाती पै धायो

॥ सवैया २५ ॥

सुनौ सतसंग का रंग कहैाँ, सो उतंग अमोल जो मोल न आवै ॥
कहैँ सबही सब संत पुकारि, बिना सतसंग नहीँ कछु पावै ॥
संत मिलैँ सतपंथ चलै, सो कुपंथ कलह सब दूरि बहावै ॥
ज्ञान बिबेक बैराग लखै, मन मान मनी बिधि सारी नसावै ॥
संत मता कछु और लखै, सो पकै गुरु मारग मेँ स्रुति लावै ॥
तुलसी तत तोल बिचार कहै, सो अमोल पिया घर सहज समावै

---

(१) उलहना।

॥ सवैया २६ ॥

सतसंग मेँ भेद अभेद मिलै, सुति सैल दुर्बीन को माँजा करै ॥
मन की मत भार निहार लखै, सो पकै सुति घाट पै आनि धरै॥
पच्छिम बास की आस तकै, नित नेम सुती सत चाह करै ॥
येही बिधि डोर लगी निस बास, पिया पद खेल कैा माल भरै ॥
तुलसी निज सूझ कै बूझ परी, जिन को पति प्यार से कार सरै॥

॥ सवैया २७ ॥

संत मता अज आद अलग्ग,[१] बिलग्ग[१] बिधो कोउ नेक न जाना
राह रसी रजु[२] पोढ़ करै, लागी डोर की मोर पै सुरति ठिकाना॥
पील पै लील को खोल करै, सो अपील अकास को मारि निसाना
मानसरोवर हंस बसै, तेहि माहिँ अन्हाइ के देस दिखाना ॥
तुलसी तत आतम भेद कही, पुनि आगे चले पर और कहाना ॥

॥ सवैया २८ ॥

मानसरोवर पार चली, ता की आली सुनो सत सैन लखाऊँ ॥
जाहि सखी सुन सुन्न सुमारग, पार कैा ब्रह्म परमातम नाऊँ ॥
जाहि चढ़ी सत सुरति सुहागिल, पाइ लखो ब्रह्मंड कैा ठाऊँ ॥
जीव चराचर जाति सभी, सब देखि निहार के भाख सुनाऊँ ॥
तुलसी गुरु से सुति राह लखी, बिधि सोइ अगोचर ताहि बताऊँ॥

॥ सवैया २६ ॥

सन्त पुरुष को भेद कहौँ, सतलोक मेँ जाहि कैा बास बसेरो ॥
संत सबै रस राह लखैँ, सो चखैँ वोहि मारग साँझ सबेरो ॥
सहस कँवल्ल चढ़ै चक देस, सो जाइ लखै जा मेँ जोति को डेरो ॥
ताहि के पास निरंजन बास, सो स्वाँस बसै वोहि धाम के नेरो॥
ता के परे दल दोइ के पास, अकास के पास अलख्य को पहरो॥
ताहि के मध्य भरन्न के पार, अवोगत काल के जाल को घेरो॥

---

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक मेँ "अलग्ग" की जगह "अलाप", और "बिलग्ग" की जगह "बिलाप" है जो समझ मेँ नहीँ आता। (२) रस्सी।

ता के परे तट ताल मेँ हंस, सो बंस अवीगत है तेहि केरो ॥
ता के परे पर वेनी को घाट, प्रमातम ब्रह्म सो सुन्न मेँ हेरो ॥
आगे सखी बिधि बात कहौँ, दल चारि परे सतलोक निवेरो ॥
ता के परे खिरकी से नियार, सो साहिब सत्त पुरुष है मेरो ॥
जा के रोमहि रोम ब्रह्मंड औ अंड, सो कोटि रबी जा के रोम उजेरो ॥
सोइ सतनाम कहो सत साहिब, ता को भयो तुलसी निज चेरो ॥

॥ सवैया ३० ॥

एक अगत्त अगाध अनाम, सो धाम न गाम न ठाम ठिकाना ॥
जहँ लख्य अलख्य कैा खेल नहीँ, सो खलक्क विचारे ने काहे को जाना ॥
ता की बिधी कोइ संत लखै, सो अपेल अकेल का रूप न नामा ॥
आतम हंस प्रमातम बंस, सो इन दोउ नाहिँ यह देस पिछाना ॥
जहँ ब्रह्म न जीव अजीव को बास, सो चंद न सूर जमीँ असमाना ॥
पिंड ब्रह्मंड जो तत्त नहीँ, जहँ सत्तहि लोक नहीँ असथाना ॥
सो साहिब सत्त के पार बसै, सो अगार अनाम जो संत समाना ॥
जा की विधि तुलसी लखि पाई, सो देखि अनाम को जानि बखाना

॥ सवैया ३१ ॥

संत का भेद अभेद अपार, सो सार वोही वोहि देस को जानै ॥
सूरति सैल से केल करै, सो अपेल अकेल की साखि बखानै ॥
बेद पुरान नहीँ मत ज्ञान, सो जोगी कैा ध्यान न पहुँचै निदानै ॥
ता की कहै तुलसी बिधि तोल, सो संत बिना नाहिँ भेद पिछानै ॥

॥ सवैया ३२ ॥

नीर निरंजन काल बिधी, सो कराल बसै मन ऐन के माईँ ॥
चैन अचैन बिचैन करै, सोइ नीत अनीत मेँ देत भुलाईं ॥
जगत जहान करै जे हैरान, सो खानि मेँ डारिकै घानि पेराईं ॥
जो कोइ जानि विचार करै, सोइ संत के पाँउ परै नित आईं ॥
वे सो दयाल करैँ प्रतिपाल, सो काल के जाल से लेत छुड़ाईं ॥
ये तत बात कहै तुलसी, सो बसी निज सूरति सत्त मेँ जाईं ॥

॥ सवैया ३३ ॥

गीता की भाखि कहौं पुनि साखि, सो आँखि से पोथी में देख विचारो
कहा भगवान अरजुन सुन कान, सो साँचे विधान को जानि निवेरो ॥
अरजुन ठाढ़ रहौ रन माहिँ, सो कौरौ को मारि कै राज सम्हारो
अरजुन देखि बिचारि कहै, परिवार मरै ऐसे राज को जारो ॥
येहि बिधि ज्ञान उठौ मन माहिँ, सोई धनु बान पलक मैं डारो ॥
कृष्न कह्यौ पुनि ज्ञान बैराग, सो जोग विज्ञान बिधी से पछारो
अरजुन भक्त गरीब अजान, सो जानै नहीं या को फंद पसारो ॥
अरजुन गह्यो जो नहीं धनुवाँ, सो वताइ त्रिलोकी को डाढ़ मैं चारो
अरजुन जो देखि भयंक भयो, सो कह्यो विधि कौरौ को सत्र ले मारो
ये छल दाव दियो धनुवाँ, सो कह्यो अरजुन से मारि बिडारो ॥
तो को कछू नहिँ पाप लगै, सो करै करता कछु तोहि न भारो ॥
येहि विधि भाखि कही भगवान, सो काटि कै मारि कुटुम्ब सँघारो ॥
धनुवाँ अरजुन्न उठाइ लियै, सो भिड़ौ रन खेत कुटुम्ब को मारो
अरजुन जीति गहे जब पाँइ, सो पाप लगाइ कै दूरि निकारो॥
दूरि रहौ सिर पाप गह्यौ, सो हत्या कौ पाप लगौ तोहि सारो ॥
जज्ञ करौ असुमेद जवै, सो तवै कुल हत्या से होइहै न्यारो ॥
अरजुन जज्ञ कियै मत मान, सो हत्या कौ पाप भयै नहिँ न्यारो
अरजुन भाखि कह्यौ भगवान, सो देही हिवारे मैं जाइ कै गारो ॥
पाँचोइ पंडा हिवारे गरे, सो मरे गये नर्क मैं चारो के चारो ॥
जोइ युदिष्ठिर एक वचौ, जा को कहत स्वर्ग मैं भयौ सुख सारो ॥
अरजुन मित्र वड़े भगवान, सो मारि कै ताहि को नर्क मैं डारो ॥
नर्क की जाल भया सो बेहाल, सो काल जो कृष्न ने ऐसे बिडारो
ऐसे कुटिल से प्रीति करी, दुख पाइ के कर्महि कर्म पुकारे ॥
मित्र बड़े सोइ नर्क परे, सो कढ़े नहिँ कृष्न के भारी थे प्यारे ॥

वोही जो कृष्न कौ इष्ट करै, सो मती भई भ्रष्ट जो दुष्ट के लारे ॥
प्रतच्छ जो कृष्न ने ऐसी करी, तुलसी कहै मूरति कैसे उबारे ॥

॥ सवैया ३४ ॥

भागवत बूझि बिचार करौ, सो कहै सतसंग से संत हैं न्यारा ॥
आतम ज्ञान की बात कहै, दुतिया असकंध में बूझि विचारा ॥
नेम अचार अनेकन कार, सो झूठि असार कौ सार निकारा ॥
पुनि जो धर्म अनेकन कर्म, सो जीव कौ काज न एक सँवारा ॥
भागवत माहिं कहै परसंग, सो नेक बिवेक से देखि निहारा ॥
भये नृगराइ[1] कहैं पुनि गाइ, सो गाइ के गोसठि देत अपारा ॥
देतहि देत जो जनम गयौ, सो भयौ गिरगट जो देंहि को धारा ॥
पुन्न जतन्न कियो बहु भाँति, सो कर्म के भोग टरे नहिं टारा ॥
पुन्न से जीव कौ काज नहीं, सो परे नृगराइ कुए बिच डारा ॥
बाम्हन पुन्न से स्वर्ग कहै, तुलसी सब बात अनीति पसारा ॥

॥ सवैया ३५ ॥

ऊधौ के मित्र बड़े भगवान, सो प्रीति करी जा की रीति बखानी
भोजन साथ करैं बहु भाँति, सो ऊधौ बिना सुख नेक न मानी ॥
कृष्न गये तजि देंह निवास, सो ऊधौ ने रोइ दियौ सोइ जानी ॥
बद्रिका जाइ के तप्प कर्यौ, सोइ रोइ कै तप कौ कीन्ह निदानी ॥
जो कहुँ कृष्न से मुक्ति हुती, तो करौ तप कष्ट कहौ केहि कामी ॥
तुलसी अधि बूझि कै बात लखौ, तुम्हरी गति मुक्ति की कैसे बखानी ॥

---

(१) राजा नृग ने जो साठ हज़ार गऊ रोज़ दान देते थे एक गऊ को धोखे में दो ब्राह्मणों को दान कर दिया, जब दोनों ब्राह्मण झगड़ते हुए राजा के निकट न्याव को आये तो राजा सोच में दोनों की बात पर सिर हिलाता रहा जिस पर एक ब्राह्मण ने सराप दिया कि तुम गिरगिट की भाँति सिर हिलाते हो सो वही योनि पाओगे। इस सराप से राजा नृग को गिरगिट योनि मिली और एक अन्धे कुए में पड़े रहे जब कृष्णावतार हुआ तब श्रीकृष्ण ने अपना चरण छुआ कर उसका उद्धार किया।

॥ सवैया ३६ ॥

भागवत के मत्त की गत्ति कहैाँ, सो परीछित को सुकदेव सुनाई॥
ब्यास कथे जो पुरान बिधी, ता के पीछे संबाद कहैा कस गाई ॥
ब्यास प्रथम्म अरम्भ कियैा, सुकदेव परीछित ग्रंथ म लाई ॥
पुरान लिखे भये ब्यास मुनी, ता के पीछे परीछित को समझाई
पंडित या की बिधी कहैा भाई, सो तोल कहैा तुलसी को बुझाई

॥ सवैया ३७ ॥

जो तुम पंडित ज्वाब कहैा, सुकदेव सुनावन पीछे गयैा ॥
ब्यास पुरान मैं पहिले कही, सो त्रिकाल के तेज से भाखि कह्यौ॥
पंडित ता कैा जुवाब सुनैा, सुकदेव चले मोह ब्यास भयैा ॥
मोह भयौ सँग लारे लयौ, तबही जड़ बृच्छ ने ज्ञान दयैा ॥
या को कहैा सुन भाख बिधी, सो त्रिकाल कहैा तब कौंह हिरानो
तुलसी तब की बिधि छान कहैा, सोइ जानि परै या की बूझ मिलावैा ॥

॥ सवैया ३८ ॥

एक बिचार की और कहैाँ, ता की ठीक बिधी बिधि भाखि सुनावा ॥
जबही रच साज बैराट भयैा, तब देव उठावन कैसे कै आवा॥
ता की बिधी का बिचार कहैा, सो पहिले जो देवन कौन बनावा
और पुरान जो और कहै, सोइ ब्रह्मा को कस्यपदेव बतावा ॥
या की कहैा सही कौन बिधी, सो बैराट को देव उठावन आवा
तुलसी बिधि तोल के बात कहैा, जो ब्रह्मा के पुत्र से देव कहावा

॥ सवैया ३९ ॥

पंडित एक बिचार कहैाँ, जोइ बात सुन्यौ ता को भर्म समाई ॥
कहत तुम्हीं नित बात पुनी, भागवत्त सुनी जिन मुक्ति का पाई
ऐसी बिधी बिधि भाखि कहैा, पुनि वाहू को भूत की जोनि बताई
जोई पुरान सुनै नित कान, किरिया करि वाही को भूत बनाई॥
पुरान सुनै सोइ भूत बनै, भागवत के मत्त की साखि जो जाई ॥
एक बिचार कहैा तुम सार, तुलसी बिधि सहज मैं भाखि सुनाई॥

॥ सवैया ४० ॥

और जो एक बयान करौं, सुन पंडित प्रेम से कान लगाई ॥
गऊ करन्न बरन्न कहौं, धुँधकारी कथा विधि जाइ सुनाई ॥
भागवत के मत्त की साखि सुनौ, सोइ भूत भयौ ऐसी कहत बुझाई
उठै कथा मास फुटै तब बाँस, छुटै तब भूत से मुक्ति बताई ॥
ऐसी बिधी बिधि भाख कहौ, ये तो ब्यास लिखी तब ग्रंथ बनाई॥
ग्रंथ लिखे भये ब्यास मुनी, धुँधकारी सुनी जा के पीछे जो जाई॥
ये तो आगेइ ब्यास ने भाखि लिखी, सो पुरान बने जा के पाछे सुनाई ॥
धुंध जो कारी तौ पहिले लिख्यौ, सो वा की कहौ विधि मोहिं बताई ॥
सातहि पोरि कौ बाँस कह्यौ, सोइ बाँस को भेद बतावौ आई ॥
जंगल के बीच में बाँस बसै, की कहौ बाँस जो और है भाई ॥
या कौ बिचार करौ मन मैं, तुलसी कहै बूझ सो सूझ मैं लाई

॥ सवैया ४१ ॥

एक प्रसंग बिधी बिधि बात, कहौं सोइ बूझि कै भेद बतावौ॥
एक बयान सुनौ सोइ कान, सो गूलर फल ब्रह्मंड सुनावौ ॥
ब्यास कही कथ ग्रन्थ सही, सोइ अंड को गूलर खोज लगावौ॥
कौन ठिकाने को ठाट कह्यौ, सो बैराट भयौ ता मैं भेद सुनावौ॥
ता की बिधी भिनि भाखि कहौ, तुलसी हिये आँखि से देखि बुझावौ

॥ सवैया ४२ ॥

बेदांत कहै जग ब्रह्म मई, सो ईसुर कर्म मीमांसा ने गायौ ॥
कथन पातंजल जोग कह्यो, सो बिसेसिक[१] सार समय जो बतायौ
न्याय जो गाइ करतार कहै, सोइ सांख्य ने नीत अनीत सुनायौ
तुलसी षट रीति प्रपंच करी, सो कस्यौ जिन जक्त को जानि बुड़ायौ

॥ दोहा ॥

ज्ञानी पंडित भेष सब, परमहंस ब्रह्मचार ।
ये सब भूले षट महीं, कर्म भूप की लार ॥१॥

---

(१) मुं० दे० प्र० और हमारी दोनों लिपियों में "बिसेसर" लिखा है ।

परमहंस बेदांत से, ब्रह्म जो कहत लबार ।
पातंजल जोगी ठगे, जक्त मिमांसा लार ॥२॥
ज्ञानि बैरागी पंडिता, समया लिखैं निहार ।
और कहौ का को कहौं, बहे भर्म की धार ॥३॥
पंडित भूले बेद मैं, सास्तर पढ़त पुरान ।
ये गति मति है काल की, बूझै संत सुजान ॥४॥
पंडित बूझो भेद को, देखि लखौ पद सार ।
लार ग्रंथ पढ़िके कहो, ये सब झूठ पसार ॥५॥
अगम निगम से भिन्न है, पंडित लखा न जाइ ।
संत मिलै कोइ महरमी, पल मैं देत लखाइ ॥६॥

॥ चौपाई ॥

या की पंडित कहौ बुझाई । भया बैराट नास कस भाई ॥
पाँच तत्त का रहा पसारा । नास बेद कस कहत पुकारा ॥
या को भाखि सुनावो लेखा । अस बेदन कस कही बिबेका ॥
या की विधी बतावो भाई । जा मैं लेखा लगै बनाई ॥
या की निसा भिन्न भिन दीजे । पुनि घर गवन आपने कीजे ॥
हम परलय विधि कही बनाई । या की बूझ समझ मैं लाई ॥
और अनेक भाँति कहा लेखा । ज्वाब स्वाल लखि कहो बिबेका ॥

॥ सोरठा ॥

पंडित कहौ बिचार, वार पार परचा लखौ ।
बेद पुरान नहिं सार, अगम ज्ञान कस लखि सकै ॥

॥ चौपाई ॥

संत मता सुन अगम अपारा । ब्रह्मा बेद न पावै पारा ॥
और बैराट ठाट भगवाना । संत मता उनहूँ नहिं जाना ॥
संत रीति गति सब से न्यारी । कहि कहि थाके नेति पुकारी ॥
तुम ने बेद बेद ठहरावा । बेद नेति कहि भेद न पावा ॥

साखि ताहि की करौ बखाना । बूझ नहीं हिये तिमिर समाना
जल जल रहा कहौ अस भाई । अस अस बेद कहै बिधि गाई ॥
जल तत रहा बूझ अस ज्ञाना । थल बिन जल केहि बिधि ठहराना

॥ सोरठा ॥

ऐसो बूझ बिचार, लार तत्त जल थल रहा ।
जल थल तत्त मँझार, दुइ. तत के जिव सब रहे ॥

॥ चौपाई ॥

नौ लख जीव जाति जल माईं । पिरथी लाख सताइस भाई ॥
ये सब जल थल जीव समाना । अछै बृच्छ कस रहे भगवाना ॥
थल बिन बृच्छ रहा कस भाई । बिन थल बृच्छ बहा जल माईं ॥
और जीव जल माहिँ रहाई । अस भगवान रहे उन माईं ॥
थल बिन बृच्छ कैान बिधि रहिया । अछै बृच्छ पुनि जल मैं बहिया
और जीव रहे जल माईं । तस भगवान रहे तेहि ठाईं ॥
ब्रह्मा बेद कहाँ तब राखा । जल मैं कागद रहै न आँका ॥
पुनि आगे का कहौ बिबेका । तेहि पीछे भयो कस कस लेखा
हमरे मन मैं संसय आई । सो नैनू तुम कहौ बुझाई ॥

॥ उत्तर नैनू पंडित ॥

॥ चौपाई ॥

ऐसो बेद कहत गोहराई । सास्त्र पुरान कहै सब गाई ॥

॥ प्रश्न तुलसी साहिब ॥

जल मैं कागद रहा न होई । परलय माहिँ बचा नाहिँ कोई ॥
परलय ब्रह्मा बचा न भाई । ये बेदन कस कस गोहराई ॥

॥ उत्तर नैनू पंडित ॥

स्वाँसा माहिँ बेद तब रहिया । तिन सब यह बरतंत सुनैया ॥

॥ प्रश्न तुलसी साहिब ॥

स्वाँसा पवन तत्त जब भयऊ । पवन तत्त जिव जग सब रहेऊ ॥
तुम तौ कहौ पवन तत नासा । ज़ल पुनि पवन तत्त रहा बासा ॥

कस बैराट कहौ तुम नासा । पानी पवन रही पुनि स्वाँसा ॥
आई स्वाँस कस बिना अकासा । या कौ भाखौ भेद खुलासा ॥
बिना अकास स्वाँस नहिं आवै । या की बिधि हम प्रगट सुनावैं ॥
देखौ निरखि गगन को भाई । जहँ से स्वाँस सिमटि सब आई ॥
पिंड ब्रह्मंड बिधि एक बखाना । तन मैं स्वाँसा गगन समाना ॥
गगन रहै स्वाँसा भइ नासा । बेदन कस कस कहा तमासा ॥
जल पिरथी बिन केहि बिधि रहिये । नैनू या की समझ सुनैये ॥
जल रहिया तुम ऐसी भाखी । स्वाँसा पवन बतावौ साखी ॥
तौ अकास होइहै पुनि सोई । जल पुनि रहै प्रिथी पुनि होई ॥
जल पवना पुनि गगन अकासा। रही अगिनि चारौ मैं बासा ॥
तुम कहौ पाँच तत्त कर नासा। ये बिधि पाँचौ रहे निवासा ॥
तुम कहिया इक जलहि रहाई । ऐसे बेद कहै गोहराई ॥
पाँच तत्त से जग रहा सोई । कहौ या की कस परलय होई ॥
जल के रहे सभी पुनि रहिया । झूठी सकल बेद बिधि कहिया ॥
एक तत्त कधी रहत बतावौ । पाँच तत्त कधी नास सुनावौ ॥
ऐसा कस कस ज्ञान तुम्हारा । या कर कहौ भेद निरबारा ॥

॥ उत्तर श्यामा पंडित ॥

पाँच तत्त पाँचो मैं जाई । मरना जीना ना कछु भाई ॥
जल मैं जल पवना मैं पवना । गगन मैं गगन अगिनि मैं अगिना
प्रिथी प्रिथी मैं जाइ समानी । ऐसे पाँच तत्त अलगानी ॥

॥ प्रश्न तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

ये पाँचौ पाँचौ मैं रहिया । पुनि पुनि नास कौन बिधि भइया ॥
अंडा नसि तत कहाँ समाना । ता का हम से कहौ ठिकाना ॥
कहिये तत्त कौन उपजाई । इन की आदि कहाँ से आई ॥
जब ही ठाट बैराट नसाना । तब तत रहि कहौ कौन ठिकाना ॥

कहौ तत पाँच पाँच मैं जाहीं। मरन जिवन औरै कछु नाहीं ॥
पुनि तेहि पाप पुन्य बतलावा। तुम कहौ कीन्ह दीन्ह तस पावा ॥
तीरथ ब्रत सुभ कर्म बतावौ। कहौ उन्हैं पुनि कस कस पावौ ॥
पाँच तत्त पाँचौ मैं जाई। पाप पुन्य कहौ कौन भुगाई ॥
जज्ञ करै सो स्वर्गै जाई। पाँच तत्त तौ रहै न भाई ॥
पाँच तत्त पाँचौ मैं जाई। स्वर्ग भोग कहै कौन कराई ॥
नैनू स्यामा पाँडे भाई। या की विधि बरतंत सुनाई ॥
ये सब ज्वाब बतावौ भाई। तब तुम हम से जाने पाई ॥
नैनू मन मैं गुनन्न विचारा। या कौ कहा करौं निरवारा ॥
बुधि चित मन मैं कछू न आवा। बुधि चित ज्ञान बहुत दौड़ावा ॥
एकहु ज्वाब साफ नहिं दीन्हा। बुद्धि गई मानौ मतिहीना ॥
बोले न ज्वाब काँप अस आई। या की कौन बिधी समझाई ॥
जौन जौन बरतंत सुनावा। तौन तौन सुपने नहिं पावा ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी पूछै बात, खोल बुद्धि कछु कछु कहौ।
हिये माहिं खिसियात, सूझ बूझ आवै नहीं ॥

सम्बाद तुलसी साहिब और माना पंडित का

॥ चौपाई ॥

पंडित रहैं तीन से साठा। देखे एक एक से भाठा ॥
तिन मैं इक पंडित रहे माना। ता घर रहैं बहुत से ग्रामा ॥
मन मैं मस्त विद्या बिधि माहीं। बहुत पढ़े मद कहा न जाई ॥
माया मद विद्या मद दोई। ब्राह्मन जाति पाँति मद सोई ॥
चारि बरन मैं ऊँच बखाना। ता मद का कहौ कौन ठिकाना ॥
माना पंडित का कहौं कैसा। सब भैंसिन मैं मानो भैंसा ॥
बोले बचन मान मद मारे। काल न चीन्है साँझ सबारे ॥
कासी नगर छत्र कर थापा। मान मई सूझै नहिं आपा ॥

ज्ञान बिधी बिद्या बल ठाने। आदि अंत की खबर न जाने॥
माना पंडित बोले बानी। बेद बिधी इन एक न जानी॥
बेदन कही आदि चलि आई। ता को छाँड़ि अंत कहँ जाई॥
बेद से कौन बात है न्यारी। ता को ढूँढैं हाथ पसारी॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

कहै तुलसी तुम सीतल होई। भाखैं भेद बेद कहै जोई॥
बाहिर भेद नहीं कछु गावा। बेद कहै हम भेद न पावा॥
नेतहि नेत बेद गोहरावा। ऐसी कौन बस्तु नहिं पावा॥
ता कर मन में करौ बिचारी। उन से कौन बस्तु रही न्यारी॥
निराकार को नेति पुकारा। जोति सरूप होत उँजियारा॥
ऐसे बेद कहै समझाई। कहै बेद हम भेद न पाई॥
ता की महिमा साखि बखाना। बेद कहै हम मरम न जाना॥

॥ सोरठा ॥

माना मन में रोस, तुलसी से पूछै सबै।
आदि जगत की बेद, सो तुलसी बरनन करौ॥

॥ चौपाई ॥

कहै तुलसी सुन माना बाता। बेद बिधी बिद्या बिख्याता॥
सब पहिले संसार रचाना। ता के पीछे बेद पुराना॥
अंडज पिंडज उषमज खाना। अस्थावर चर अचर बखाना॥
चारि लाख चौरासी धारा। जब जग का था सकल पसारा॥
जा के पीछे बेद रचाना। ता कौ परथम कीन्ह बखाना॥

॥ प्रश्न माना पंडित ॥

॥ चौपाई ॥

कहै माना तुलसी सुन बानी। ये तो तुम ने कूर बखानी॥
जग के पीछे बेद बतावा। यह हमरे मन में नहिं आवा॥
तुम तो कहो जगत है पहिले। पुनि फिर रचा बेद का खेले॥

ऐसी बात अनीति बखानी। अब सुनियै हम से सहदानी ॥
कहै बैराट रूप भगवाना। नाभि कँवल ब्रह्मा उतपाना ॥
तिन पुनि बेद चारि रचि लीन्हा। ऋगु और साम जजुर को कीन्हा
और अथरवन कीन्ह बनाई। ता पीछे सृष्टी उपजाई ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

पंडित माना सुन बिधि बाता। या की कहैं सकल बिख्याता ॥
अब मैं कहैं सत्त सत भाई। चित दे सुनियो कान लगाई ॥
अब कहैं अगम निगम गति भाखी। वेदन में मिलिहै नहिं साखी
ब्रह्मा बिस्नु महेस न रहिया। नहिं बैराट निरंजन भइया ॥
दस औतार नहीं थे भाई। पाँच तत्त नहिं देही पाई ॥
आदि अंत मध कछू न होती। अकथ कथा की भाखैं पोथी ॥
अब कहैं आदि अंत की बानी। भाखैं आदि भेद सहदानी ॥
पिरथम पुरुष अनाम अकाया। रहै नहीं बैराटी माया ॥
जिन से सत्त नाम भया जाना। चौथा पद सोइ संत बखाना ॥
जहँ सोइ सत्तनाम अस्थाना। सत्त लोक की करैं बखाना ॥
सत्त लोक से निरगुन आया। आदि अंत का भेद सुनाया ॥
जा सुत सोल्हा निरगुन होई। ता की बिधि भाखैं सुन सोई ॥
चंद न सूर गगन नहिं तारा। धरति न पानी पवन अकारा ॥
सेस कुरम नहिं दस औतारा। आदि अंत नहिं कीन्ह पसारा॥
ब्रह्मा बिस्नु वेद बिधि नाहीं। बिधि बैराट रचौ नहिं जाई ॥
तब नहिं बेद बेद का करता। रूप रेख बिन रहै अकरता ॥
निरगुन पुत्र पुरुष को सोई। ता कर नाम निरंजन होई ॥
चौथा पद सतनाम दयाला। ता कर पुत्र निरंजन काला ॥
जिन पुनि तप कीन्हा बहु ध्याना। सत्त नाम जिन निजकर जाना
उन माँगा होइ दीन अधीना। तीनि लोक ता कै पुनि दीन्हा ॥

धरती नीर पवन असमाना । ता से रचिया सकल बिधाना ॥
पाँच तत्त वाही पर आवा । पुनि तिन रचि बैराट बनावा ॥
जोती तेज पुरुष से आई । जीव अंस दै ताहि पठाई ॥
जोती निरगुन के ढिग आई । रति कर भोग कीन्ह पुनि ताही ॥
तीनि बार रति कीन्हा जाई । ब्रह्मा बिस्नु कीन्ह उपजाई ॥
तीजे संभू छोटे भाई । येही बिधि इनकी आदि बताई ॥
ता पीछे जग कीन्ह पसारा । चारि लाख चौरासी धारा ॥
सृष्टि भई तब अगम अपारा । जोति निरंजन जाल पसारा ॥
सुषम बेद स्वाँसा से आवा । आदि भेद उनहूँ नहिं पावा ॥
सुषम बेद की छाया लीन्हा । ब्रह्मा बेद बनाइ जो कीन्हा ॥
अब या की मैं बिधी बताऊँ । चारि बेद की आदि लखाऊँ ॥
जग संसार थपा था पहिले । पुनि फिरि रचा बेद का खेलै ॥
अब या की हम बिधी बताई । माना सुनियै चित्त लगाई ॥
धरती बैल किसानी होई । सन कर खेत भया पुनि सोई ॥
बृछ बढ़ई जब काटा होई । हल बनाइ धरती पुनि बोई ॥
डारा बीज भयौ सन साजी । रसरी कीन्ह ताहि की भाँजी ॥
भया टाट तब किया बिछाना । सड़ा टाट तब हुआ पुराना ॥
ता को जाइ कागदी लीन्हा । कूट काट कर सूधा कीन्हा ॥
नदी माहिं पुनि धोय सँवारा । तब कीन्हा ता का बिस्तारा ॥
गाय भैंस जब होइहै भाई । पुनि कागद की बिधी बताई ॥
चूने दिवाल लेप ठहराना । तब कागद पर बेद लिखाना ॥
जग मैं नद्दी नाला होई । टाट बनाइ कागदी धोई ॥
कागद पीछे बेद लिखाया । सो ता को तुम आदि बताया ॥
तिल्ली तेल पेल जब लीन्हा । रुई कपास की बाती कीन्हा ॥
अगिनि तत्त जब होइहै भाई । दिया बारि काजर भइ स्याही ॥
बन बरुई से कलम कर लीन्हा । ब्रह्मा बेद लिखन जब कीन्हा ॥

चारि बेद की आदि बताई। जो ब्रह्मा से उपजे भाई ॥
ता कर नाम गती गुन गाऊँ। पिरथम साम बेद तेहि नाऊँ ॥
ऋग्ग जजुर कै भाखि सुनाऊँ। चौथा अर्थ अथरवन गाऊँ ॥
ऐसे चारि बेद बतलावा। ता की आदि बिधी बिधि गावा ॥
ता से सास्तर भये पुराना। करमी जीव बहुत लपटाना ॥
पूजैं पानी पत्थर देवा। तीरथ बरत बताई सेवा ॥
ऐसे जीव खानि भरमावा। आदि अंत का मर्म न पावा ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी कहै पुकार, माना पंडित सब सुनौ।
रहा जो होइ सम्बाद, कहौं बहुरि जो फिरि कहौ ॥

॥ छंद ॥

कहौं यह बिधि गाई तुमहिं सुनाई। आदि अंत सब भाख भई ॥
बेदन बिधि चारी कहौं पुकारी। सिव ब्रह्मा की आदि कही ॥
निरगुन मति गाई जोति सुनाई। जो रचना ब्रह्मंड मई ॥
सिम्रित समझाई पुरान सुनाई। अस अस सब की आदि भई ॥

॥ दोहा ॥

तुलसी कहै माना सुनौ, स्यामा नैनू बात।
तीनौं मिलि यह बिधि कहौ, पूछौं सब बिख्यात ॥

॥ सोरठा ॥

दसौ बेद की आदि, जो तुम से मैं भाखिया।
कहा पाँच बिख्यात, रहे पाँच सो तुम कहौ ॥

॥ चौपाई ॥

सुषम बेद बिधि सबहि सुनाई। साम जजुर और ऋगू बताई ॥
और अथरवन भाखि सुनावा। ऐसे पाँच बेद बिधि गावा ॥

रहे पाँच सो भाखि सुनावैा । तिन की आदि अंत समझावैा॥
और संतनाम आदि हम कहिया। कहैा निरगुन ता से कम भइया॥
और जोति की बिधी बताई । ब्रह्मा बिस्नु कैान बिधि आई॥
कैान बिधी से बेद लिखाही । जग तब कागद रहै न स्याही॥
ऐसी भिन्न भिन्न दरसैहैा । तब तुम हम से जाने पैहैा॥
सब जग लूटि लूटि कर खाई । अब नहिँ छोड़ै तुलसी गुसाँई॥
नैनू स्यामा माना पाँडे । ये सब कहैा बिधी बिधि माँडे॥
बिन कहे ज्वाब न जाने पैहैा । कासी ढिंढोरा पुनि पिटवैहैा॥
जग का पुन्य दान बिधि साजा। सो सब अपने पेट के काजा॥
तीरथ थापि चलाई राही । ये सब अपने पेट के ताईं॥
बितीपात परदोस बताई । ये सब झूठी बात चलाई॥
एकादसि चैादस और अट्ठमी । ऐतवार मंगल और नैामी॥
तीज चतुरदसि करवाचैाथी । झूँठे बरत बतावै पोथी॥
जो कोइ करै बरत से प्रीती । ये सब कर्म खानि की रीती॥
जो कोइ बर्त राह चलै भाई । पुरखा तास नर्क मेँ जाई॥
गंगा जमुना चारैा धामा । ये सब जेह भव की खाना॥
कातिक और बैसाख अन्हावैँ । ये सब नीच जोनि मेँ आवैँ॥
देवल देव पखान पुजावै । ये सब भैासागर भरमावै॥
राम राम जो जपै अघाई । जा कैा जनम अकारथ जाई॥
सिव पूजै और देवी पूजै । नीच होइ नीचा मत सूझै॥
कथा पुरान जो सुनै अघाई । बार बार भैा भटका खाई॥
जो जो बाम्हन कहै बिचारा। काल खानि ये जम की जारा॥
ऐसे पंडित जाल बिछाई । कोई जीव बचन नहिँ पाई॥
अज्ञानी को बरत बतावा । ज्ञानी को पोथी समझावा॥
अस अस पंडित डारी जारा । ता से न उतरै भैा के पारा॥
ता कैा अब बरतंत सुनाऊँ । भागवत की बिधि मैँ अरथाऊँ॥

पिरथम पंडित योँ कर भाखैं। भागवत बिना मुक्ति नहिँ राखै॥
और पुनि भाखि कहै परभावा। जिनजिनकीन्हातिनतिन पावा॥
ऐसो कहि कहि कै समझावै। या बिधि सकल जीव भरमावै॥
माना स्यामा तुमहिँ सुनाई। नृग राजा परसंग बताई॥
ता को पुन बिधि बिधि अनुसरई। प्रात दान गोसठि सो करई॥
तिरपित बाम्हन भोजन देवै। यहि बिधि पुन्य जज्ञ सोइ सेवै॥
ऐसे पुन्य बरत तेहि ठाना। भागवत ऐसो करत बखाना॥
दई गऊ बाम्हन को आई। सो गोसठि मैँ आन समाई॥
राजा भूलि और को दीन्हा। बाम्हन बाम्हन झगरा कीन्हा॥
पुनि तिन स्राप ताहि को दीन्हा। गिरगट देँह राइ ने लीन्हा॥
याही पुन्य की करो बड़ाई। अंत जनम गिरगट को पाई॥
भोजन पुन्य कीन्ह बहुतेरा। किंचित सँग न चला तेहि केरा॥
इतना पुन्य कीन्ह उन भाई। और गया पुनि अंधा चाही[1]॥
सर्व गया चौथाई पावै। तौ हमरे परतीती आवै॥
चौथाई मैँ कछु नहिँ पावै। ऐसे बाम्हन पुन्य करावै॥
ऐसा पुन्य कीन्ह तेहि राजा। ता के आयो कछू न काजा।
जिन जिन को तुम पुन्य कराई। वे बपुरे कैसे करि पाई।
जग अंधा तुम हूँ पुनि अंधा। या से मचि गया अंधाधुंधा।
मूए पुन्य बतावैं पावै। कोई मुए की खबर न लावै।
झूठहि झूठ रचा सब ठाटा। ता से जगत न पावै बाटा।

॥ उत्तर माना और स्यामा पंडितोँ का

॥ चैापाई ॥

माना स्यामा योँ करि बोले। तौ पुनि रचा झूठ का खेले।
व्यास भागवत कही बखाना। सुनै मुक्ति जो होइ निदाना।
सुनि या की मैँ साखि बताऊँ। सुकदेव कह्यौ परीछित राऊ।
सपता सात दिवस उन भाखा। भागवत कहै सुनौँ तुम साखा।

---

(१) अंधा या सूखा कुआ।

॥ प्रश्न तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

भागवत तौ पिरथम्म लिखाना। परीछित सुकदेव नाम बखाना॥
ये पिरथम कहि ग्रंथ बनावा। सुकदेव नृप दोउ ता मैं आवा॥
सुकदेव राजहिं कथा सुनावा। ऐसे ब्यास भागवत गावा॥
ब्यास भागवत लिखी बनाई। पुनि सुकदेव राय समझाई॥
ये तौ ब्यास पहिले लिखि गयेऊ। भागवत मैं बरनन करि कहेऊ॥
को सुकदेव परीछित होई। ता की मुक्ति बताई सोई॥
पहिले ब्यास ने कथा बनाई। पीछे सुकदेव नृपहिं सुनाई॥
सुकदेव कथा सुनावन गइया। तब परीछित की मुक्ती भइया॥
ब्यास मुक्ति पहिले लिखि गाई। ता पीछे सुकदेव सुनाई॥
कौन परीछित मुक्ती पाई। ये तौ बिधी मिली नहिं भाई॥
ब्यास ग्रंथ मैं पहिले गावा। तुम ने ये सुकदेव बतावा॥
वो नृप कौन परीछित होई। ता की ब्यास मुक्ति कहि सोई॥
ये तौ पीछे जाइ सुनाई। ब्यास ग्रंथ लिखि पहिले गाई॥

॥ उत्तर माना पंडित ॥

॥ चौपाई ॥

तब माना तुलसी से भाखी। या की बिधी कहौं सुनु साखी॥
थे औतार ब्यास तिरकाली। अगमन कही ध्यान ब्रत ताली॥
या से अगमन भाखि सुनाई। येहि बिधि ब्यास भागवत गाई॥
जो तिरकाल लखै पुनि भाई। अगम भेद सोइ भाखि सुनाई॥

॥ बचन तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

माना यह बिधि बरनि सुनाऊँ। या की पहिलो साखि बताऊँ॥
महादेव ये मंत्र सुनावा। बीजक पारबती मन लावा॥
सब पंछिन कौ दीन्ह उड़ाई। सुवा अंड इक रहा छिपाई॥

बन पंछी सब जाति उड़ाई। सुवा अंड इक रहा लुकाई॥
तबै मंत्र इक भाखि सुनावा। पारवती सुनि निद्रा आवा॥
पुनि सुनि सुवा हुँकारी दीन्हा। महादेव कोप तब कीन्हा॥
सुवा भागि व्यास त्रिय गर्भा। गर्भ रहा बिधि भाखौं सर्बा॥
बारा बरस गर्भ म रहिया। यह पुरान बिधि ऐसी कहिया॥
गर्भ बढ़ा तिरिया अकुलानी। निकसै नहीं मंत्र बिधि जानी॥
गये भगवान तीर पुनि व्यासा। व्याकुल तिरिया गर्भ तिरासा॥
साँघ भाव जस राई भेवा। माया भिन्न भये सुकदेवा[1]॥
नारि उठाइ हाथ मैं लीन्हा। तप को चले कहीं अस चीन्हा॥
व्यास मोह उपजा दुख लागा। पुत्र पुत्र कहि पीछे भागा॥
पुत्र मोह व्याकुल बहु क्रोधा। तब पुनि कीन्ह बृच्छ ने बोधा॥
तब तिन का तिरकाल हिराना। गई बुद्धि मति मोह भुलाना॥
ता को कहौ अगम तिन भाखा। बुद्धी गई मोह अभिलाखा॥
सुकदेव परमहंस नाहिं जाना। कस कस कीन्हा अगम बखाना॥
तिरिया गर्भ पीर के काजा। व्याकुल सोग मोह उपराजा।
तिरकाली भगवान बतावै। चौबीसन में भाखि सुनावै।
सुन माना यह भेद बताई। सुनि कै समझि लेउ मन माईं।
अब परिछित की बूझौ बाता। और सुकदेव सुनौ बिख्याता।
सुकदेव सप्ता पीछे कीन्हा। परिछित कथा सुनायौ चीन्हा।
कथा सुनावन पीछे गयेऊ। मुक्ती तौ पहिले होइ गयेऊ।
ये सब झूठ झूठ सी होई। अस अस समझि परा बिधि सोइ
सुने सुने मुक्ती बर होई। तौ सब जग बूड़ै नाहिं कोई।
सुने सुने मुक्ती जो पावै। गुड़ गुड़ कहे मीठ मुख आवै।
ता का मैं धरतंत बखानूँ। पंडित तुम सुनियौ दै कानूँ।

---

(१) जितनी देर साँप की नोक पर राई ठहर सकती है अर्थात तत्काल शुकदेव जी माता के गर्भ से बाहर आये।

माल दिसावर तेजी होई। चिट्ठी मैं लिखि भेजा सोई॥
चिट्ठी सुनि कर माल लदावा। ता का नफा तिनै पुनि पावा॥
पढ़े सुने कछु हाथ न आवै। ज्यौं बैपारी रीता जावै॥
सुनि कर करै सोई है गाजी। सुनि सुनि मरि गये कोटिन पाजी॥
मुए मुक्ति की खबर बतावै। मूए जनम काग कै पावै॥
ये पंडित तुम्हरो ब्यौहारा। जनम जात जूवा जस हारा॥

॥ उत्तर माना पंडित ॥

॥ चौपाई ॥

मुक्ती हमरे हाथ न सोई। जो भगवान करै सो होई॥
मुक्ती तौ भगवान से पावै। जो कोइ उनके सरनै जावै॥
हम अपंग मारग नहिं जाना। पल मैं मुक्ति करै भगवाना॥

॥ श्लोक ॥

मूकं करोति वाचालं पंगुं लंघयते गिरिम्।
यत् कृपालमहं बंदे परमानंद माधवः॥[1]

हम तो हैं उनकी सरनाई। तन मन बचन परे उन पाँई॥
हमरे नेत्र दोइ पुनि होई। प्रभु के नेत्र अनेकन सोई॥

॥ श्लोक ॥

द्वै द्वै लोचन सर्बानां बिद्या त्रय लोचनं।
सप्त लोचन ज्ञानीनां भगवान अनंत लोचनं॥[1]

हम तौ उन चरनन सरनाई। अरजुन ऊधौ पार लगाई॥
जैसी ऊधौ की उन कीन्हा। हमहूँ सरना उनकी लीन्हा॥

॥ बचन तुलसी साहिब ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी कहै पुकार, ऊधौ की भइ सो सुनौ।
अरजुन सुनौ बिचार, वे लबार कैसी करी॥

---

(१) यह दोनौं श्लोक मु० दे० प्र० की पुस्तक मैं नहीं हैं।

॥ चौपाई ॥

ऊधो के मित्र बड़े भगवाना । एकादस मेँ कीन्ह बखाना ॥
जिन की मित्र भाव की करनी । प्रीति अधिक कछु जाइ न बरनी ॥
जब भगवान धाम कियो गौना । भाखा ऊधो से कहौँ जौना ॥
तुम तप करौ बद्रिका जोई । तब ऊधो ने दीन्हा रोई ॥
जब उन अपने प्रान गँवाये । तब ऊधो तप करने आये ॥
उन को मुक्ति न दीन्ही भाई । तुम पुनि मुक्ति कहाँ से पाई ॥
मित्र प्यार कीन्हा बहुतेरा । नहिं उन उनका कीन्ह निबेरा ॥
जो उन की मुक्ती होइ जाती । तौ तप को जाते केहि भाँती ॥
उन की मुक्ति न कीन्ही भाई । तुम भूले केहि लेखे माईँ ॥
और अरजुन की कथा सुनाई । उनके बड़े मित्र थे भाई ॥
उन बंधुन से जुद्ध करावा । बन्धु मराइ पाप सिर लावा ॥
जज्ञ करा पुनि पाप न छूटा । जबै कृष्न की देँही टूटा ॥
उन से कहा हिवारे जावौ । ता मेँ देँही जाइ गरावौ ॥
पुनि सो परे नर्क के माईँ । गीता मेँ देखौ तुम जाई ॥
अरजुन मुक्ति न पाई भाई । माँगौ उन से केहि बिधि जाई ॥
कृष्न काल सब जग को खाई । ता कौ जपौ बहुत मन लाई ॥
ऐसी तुम्हरी मती हिरानी । काल से माँगौ मुक्ति निसानी ॥

॥ दोहा ॥

सुनि पंडित मन मेँ गुनो, तुलसी कहत प्रमान ।
ये तौ दरसै यहि बिधी, गीता करत बखान ॥

॥ प्रश्न माना पंडित ॥

॥ चौपाई ॥

तब माना बोले कर जोरे । ये तौ फुरि आई मन मोरे ॥
ऊधो एकादस मेँ गाये । गीता मेँ अरजुन समझाये ॥
मुक्ति न भई तबै तप कीन्हा । येहि बिधि से मोहिँ भयो यकीना ॥

माना पंडित बिनती लाई । इक संसय मोरे मन आई ॥
भागवत सुने मुक्ति होइ जाई । अस अस साख सनातन गाई ॥
सो तुलसी मोहिं समझ सुनावो । या की समझ बूझ समझावो ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

सुनु माना बरतंत बताऊँ । भागवत बिधि सब साखि सुनाऊँ ॥
पहिले पंडित करत बखाना । भागवत मति बिन मुक्ति नँ जाना ॥
सुनते सुनते जनम बिताना । मुए भूत का किया बिधाना ॥
पुनि घट साध बनायो साजा । तबहुँ न भयौ मुक्ति को काजा ॥
किरिया करिके पिंड बनाई । तबहुँ न उन मुक्ती को पाई ॥
गंगा माहिं उड़ाई छारा । तबहुँ न भया जीव निरबारा ॥
दसवाँ करिके मूछ मुड़ावा । तबहुँ न मुक्ति गती को पावा ॥
बाम्हन भोजन पंच खवाये । मुक्ति बाट तबहूँ नहिं पाये ॥
गया जाइ कै पिंड सँवारा । तऊ न पाया मुक्ती द्वारा ॥
मास पाख छैमासी बरसी । मुक्ति न भई खानि गति परसी ॥
ये सब झूठ मुक्ति की आसा । मुक्ति रहै संतन के पासा ॥
इतनी मुक्ति जुक्ति बतलावै । तबहुँ न प्रानी मुक्ती पावै ॥
अस बिधि कहै भागवत भाई । मुक्ति बताइ के भूत बनाई ॥
और अनेकन जतन करावै । भौ मैं जाइ मुक्ति नहिं पावै ॥
अस अस भाखा झूठ पसारा । मुक्ति न होइ न होइ उबारा ॥

॥ प्रश्न माना ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी स्वामी मुक्ति न पावा । ये पुरान झूठे गोहरावा ॥
सिम्रित सास्तर झूठ बनावा । ये तो आदि अंत चलि आवा ॥

॥ बचन तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

माना सुनियौ काल पसारा । वो दयाल पद इन से न्यारा ॥
ब्रह्मा बिष्नु काल की जारा । इन सब कीन्हा झूठ पसारा ॥
कर्म कराइ जगत बौराया । ता से आदि अंत नहिं पाया ॥

॥ प्रश्न माना ॥

॥ चौपाई ॥

माना कहै सुनु तुलसी स्वामी । तुम तौ औरइ और बखानी ॥
मुख से बचन जोई जोइ भाखा। भिनि भिनि वा की दीन्ही साखा
जो जो मुख से भाखि बखानी । ता की निसा दीन्ह सहदानी ॥
जो जो बात कही मुख गाई । सो सो दरपन सी दरसाई ॥
एक भरम मोरे मन आवा । ता को स्वामी भाखि सुनावा ॥
तीरथ धाम बरत अरु पूजा । या मैं मो कैा कछू न सूझा ॥
पुनि स्वामी इक पूछौं बाता । तीरथ मैं कछु आवै न हाथा ॥
न्हाय धोय कछु हाथ न आया। तीरथ सब बिधि झूठ बनाया ॥

॥ बचन तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

सुनु माना तोहि भाखि सुनाऊँ। या की बिधी बिधो दरसाऊँ ॥
कर्म ख्याल सब जाल पसारा । इन सँग से चौरासी धारा ॥
लोमस ऋषी एक जो भइया । भाखा उन सब बिधि बिधि कहिया ॥
उन पुनि तीर्थ बर्त बहु ठाना । तप जप पुन्य अनेक बिधाना ॥
पितु से पूछि मुक्ति की बाता । गंगा का फल कहै बिधाता ॥
गंगा का फल भाखि सुनाई । गंगा आदि मुक्ति की दाई ॥

(लोमस ऋषि)

॥ चौपाई ॥

सहस इकादस गंगा न्हाया । जा से जोनि मच्छ की पाया ।
अनेक जीव मारि मोहिं खाया । ऐसे बहुत बहुत दुख पाया ॥

जे जे तीरथ सबै अन्हाये । जल जिव जोनि माहिँ भरमाये ॥
ऐसी कौन कौन बिधि गाऊँ । जल आसा जल माहिँ समाऊँ ॥
ऐसी जुक्ति मुक्ति बतलावौ । भौजल पार उतरि कै जावौं ॥

(पिता)

॥ चौपाई ॥

लोमस ऋषि यह सुनिये भाई । सेवा ठाकुर कीजै जाई ॥
चरनामृत ब्रत साधौ सोई । सहजै मेँ मुक्ती पुनि होई ॥

(लोमस ऋषि)

॥ चौपाई ॥

सहस बरस ठाकुर को सेवा । दूजा जाना और न भेवा ॥
बिधि बिधि ध्यान बिधी से कीन्हा । फल जोनी पाहन की लीन्हा
सेवा सिव कीन्ही बिधि भाँता । फूल पत्र जल अच्छत साथा ॥
येहि बिधि पूजा करी बनाई । अंत जोनि पाहन की पाई ॥
अनेक दिवस पाहन कर आसा । अंत तहाँ पुनि लीन्हौ बासा ॥
ऐसी कहाँ कहाँ की गाऊँ । जेहि पूजौं तेहि माहिँ समाऊँ॥

(पिता)

॥ चौपाई ॥

पूजौ तुलसी प्रीति लगाई । पीपर में जल नाओ जाई ॥
ऐसी भक्ति करै मन लाई । सहजै में मुक्ती होइ जाई ॥
एक दिया तुलसी पै लावै । सो तौ कोटि जज्ञ फल पावै ॥

(लोमस ऋषि)

॥ चौपाई ॥

सहस तीन तुलसी कौ पूजा । बृच्छ जोनि पाई येही बूझा ॥
पीपर पूजा बरस हजारा । ता की बिधि भाखौं निरबारा ॥
कानखजूरा देँही पाई । बार बार भौ में भरमाई ॥

(पिता)

॥ चौपाई ॥

एकादसी करौ तुम जाई। ता से मुक्ति सहज मैं पाई॥

(लोमस ऋषि)

॥ चौपाई ॥

सहस बरस एकादसि कीन्हा। अंत जनम माखी कौ लीन्हा॥
ऐसे बर्त कीन्ह बहुतेरा। ता का सुनु बरतंत निबेरा॥
पिरथम ऐतवार को कीन्हा। ता से जनम चील्ह कौ लीन्हा॥
मंगल बहु बिधि बरत रहाई। ता से जनम सुवर कौ पाई॥
अरु पुनि बरत तीज कौ कीन्हा। कूकर जनम ताहि से लीन्हा॥
अरु परदोस नेम से कीन्हा। खर कौ जनम ताहि से लीन्हा॥
बितीपात बिधि से बिधि कीन्हा। जनम जाइ बंदर कौ लीन्हा॥
नौमी बरत अष्टमी कीन्हा। ता से जनम घूस कौ लीन्हा॥
अरु अनंत चौदस पुनि कीन्हा। ता से जनम ऊँट कौ लीन्हा॥
और चतुरथी बरत बखाना। ता से जनम भैंस कौ जाना॥
और बरत करे भ्मार बनाई। पुनि मुक्ती हम ने नहिं पाई॥

(पिता)

॥ चौपाई ॥

पुन्य गऊ का सब से भारी। या से मुक्ती होइ बिचारी॥

(लोमस ऋषि)

॥ चौपाई ॥

गऊ दान दीन्हा बहुतेरा। जनम मिला जो बकरी केरा॥
बाम्हन भोजन दिये अघाई। बिच्छू जनम ताहि से पाई॥
और अनेक पुन्य बिधि कीन्हा। जा से जोनि जोनि दुख लीन्हा॥
जो तुम कही सभी हम कीन्हा। मुक्ति न पाई रह्यौं अधीना॥
जो जो मुक्ति जुक्ति बतलाई। सो सो सब मैं कीन्ह बनाई॥

(पिता)

॥ चौपाई ॥

लोमस ऋषि मैं कहौं बिचारा । संत सरनि से होइ उबारा ॥
तीरथ ब्रत सब झूठ पसारा । नहिं होइहै या से निरबारा ॥

॥ दोहा ॥

तुलसी कहै बुझाइ, माना पंडित सुन बिधी ।
लोमस ऋषि सम्बाद, तीरथ ब्रत बिधि यों कही ॥

॥ तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

सुन माना स्यामा और नैनू । ये सब भाखि सुनाओं बैनू ॥
तीरथ ब्रत का सुनौ बिचारा । लोमस ऋषि बिधि कीन्ह सँवारा ॥
तीरथ ब्रत का ऐसा लेखा । लोमस ऋषि ये सब करि देखा ॥
ये सुन कर पंडित घबराना । ज्वाब न आवै मती हिराना ॥

॥ माना स्यामा और नैनू ॥

॥ चौपाई ॥

तब तीनौ मिलि बोले बानी । ये बातैं तौ अकथ कहानी ॥
हम तौ बेद बिधी मैं भूला । ये सब आहि कर्म बिधि मूला ॥
तुम तौ स्वामी और सुनावा । बेद बिधी को सब समझावा ॥
सब बिधि भिन्न भिन्न कर भाखी । तब सूझा हमरी निज आँखी ॥

॥ तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

ये तुम्हरी कछु भूल न भाई । या की बिधी कहौं समझाई ॥
सत्तनाम इक साहिब स्वामी । सो निज रहै अगमपुर धामी ॥
तिन के पुत्र निरंजन होई । जा ने रची सकल बिधि सोई ॥
जोति अंस स्वामी से आवा । दोनौं मिलि बैराट बनावा ॥
आई जोति निरंजन पासा । निराकार जोती को ग्रासा ॥

जब पुनि पुरुष दीन्ह तेहि स्रापा। लच्छ जीव करिहौ नित ग्रासा
जाउ निरंजन होइहौ काला। जग मैं रचिहौ बहु जंजाला ॥
ऐसा जवाब पुरुष मुख डाला। भया निरंजन जग मैं काला ॥
तीन लोक मैं रहै समाई। चौथे मैं नहिं जाने पाई ॥
ऐसा स्राप पुरुष ने दीन्हा। काल निरंजन को अस चीन्हा ॥
पुरुष पुत्र जग जाग्रत नामा। ता को हुकम दीन्ह तेहि ठामा ॥
निरंजन काल जोति को ग्रासा। जाहि काटि आवौ हम पासा ॥
जग जाग्रत नख भव पर मारा। पटकि निरंजन जोति निकारा ॥
जग जाग्रत गये अपने धामा। रहिया जोति निरंजन ठामा ॥
दोनौं भये एक रस राजी। तीन बार भग भोगे साजी ॥
तीन पुत्र ता ने उपजावा। ब्रह्मा बिस्नु महेस कहावा ॥
ब्रह्मा पिता ध्यान को गयऊ। पायौ न पिता चारि जुग भयऊ ॥
जोती मैल काढ़ि जब लीन्हा। रच कन्या गायत्री कीन्हा ॥
कन्या ब्रह्मा लेन पठाई। गायत्री ब्रह्मा पर आई ॥
गायत्री कहै चलिये भाई। माता तुम को लेन पठाई ॥
ब्रह्मा कहै कौन बिधि जाई। पिता दरस अजहूँ नहिं पाई ॥
माता से ऐसी कहौ साखी। परस्यो पिता देख निज आँखी ॥
येहि बिधि हमरी साखि सुनाये। तब तुम्हरे सँग हम चलि जाये ॥
गायत्री अस बचन उचारी। कहिहौ झूठी साखि सम्हारी ॥
चलौ बेग माता पै भाई। माता तुम को लेन पठाई ॥
गायत्री अस बचन सुनइया। तब ब्रह्मा उनके सँग गइया ॥
दोनौं आये माता पासा। पिता भेद पूछा परकासा ॥
पिता दरस माता मैं पावा। दोनौं मिलि ये सब्द सुनावा ॥
जोती मन मैं सोच बिचारा। झूठी बातैं करै लबारा ॥
वे तो काल कराल कसाई। वा से बचै कौन बिधि भाई ॥
जानेउ पिता दरस नहिं पावा। मिथ्या साखि भाखि गोहरावा ॥

जोती झलक क्रोध तन तापा। तब पुनि दीन्ह दोऊ को स्रापा॥
गायत्री को स्राप सुनाई। बृछ तन धरौ केतकी माईं॥
ब्रह्मा कुल परपंची जोई। मैला मन बुधि सुधि नहिँ होई॥
माता स्राप यही बिधि दीन्हा। माना सुन कर करौ यकीना॥
ब्रह्मा स्राप जो कहूँ बिचारी। सब मिलि कै सुनियौ बिधि सारी
तुम्हरा कुल परपंच दुखारी। मति का हीन लोभ संसारी॥
आगे होइहै साखि तुम्हारी। मिथ्या पाप करै बहु भारी॥
प्रगट नेम जो करै अचारा। अंतर मैल पाप बिस्तारा॥
राम कृष्न की भक्ति दृढ़ावै। आप करै सोइ और सिखावै॥
बिस्नु भक्ति से करै हंकारा। ता से परै नर्क को धारा॥
कथा पुरान और समझावै। चालि बेहूद आप दुख पावै॥
इन से और जो सुनिहै ज्ञाना। सो परिहै चैारासी खाना॥
झूठा वेद बिधी बिधि गावै। दछिना कारन गला कटावै॥
जा को सिष्य करै पुनि जाई। परमारथ तेहि नाहिँ लखाई।
अपना स्वारथ ज्ञान सुनावै। अपनी पूजा ज्ञान दृढ़ावै॥
परमारथ के निकट न जाई। स्वारथ हेत सबै समझाई॥

॥ दोहा ॥

ब्रह्मा को भयौ स्राप, तुम्हरा कुल मिथ्या परै।
झूठ चलावै चाल, उद्र काज नरकै परै॥

॥ चैापाई ॥

जाेति स्राप ब्रह्मा को दीन्हा। तुम्हरा कुल होइ है मति हीना॥
तुलसी कही भई बिधि मूला। स्राप पाप से ब्रह्मा भूला॥
स्राप बिधी निरगुन ने जानी। उन पुनि स्राप जाेति पर ठानी॥
द्वापर जुग आवैगा सोई। जब तुम पंच भरतारो[1] होई॥

(१) मुं० दे० प्र० की पुस्तक मेँ "पंच औतारी" है जो अशुद्ध जान पड़ता है।

॥ सोरठा ॥

अस अस दीन्हो स्राप, बाम्हन की मति यों गई ।
ता से न मानै बात, बुद्धिहीन मानहिं मरै ॥

॥ चौपाई ॥

ता से बाम्हन की मति मैली । मन और बुद्धि पाप से फैली ॥
देवी बकरा गला कटावै । मछरी मास बहुत बिधि खावै ॥
ऐसा कर्म करै सोइ भाई । ता को कहिये और कसाई ॥

॥ श्लोक ॥

कामार्त्तस्य कुतो लज्जा, निर्द्धनस्य कुतः क्रिया ।
सुरापस्य कुतः शौचं, मांसाहारे कुतो दया[१] ॥

॥ चौपाई ॥

या से तुम को परै न सूझा । तुम्हरी मति अस भई अबूझा ॥

सम्बाद मानगिरी सन्यासी के साथ ।

॥ चौपाई ॥

सब पंडित मिलि दीन्ह बिचारा । माना स्यामा नैनू हारा ॥
सुन कर परमहंस इक आवा । मानगिरी सन्यासी नावाँ ॥
पंडित से झगरा सुनि पावा । सो बिधि सुनि हमरे पर आवा ॥
ईसुर ब्रह्म एक नहिं मानै । बेद बेदांत नहीं कछु ठानै ॥
गीता की मानै नहिं भाई । है कोइ ऐसा तुलसी गुसाँई ॥
ये सुनि के हमरे ढिग आये । जहँ सब पंडित बैठि रहाये ॥

॥ परमहंस उवाच ॥

मानगिरी बोले अस बाचा । जो बेदांत कहै सो साचा ॥
जो बेदन ने कही बखाना । गीता सत्त कहै परमाना ॥

---

(१) कामी शरम को, निर्द्धन क्रिया को, शराबी सफ़ाई को, और गोश्तख़ार दया को नहीँ जानता ।

एक ब्रह्म है सब के माईं। और कोई दूजा है नाहीं ॥
ये बेदांत कहै गोहराई। गीता में भगवान सुनाई ॥
मानगिरी कहै सुनौ गुसाँईं। मैं बेदांत कहौं समझाई ॥
आतम सब में ब्रह्म बखाना। ता को नाम निरंजन जाना ॥
सो तो ब्रह्म हमीं हैं भाई। हम को छाँड़ि अंत नहिं पाई ॥
सब जग हम हम माहिं समानौ। हम से कोई और नहिं जानौ ॥
जग भूला आँखी नहिं सूझै। केवल ब्रह्म न हम को बूझै ॥
ये संकल्प जग जीव भुलाना। योँ अज्ञानी जगत कहाना ॥
बालक रूप ब्रह्म को भाखा। त्याग सबै कोपीनै राखा ॥
ब्रह्म रूप सब जगत बिचारै। येहि बिधि आतम ब्रह्म निहारै ॥
जाग्रत सुपन सुषोपति त्यागी। तुरियातत्त रहै अनुरागी ॥
चारौ बानी को हम जाना। परा पसंता भेद बखाना ॥
और बैखरी भाखि सुनाऊँ। सो सब जग मैं प्रगट दिखाऊँ ॥
पाँचौ मुद्रा कहौं बखानी। चाचरि भूचरि खेचरि जानी ॥
और अगोचरि उनमुनि जाना। सब जोगिन का भेद बखाना ॥
परमहंस ऐसी बिधि बोला। तुलसी तोल स्वाल अस खोला ॥

॥ प्रश्न तुलसी साहिब ॥

कहै तुलसी स्वामी सुन बाता। परमहंस बेदांत सनाता ॥
अब हम तुम से पूछैं बाता। ब्रह्म कहौ तुम आदि सनाता ॥
तुम तो ब्रह्म आप को जाना। रहो तत पाँच सरीर बिधाना ॥
तुम पुनि पाँच तत्त कस आया। रूप रेख बिन रहौ अकाया ॥
पिता बीर्ज माता रकतानी। तब सरीर की रचना ठानी ॥
माता पिता तत्त नहिं रहिया। तब कहँ हते सोई निज कहिया ॥
पाँच तत्त बैराट सरीरा। तब तत नहीं बसौ केहि तीरा ॥
पाँच तत्त मैं केहि बिधि आये। तत्त नहीं तब कहाँ रहाये ॥
धरती अगिनि अकास न रहिया। पानी पवन भवन नहिं भइया ॥

तब तुम कहाँ रहे सोइ भाखी । तब की आदि बताओ साखी ॥
तुम कहौ सब में हमीं समाना । जब नहिं रहे सुन्न असमाना ॥
नहिं सरीर बैराट बनाया । पाँचौ तत्त न उपजी माया ॥
जब बेदांत हतो नहिं भाई । तब नहिं गीता कथा बनाई ॥
जब तो तुम्हीं तुम्हीं तुम रहिया । गीता साखि कौन बिधि कहिया ॥
नहिं सरीर नहिं लिखनेहारा । कागद स्याहि न कलम सँवारा
तब बेदांत कहाँ था भाई । सो ता की तुम साखि बताई ॥
तब तो तुम्हीं तुम्हीं निज रहिया । तब की बात बिधी बतलइया ॥
तब हमरे मन साँची आवा । बिना भेद सब झूठ कहावा ॥
अब गीता की साख सुनावौ । और बेदांत बिधी बिधि गावौ
जो जो कही बचन बिधि भाखी । सो सो समझि लीन्ह सब साखी
पाँच तत्त रचि बास बनावा । कर्म भोग फिरि भौ में आवा ॥
तुम ता को कहौ ब्रह्म बखानी । ये तो भरमै चारो खानी ॥
ये बैराट खानि भौ माहीं । ब्रह्मा बिस्नु कहौ कहँ रहहीं ॥
पाँच तत्त नहिं रहत सरीरा । तब कहँ हते कहौ केहि तीरा ॥
प्रथमहि कहौ कहाँ से आया । नहिं तब तन बैराट बनाया ॥
तब की कहौ सकल बिधि गाई । तो तुलसी के मन में आई ॥

॥ परमहंस ॥

॥ चौपाई ॥

ये बेदांत कहै सब साखी । गीता की तुम एक न राखी ॥
गीता कहै ईस्वर सब माई । आतम ब्रह्म बेदांत बताई ॥
ये तुम्हरे मन लैं नहिं आई । सब को तुम ने दीन्ह उड़ाई ॥
ब्रह्म सनातन सब में भाखा । सो तो तुम ने एक न राखा ॥

॥ तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

ब्रह्म ब्रह्म सब तुमहिं बखानौ । आदि ब्रह्म की कछू न जानौ ॥
भाखौ ब्रह्म कहाँ से आया । कहौ ब्रह्म को कौन बनाया ॥

जग नहिं हता ब्रह्म कहँ रहिया । कहौ ब्रह्म को कौन बनइया ॥
ऐसा परमहंस मत गावै । नहीं ब्रह्म की आदि बतावै ॥
बिन सतसंग भेद नहिं जाना । करता ब्रह्म नहीं पहिचाना ॥

॥ साखी ॥

नर पंछी मन पींजरा, ज्ञान पंख भयो नास ।
सतसँग बृछ पाये बिना, ब्रह्म अकास न पास ॥

॥ चौपाई ॥

अब गीता की साखि बताऊँ । तुम भगवान कहनि मुख गाऊँ ॥
गीता मैं पांडो बिधि भाखो । कौरौ जुद्धि कही सब साखो ॥
अरजुन ज्ञान धनुष चढ़वावा । सब कौरौ का नास करावा ॥
पुनि फिर तिनहिं हिवारे गारे । नर्क माहिं अरजुन को डारे ॥
मित्र बड़े उन के दुख पावा । और जीव की कौन चलावा ॥

॥ साखी ॥

कृष्न समीपी पंडवा, गरे हिवारे जाइ ।
लोहें को पारस मिलै, तौ काहे काई खाइ ॥

॥ चौपाई ॥

मानगिरी सुन बचन हमारा । आदि अंत बेदांत बिचारा ॥
सास्तर ब्रह्मा बेद बनाई । और बैराट ब्रह्म बिधि गाई ॥
आतम और परमातम बानी । कहूँ ब्रह्म की आदि बखानी ॥
जो बेदांत ज्ञान गति गाई । सास्तर आतम अंत सुनाई ॥
नाम भेद भिनि भिनि बतलाऊँ । गुन गति ज्ञान गिरा समझाऊँ ॥
ठेका ठामी ठौर ठिकानो । पिंड ब्रह्मंड की करौं बखानो ॥
जहँ से ब्रह्म आतमा आई । सो पद द्वार सुनाऊँ गाई ॥
भिनि भिनि कर बरतंत सुनाऊँ । मानगिरी सुन ज्ञान लखाऊँ ॥

॥ दोहा ॥

ब्रह्म बेद बैराट की, भिनि भिनि भाखूँ आद ।
आतम अंत बेदांत की, बूझैं बिरले साध ॥१॥

बेद मता मत काल ने, कीन्हा झूठ पसार ।
ब्रह्म वेद वेदांत से, संत मता है पार ॥२॥

॥ चौपाई ॥

मानगिरी सुनि कै चित लाऊ । आदि अंत विधि बरनि सुनाऊँ ।
नसिहत-नामा भाखि सुनाऊँ । या को विधि ता मैं दरसाऊँ ॥

नसीहत-नामा

॥ रेख़ता ॥

एरी अली खोज खबर धसि धाई ॥टेक॥
गवन भवन भिन भेद लखाऊँ, तत मत जोति नाद नहिं जाई ।
अलख जोति त्रिन खलक समाना, जाना जिन जिन गाई ॥१॥
नाम निवास बास सत लोका, जेहि का कँवल तेज सुन माहीं ।
परमातम पद सुन परे धामा, सुन धुनि आतम आई ॥२॥
आतम वास बसै सरवर मैं, वहि तत ब्रास अकास कहाई ।
अली अकास चारौ तत कीन्हा, तत वैराट वनाई ॥३॥
सुन नभ वार तार सुर्त स्यामा, ता मैं आतम मनहिं कहाई ।
पँच इंद्री कर्म ज्ञान पाँच मैं, दस बस फाँस फँसाई ॥४॥
इंद्री कर्म असुभ बस बाँधे, सुभ करिकै गति ज्ञान गिराई ।
सुभ अरु असुभ कर्म मन मारग, ये दोउ भव भुगताई ॥५॥
आसा बास बसै कर्मन मैं, फिरि फिरि जनम जोनि भरमाई ।
यहि विधि आवागवन भवन मैं, फिरि फिरि खानि समाई ॥६॥
यहि विधि संत सभी सब गावैं, सब्द साखि सब बरनि सुनाई ।
बूझै न मूढ़ चलै मन मत के, सत सत बचन उड़ाई ॥७॥
आतम ज्ञान ब्रह्म बन बैठे, कहते लाज न मन बिच आई ।
द्वैत भाव भर्म मन बरतैं, अद्वैतो दरसाई ॥८॥

तजि मन मूढ़ कूड़ पाखँड को, झूर झूठ सब धोखा खाई ।
तन कर नास बास चौरासी, फिरि फिरि जम धरि खाई ॥९॥
या से मान मनी मति डारौ, लख गुरु गगन गवन बतलाई ।
सूरति डोर लील खिच खोलौ, फोड़ि कै पछिम समाई ॥१०॥
लीला सेत स्याम सुन पारा, न्यारा द्वार दोदा दरसाई ।
जहँ परमातम आतम नाहीं, खिरकी पुरुष लखाई ॥११॥
जहँ सत लोक मोष पर बेनी, मंजन करिके सहज अन्हाई ।
चढ़ि कर द्वार देखि सत साहिब, सुभ और असुभ नसाई ॥१२॥
जे जे बंद फंद कर्मन के, सत्त पुरुष दरसत नसि जाई ।
यहि बिधि भाँति सुरति से खेलै, सतगुरु कहत बुझाई ॥१३॥
सतसँग रंग दीन दिल पावै, मोटे मन तन बूझ न आई ।
जिन मन नीच कीच सम कीन्हा, उनकी दृष्टि समाई ॥१४॥
जोगी भेष भर्म मन ज्ञानी, परमहंस बैरागी गुसाँई ।
करि करि खोज रोज पचि हारे, वा की खबर न पाई ॥१५॥
सास्त्र संग बिधि साखि बिचारै, बिधि बेदांत ब्रह्म बतलाई ।
बेद नेति कर कहत पुकारा, ब्रह्मा आपु हिराई ॥१६॥
बिधि बैराट कँवल नाभी मैं, खोजत खोजत फिर फिरि आई ।
ब्रह्मा भूले बेद कहै नेता, ये दोउ भेद न पाई ॥१७॥
ये बेदांत ब्रह्म कस गावै, या को कहौ किन बूझ बताई ।
या के गुरु का भेद बतावौ, बिन गुरु कहौ कस गाई ॥१८॥
पिरथम बन बैराट बनावा, ता पीछे ब्रह्मा उपजाई ।
ब्रह्मा पीछे बेद बिधाना, ये सब खोज न पाई ॥१९॥
बेद बिधी से सास्तर कीन्हा, ता पीछे बेदांत बनाई ।
ये तौ ब्रह्म ब्रह्म कहि गावैं, वा ने नेति सुनाई ॥२०॥
या की साखि समझ नहिं आवै, झूठ साच निरनै न बुझाई ।
सोल पोल बिधि कोइ न बिचारै, टेकै टेक चलाई ॥२१॥

ब्रह्मा बाप बैराट कहावै, जा मैं आतम ब्रह्म समाई ।
सूर चंद दोउ नैना वा के, राहु बिमान सताई ॥२२॥
ब्रह्मा बाप आप भये रोगी, भोग रोग नित राहु सताई ।
उन का बाप आप दुख पावै, ता का दुख न छुड़ाई ॥२३॥
बेद भेद सँग जग्त उबारै, अस अस पंडित कहत सुनाई ।
पीछे सास्तर नाती कहिये, आजा दुर्ग दुख पाई ॥२४॥
जग बेदांत ब्रह्म कहै ज्ञानी, राहु बैराट ब्रह्म दुखदाई ।
पंडित बूझ सूझ समझावा, ये कहा समझ सुनाई ॥२५॥
तन को तेल फुलेल रसिक मैं, खान पान पोसाक सुहाई ।
नित नित सैल करै बागन मैं, तन नित माँजि अन्हाई ॥२६॥
ये सब मैाज चैाज सुख संगा, तन हबूब बुल्ले सम जाई ।
पल पल घट घड़ियाल पुकारै, जग जम सोँटे खाई ॥२७॥
लेत हिसाब ज्वाब नहिं आवै, आतम ज्ञान गैल गिरि जाई ।
ब्रह्म बूझि बैराट दुखारी, परलय माहिं नसाई ॥२८॥
ता के भीतर चेतन बासी, परलय तन तत कहाँ रहाई ।
ब्रह्मा नासि और बेद नसाना, जब का भेद सुनाई ॥२९॥
पिरथम पवन अकास नसाना, ब्रह्मा बेद बैराट नसाई ।
कागद स्याही न लिखनेहारा, तब की बिधि समझाई ॥३०॥
बिधि बैराट नास सब जानै, आगे भेद न कहत सुनाई ।
जेहि जेहि पूछो सोइ अस गावै, आगे न खबर सुनाई ॥३१॥
काल जाल सब चालि बखानै, बेद नेति सास्तर समझाई ।
या मैं जोग ज्ञान फँसि मारे, सब को भर्म भुलाई ॥३२॥
अगम निगम पर नेक न पावै, बेद नेति आतम कहि गाई ।
सोइ सास्तर सुनि मुनि जन गावै, आगे भेद न पाई ॥३३॥
आतम ब्रह्म अबाच बतावैं, कहत दृष्टि नहिं देत दिखाई ।
बिन देखे बरनन जिन कीन्हा, नहिं परमान कहाई ॥३४॥

कहत वेद कोइ देख न पावै, पुनि अबाच कहै कौन सुनाई।
बिन बाचा सास्तर नहिं भयऊ, अरी अबाच किन गाई ॥३५॥
वह अबाच कहै बोलत नाहीं, बाचा बिन किन खबर सुनाई।
सुनि कहै वेद नाद बाचा से, या को भेद बताई ॥३६॥
पूछै जित जो अबाच बतावै, बाचा मैं बरतंत सुनाई।
बाचा बचन न जाने पावै, पूछै कहै सुनाई ॥३७॥
बाक बचन कहै बात न मानै, बिन बाचा मैं कहै समझाई।
सुनि द्वैति बिन बाच न आवै, बचन बिना दरसाई ॥३८॥
ये सब काल जाल जग बाँधा, ज्ञानी पंडित भेष भुलाई।
मान मनो मद अहं बतावै, यहि बिधि जाल जमाई ॥३९॥
पढ़ि पंडित रुजगार चलावै, कुटुँब काज परपंच बसाई।
ता मैं ज्ञानी जगत अबूझा, सो सुनि समझि सुनाई ॥४०॥
यहि बिधि बुधि वेदन सँग बाँधो, संत मता वेदन सम गाई।
नाद वेद से सत नियारे, सो नहिं कोइ गति पाई ॥४१॥
ये अवाच पर और अबाचा, सो कोइ संत भेद बतलाई।
उन देखा सुर्त से चढ़ि चौथे, सो सब संत सुनाई ॥४२॥
पिरथम एक अनाम अबाचा, वा की गति मति संत जनाई।
सत्त लोक पर नाम अबाचा, सो पद चौथे माईं ॥४३॥
परमातम पद सुन पै अबाचा, सुनि धुनि नीचे आतम आई।
मानसरोवर तेहि कर धामा, सोइ आकास समाई ॥४४॥
जड़ अकास चेतन जिन्ह कीन्हा, स्याम सेत बिच नाम गुसाँई।
सोइ निज नाम निरंजन भाखा, वेद अबाच सुनाई ॥४५॥
सहस कँवल मध धाम कहावै, ता पर तीनि अबाच रहाई।
ब्रह्मा वेद वैराट न पावै, ऋषि मुनि भ्रम मन माईं ॥४६॥
सास्तर मिलि पुनि आतम गावा, काल की कला अबाच सुनाई।
पंडित पढ़ि गुनि ज्ञान गठाने, या से जग बौराई ॥४७॥

निरगुन कुंज राह नहिँ पावै, संत सुरति से नित नित जाई।
जो ओहि देस भेस के भेदी, जिन जिन खबर जनाई ॥४८॥
उनको जग नास्तिक ठहरावै, बोल वचन उनके न सुहाई।
वे पुनि चढ़ि चढ़ि अगम निहारैँ, बिधि सब कहत सुनाई ॥४९॥
काल निरंजन बाच अबाचा, कहत नाद बिच बेद बनाई।
आतम तमा अबाच कहावै, येहि बिधि काल जनाई ॥५०॥
संत मता कछु और पुकारै, आतम जीव मानसर माई।
परमातम सुन खिरकी पारा, संतन देख जनाई ॥५१॥
आगे सत्तलोक चौथे मेँ, सो अबाच सत पुरुष कहाई।
जहँ नहिँ निरगुन वेद बिचारा, ये सब वार रहाई ॥५२॥
चौथे पार अनाम अमाया, नाम न रूप अगम गति गाई।
सो सब संत करैँ दरबारा, ये गति बिरले पाई ॥५३॥
ये गति धाम अगमपुर ठामा, जाहि देत जो जाइ जनाई।
या की साखि बेद नहिँ जानै, संत कृपा से पाई ॥५४॥
संत सरन बिन पंथ न पावै, सतगुरु गैल खेल खुलि गाई।
मन होय छोट मोट छल छाँड़ै, तब सत सुरति लखाई ॥५५॥
सत मत रीत जीत जब जानै, ज्ञान मान मद दूरि बहाई।
मन और कर्म बचन बुधि[१] साँची, काँची कुबुधि उठाई ॥५६॥
संत दयाल चाल जब चीन्है, लीन दीन दिल लेत लगाई।
सब अस भाँति जाति पक[२] परखै, तरकै तन बिच जाई ॥५७॥
वे अंतर घट घाट बिचारैँ, कर कर फैल गैल नहिँ पाई।
कूड़ कपट सब झारि निकारैँ, जब रस राह लखाई ॥५८॥
सत मत सुरति निरति नित न्यारी, सारी समझ बूझ बतलाई।
लोल सिखर पट परदे माहीँ, पल पल मनहिँ लगाई ॥५९॥

(१) सं० दे० प्र० की पुस्तक मेँ "विधि" है जो सही नहीँ मालूम पड़ता। (२) पत्त।

काग भसुंड धाम धसि पावै, कँवल कंज करिया के माईं ।
ता पर सेत सुरति सत द्वारा, चढ़ चढ़ सुन्न समाईं ॥६०॥
सुनि धुनि ताल तरँग आतम जिव, पछिम दिसा दिस देन दिखाईं ।
खिरकी खोल अबोल अबाचा, सो रचि जीव जनाईं ॥६१॥
ताल निहार पार चलि आगे, सुन्न सिखर फाटक मँ जाईं ।
तहँ कहुँ ताक भाख दोउ द्वारा, पारब्रह्म पद पाईं ॥६२॥
सुरति सैल जहँ खेल निहारी, लख लख गगन अंड अरथाईं ।
जा बिच सुरति सिरोमनि पेलो, ज्योँ चींटी सम जाईं ॥६३॥
अस भसुंड भिन अंड निहारा, राम रमा मुख जाइ समाईं ।
रामायन लखि साखि सुनाऊँ, हिये द्रुग देत दिखाईं ॥६४॥
चर और अचर खानि सब सारी, भिन भिन भेद भसुंड सुनाईं ।
काग भसुंड काया के माहीं, लखि जिन जानि जनाईं ॥६५॥
या से परखि पार पद न्यारा, पारै चढ़ि चल चस्म चिन्हाईं ।
सुनि धुनि आतम पद परमातम, इन के पार लखाईं ॥६६॥
ये दोउ वार पार सतलोका, परदा तीनि फोड़ जोइ जाईं ।
सूरति सब्द पुरुष पद पारा, जब घर अपने आईं ॥६७॥
ता पर धाम नाम नहिं न्यारा, तारा चंद न सुरज रहाईं ।
धरती न गगन गिरा नहिँ बानी, जानी जिन जिन गाईं ॥६८॥
पिंड ब्रह्मंड न अंड अकारा, न्यारा अली अलोक कहाईं ।
जहँ सब संत पंथ पद माहीं, नित नित सैल समाईं ॥६९॥
सतगुरु साथ हाथ हित पावै, संत सरन स्रुत सार लखाईं ।
सतसँग संत बिना नहिँ पावै, फिर फिर कर्मन माईं ॥७०॥
आगे सुन गुन ज्ञान बताऊँ, जीव कर्म बस ब्रह्म बँधाईं ।
ब्रह्म जीव बस कर्म बिचारै, जड़ सँग ज्ञान गिनाईं ॥७१॥
अब या की सुन साखि सुनाऊँ, भागवत मत बिधि ब्यास बताईं ।
जब बैराट ठाट ब्रह्म भइया, देवन जाइ उठाईं ॥७२॥

नहिँ बैराट उठा बिन आतम, पुरुष अंस आतम जब आई ।
मध बैराट जीव आतम अस, तब तन तुरत उठाई ॥७३॥
अंस जीव आतम कहौ कहँ से, आया सो बिधि खोज कराई ।
सो स्वामी का कहौ कहँ बासा, जिन से अंस जो आई ॥७४॥
अंस बुंद आतम तन बासा, सिंध खोज कहुँ अंत रहाई ।
यहि बिन संत पंथ नहिँ पावै, फिरि फिरि जड़ तन माईँ ॥७५॥
बिन साखी संध फंद न टूटै, छूटै न ज्ञान जो कोटि कराई ।
बिन बिधि सुरति सिंध नहिँ पावै, बिन सिंध बुंद बहाई ॥७६॥
चेतन जड़ तन गाँठि बँधानी, छूटे बिन बस ब्रह्म न भाई ।
छूटै गाँठि गगन चढ़ चीन्है, तब बिधि ब्रह्म कहाई ॥७७॥
जैसे गगन रबी रहै बासा, किरनि भास भूमी पर आई ।
जब सब सिमटि भास गति रबि मैँ, बुंदा सिंध कहाई ॥७८॥
नास अकास सूर सब बिनसै, तब रबि रहै कहौ कहँ जाई ।
सो ठेके का खोज लगावौ, वो पद कौने ठाईँ ॥७९॥
सास्तर ने गति गैल भुलाई, ब्रह्म बाँधि जड़ जीव रहाई ।
यहि बिधि भूल फूल मन मारग, या से गति नहिँ पाई ॥८०॥
ज्ञान ठान दृढ़ सास्तर भाखा, परमहंस ज्ञानी उरझाई ।
चारि अवस्था भाखि बताई, सो सब कहत सुनाई ॥८१॥
सब ज्ञानी तुरिया गति गावैँ, पूछौ भेद सो मन मुख माईँ ।
जाग्रत सुपन सुषोपति तुरिया, तुरियातीत सुनाई ॥८२॥
जाग्रत सुपन का भेद न बूझै, सुषोपति तुरिया मुख से गाई ।
तुरियातीत रीत मन मारग, आगे भेद न पाई ॥८३॥
बानी चार लार कर बोलै, परा पसंता मधिमा भाई ।
बैखरी बिधि बोलै सुन बोली, कँवल पेट के माईँ ॥८४॥
यहँ से बानी उठत बतावैँ, बिष्टा बास बतावत आई ।
जहँ से बानी उठत अबाचा, वहँ का खोज न पाई ॥८५॥

ज्ञान तीन गति गाइ सुनावैं, रेचक पूरक कुंभ कहाई।
ये सब ज्ञानी बानी बूझैं, मन सँग बुद्धि वहाई ॥८६॥
मन बिधि ज्ञान बुद्धि बस देखै, ब्रह्म ब्रह्म कर कहत सुनाई।
आतम को अद्वैत बतावै, या से बूझ न आई ॥८७॥
आतम कुबुध बंध कर्मन में, ब्रह्म ज्ञान गति कहत बुझाई।
रहै अज्ञान बास जड़ देंही, ता बिच गाँठि बँधाई ॥८८॥
ठट कर ठाट ठटै जब सूरति, अंडा फोड़ अगम गति पाई।
सब्द सिंध सूरति चढ़ जावै, जब पावै पद आई ॥८९॥
तुलसी तुच्छ कुच्छ नहिं जानै, संत सत्त कहि कहत सुनाई।
मैं मति नीच कीच सम किंकर, सतसँग समझ सुनाई ॥९०॥

॥ चौपाई ॥

मानगिरी बूझौ बिधि सारी। संत अंत गति सब से न्यारी ॥
गीता ज्ञान ब्रह्म समझावा। अरजुन छले नर्क बिच नावा ॥

॥ प्रश्न परमहंस ॥

॥ चौपाई ॥

सुन कर परमहंस अस बोला। ये बरनन गीता में खोला ॥
पुनि अस भेद सबै सब गावा। सास्तर सुध आतम समझावा ॥
सब ने सब में ब्रह्म बताई। और बेदांत साखि समझाई ॥
या को मरन जिवन कछु नाईं। आवै नहीं नहीं कहुं जाई ॥
सोई सनातन सत्त समाना। आतम आवागवन न जाना ॥
ऐसे सास्तर साखि बतावै। सबहि महातम अस अस गावै ॥

॥ दोहा ॥

परमहंस अस भाखेऊ, सब में ब्रह्म समान।
सब सास्तर अस अस कहै, और स्तुति कहत पुरान ॥

उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

सास्तर सब मैं ब्रह्म बखाना । पाँच तत्त जड़ चेतन जाना ॥
जीवत पाँच तत्त से छूटै । गगन चढ़ै असमान जो फूटै ॥
वहँ से अधर और है धामा । जीवत चढ़ै जाइ वोहि ठामा ॥
पाँच तत्त जड़ चेतन छूटै । ऐसे चढ़ै अधर तब टूटै ॥
वोही धाम धसि जाइ समाना । अस चढ़ि चलै ब्रह्म जेहि माना ॥
ज्ञान दृष्टि से बूझै कोई । सो नहिँ ब्रह्म ब्रह्म गति होई ॥
जो जो सास्तर करत बखानी । उन ने सब सास्तर की जानी ॥
स्वाँस उपर का भेद न जाना । ता की कहा करै परमाना ॥
सास्तर मैं इस लोक बखाना । वे उस लोक का मरम न जाना ॥
पढ़ि पढ़ि सुनि सुनि साखि बतावैं । ब्रह्म अदेख देख बतलावैं ॥
तब तो हमरे मन मैं आवै । और बात मन नाहिँ समावै ॥

॥ प्रश्न परमहंस ॥

॥ चौपाई ॥

परमहंस पंडित से बोले । तुलसी और और बिधि खोले ॥
परमहंस मन मैं सकुचाना । ये तो भेद हमहुँ नहिँ जाना ॥
पंडित परमहंस भये एका । तुलसी भाखा अगम अलेखा ॥
हमरी बुद्धि न पहुँचै ताहीं । ये तो अकथ कथा गति गाई ॥
परमहंस कहै ब्रह्म समाना । सुन पंडित ये और बिधाना ॥
मन मैं पंडित करत बिचारा । परमहंस अंतर मन हारा ॥
तुलसी स्वामी अगम बखानी । सब पंडित मिलि ऐसा जानी ॥
परमहंस पंडित भये दीना । तब हम से पूछन इक कीन्हा ॥
तुलसी स्वामी मन को रहिया । पूछौं ब्रह्म कहाँ से भइया ॥
पवना कहौ कहाँ से आई । हम को यह बिधि कहौ बुझाई ॥
या के परे और कछु भाखा । जा की संध बतावौ साखा ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

पंडित परमहंस सुन ज्ञानी । अब या का हम भेद बखानी ॥
सत्त पुरुष इक साहिब स्वामी । ता सुत भया निरंजन जानी ॥
मन का नाम निरंजन होई । आतम ब्रह्म कहै सब कोई ॥
मन से पवन भई उतपानी । तब मन बँधा देँह मेँ आनी ॥

॥ प्रश्न पंडित और परमहंस और उत्तर तुलसी साहिब ॥

(१)

स्वामी जी-(१) मन, (२) पवन, (३) शब्द, (४) ब्रह्म, (५) जीव, (६) सीव कौन हैँ ?

(१) मन चकोर है, (२) पवन घोर, (३) शब्द अडोल, (४) ब्रह्म निरंजन काल, (५) जीव काल कर्म बंध, (६) सीव कर्मसुक्ता ।

(२)

स्वामी जी-(१) मन, (२) पवन, (३) शब्द, (४) ब्रह्म निरंजन, (५) जीव, (६) सीव, (७) प्रान, (८) हंस, (९) काल, (१०) सुन्न का कहाँ बासा है ?

(१) मन और (२) पवन का नभ गगन मेँ बासा है, (३) शब्द का हृदय अधर मेँ, (४) ब्रह्म निरंजन का सुषमना मेँ, (५) जीव का काया मेँ, (६) सीव का मन मेँ, (७) प्रान का निरन्तर मेँ, (८) हंस का गगन पार, (९) काल का कलह मेँ, (१०) सुन्न का अनूप मेँ ।

(३)

स्वामी जी-(१) जब गगन नहीँ था तब मन कहाँ रहता था, (२) जब नभ नहीँ था तब पवन कहाँ रहता था, (३) जब हृदय नहीँ था तब शब्द कहाँ रहता था, (४) जब निरन्तर

नहीं था तब प्रान कहाँ रहता था, (५) जब ब्रह्मंड नहीं था तब ब्रह्म कहाँ था, (६) जब गगन नहीं था तब हंस कहाँ रहते थे, (७) जब कलह नहीं था तब काल कहाँ था, (८) जब अनूप नहीं थी तब सुन्न कहाँ था, (९) जब काया नहीं थी तब जीव कहाँ था, (१०) जब जीव नहीं था तब सीव कहाँ था ?

तब (१) मन जोति सरूप मेँ रहता था, (२) पवन निराकार मेँ, (३) सब्द ओंकार मेँ और ओंकार की उत्पत्ति के पहिले सुन्न मेँ रहता था, (४) प्रान निरंजन मेँ और निरंजन की उत्पत्ति के पहिले अविगत मेँ रहता था, (५) ब्रह्म सत्तनाम मेँ, (६) हंस सहज मेँ, (७) काल सुन्न मेँ, (८) सुन्न ररंकार मेँ, (९) जीव सीव मेँ, (१०) सीव निरंजन मेँ ।

(४)

स्वामी जी–(१) निरंजन, (२) मन, (३) सीव, (४) जीव, (५) हंस, (६) काल, (७) शब्द, (८) पवन इनकी उत्पत्ति कहाँ से हुई ?

(१) अक्षर से उत्पत्ति निरंजन की हुई, (२) निरंजन से मन की, (३) मन से सीव की, (४) सीव से जीव की, (५) हंस और (६) काल की सत्तनाम से, (७) शब्द की नाम से, और (८) पवन की सुन्न से ।

(५)

स्वामी जी–ये सब कहाँ कहाँ समाते हैँ–(१) मन, (२) पवन, (३) शब्द अनाहद, (४) प्रान, (५) ब्रह्म, (६) हंस, (७) जीव, (८) सीव, (९) निरंजन, (१०) जोति ?

(१) मन जोति सरूप मेँ समाया, (२) पवन निराकार मेँ, (३) शब्द अनाहद ओंकार मेँ, (४) प्रान अविगत मेँ (५) ब्रह्म हंस मेँ, (६) हंस सत्तनाम मेँ, (७) जीव सीव मेँ, (८) सीव निरंजन अथवा ब्रह्मांडी मन मेँ, (९) निरंजन जोति मेँ, (१०)

जोति अलख में, अलख अबिनाशी में, अबिनाशी अगम में, अगम सत्तपुरुष में ।

सत्तनाम चौथे पद स्थान, आवै न जाय, मरै न जन्मै ।

शेष तीन लोक बैराट स्थान ब्रह्म, बैराट, आतमा, भगवान मन, औतार, बेद, ब्रह्मा, बिष्नु, शिव, जक्त, उदर में रहे, ब्रह्म नाश, बैराट नाश, आतमा नाश, जोति नाश, निराकार नाश, आकार नाश, ब्रह्मा बिष्नु शिव नाश, ओंकार शब्द नाश, बेद शब्द नाश, अंडा तीन लोक सीव नाश ।

(६)

स्वामी जी—तीन लोक बैराट नाश होकर कहाँ समाते हैं ?

ब्रह्म निराकार जोति तीन लोक बैराट नाश होकर सुन्न में समाता है । सुन्न नाश हो कर महासुन्न में समाता है । महा सुन्न के परे सत्तलोक है जहाँ सत्त साहिब रहता है, यहाँ प्रलय और महा प्रलय की गम नहीं ।

सत्त साहिब की लहर से महासुन्न होता है, महासुन्न से सुन्न, सुन्न से शब्द, शब्द से ब्रह्म, ब्रह्म से जोति निराकार, निराकार जोति से मन, मन से जक्त, ब्रह्मा बिष्नु शिव बेद सब उत्पन्न होते हैं ।

॥ प्रश्न परमहंस ॥

॥ चौपाई ॥

स्वामी तुलसी पूछौं बाता । औतारी नसि कहाँ समाता ॥
तीनि लोक जस नास कहाई । ब्रह्मा नसि कहो कहाँ समाई ॥
सिव बिस्नू और बेद नसाना । ये सब नसि कहो कहाँ समाना ॥
पारब्रह्म और जोति नसाना । निराकार नसि कहाँ समाना ॥
सुन्न नसी पुनि कहाँ समानी । मन भया नास कहो कहँ को जानी

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

दस औतार नास जो भइया । सो ये सब मन माहिँ समइया ॥
और सब जगत नास जब होई । सो सब मन के माहिँ समोई ॥
ब्रह्मा बिस्नु और महादेवा । नास भये मन मत के भेवा ॥
मन को नास सुनो पुनि भाई । मन नसि गया निरंजन माईँ ॥
नास निरंजन ब्रह्म समाना । ब्रह्म जो नसा सब्द में जाना ॥
सब्द नास जो सुन्न समाना । सुन्न नास महासुन में जाना ॥
यहँ से उतपति परलय होई । आगे भेद न जानै कोई ॥
वहँ से आवै यहँ लै जावै । आगे भेद न कोई पावै ॥
सत्तलोक महासुन्न कहाई । तीनि लोक सब सुन में जाई ॥
तीनि लोक करता नहिं जावै । वा पद को कोइ संत समावै ॥
वो पद है संतन कर सारा । वहँ कोइ संत करै दरबारा ॥
निराकार जोती नहिं जावै । जम और काल गम्म नहिं पावै ॥
दस औतार न पहुँचै भाई । ब्रह्मा बिस्नु की कौन चलाई ॥
सत्तलोक सत साहिब साईं । मिलै कोइ संत अंत जब पाई ॥
संत दयाल दया जो करई । लख लख भेद जीव निस्तरई ॥
संत अगम कोइ बिरले पावा । होइ दीन जब भेद लखावा ॥
अपना ज्ञान मान मत डारै । नीच होइ सोइ सहज निहारै ॥
दीनदयाल नाम उन केरा । दीन होइ जब होय निबेरा ॥
मोट उँचाई अपनी मानै । अपना ज्ञान ऊँच कर ठानै ॥
ता से संत नजर नहिँ आवैँ । नीचा होइ ताहि दरसावैँ ॥
संत दयाल बड़े सुखदाई । निमिख एक में देत लखाई ॥
नीचा होय होय निरवारा । ज्ञान मान बस फिरै लबारा ॥
ज्ञानी मान खानि की रीती । संत कृपा से भौजल जीती ॥
संत कृपा जेहि हेत निहारैँ । कोटिन कर्म काटि कै डारैँ ॥

संतन की गति अगम अपारा। ब्रह्म राम दोउ लखैं न पारा ॥
ब्रह्म राम से नाम नियारा। सो घर है संतन कर प्यारा ॥
सत्त नाम सतलोक दुहेला। जहँवाँ संत करैं नित केला ॥
जा को सतगुरु संत लखावैं। एक पलक में लोक दिखावैं ॥
उन की कृपा दृष्टि जब होई। दीन होय पद पावै सोई ॥
परमहंस सुनि कै भय माना। तुलसी तो कछु और बखाना ॥
ये तो भेद पार पद न्यारा। ऐसा मन में किया बिचारा ॥
तुलसी संत भेद बिधि गाई। संत भेद सब अगम लखाई ॥
बिना संत नहिं होइहै न्यारा। संत सरन से उतरै पारा ॥
परमहंस ये मन में जानी। ये तो अकथ अगाध बखानी ॥
ये वेदांत बेद में नाईं। गीता सास्तर भेद न पाई ॥
संत मता कछु इन से न्यारा। सो तुलसी ने कही बिचारा ॥
हम अपने मन त्याग बिचारा। ये सब आहि कर्म भौ जारा ॥
त्यागै जोइ जोई पुनि पैहै। बार बार भौसागर अैहै ॥
बिन कोपीन बस्त्र बिन रहिया। अपने कर भोजन नहिं खइया ॥
मुखहिं न बोला मौनि बिचारा। ये सब झूठा फैल[1] पसारा ॥
ऐसी बूझ बात मन लावा। तब चरनन पर हाथ चलावा ॥
तुलसी पकरि हाथ तेहि लीन्हा। परमहंस पूछै इक चीन्हा ॥

॥ प्रश्न परमहंस ॥

॥ चौपाई ॥

परमहंस पूछत सकुचाया। परमहंस मत कब से आया ॥
सो तुलसी मुख भाखि सुनाई। या को आदि अंत बतलाई ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

मानगिरी सुन बात हमारी। काल रचा बैराट सँवारी ॥
पाँच तत्त से पिंड बनाया। पुरुष अंस चेतन जब आया ॥

---

(१) फ़ैल।

जड़ चेतन दोउ गाँठि बँधानी । सोइ निज ज्ञान जानि मन मानी ॥
मौन रहै मुख बोलत नाई । करि कपड़ा कोपीन बनाई ॥
बालक रूप ब्रह्म मन जानै । दुइत भाव और नहिँ आनै ॥
निराकार ने वेद उपाया । ज्ञान ब्रह्म बिधि भाखि सुनाया ॥
मन से ब्रह्म आप को माना । जड़ चेतन की गाँठि न जाना ॥
करि करि कर्म रहे भौ खाना । ता को कहौ ब्रह्म कस माना ॥
ये मत काल जाल परचावा । ब्रह्म ज्ञान जड़ गाँठि बँधावा ॥
ता से आदि अंत नहिँ जाना । बोलै सब मैँ हमीं समाना ॥
भौजल काल जाल उरझाया । परमहंस मत यहि बिधि आया ।
आदि मते का खोज न पावै । बिना संत कहौ को दरसावै ॥
मानगिरी कहै सरना लीजै । आद अरु अंत भेद मोहिँ दीजै ॥
चरन सरन मैँ राखौ स्वामी । हमरी भूल भेद हम जानो ॥
परमहंस गति दीन बिचारी । दीन्हा उन आपा सब डारी ॥
कपड़ा फारि कोपीन बनाई । परमहंस को ले पहिराई ॥
सूरति संध पंथ दरसावा । चौथे पद की राह बतावा ॥
भेद भाव और ताला कूँची । दीन्ही परमहंस को सूची ॥
चरन सीस धरि पंथ सिधारे । बिधो देख पंडित सब हारे ॥
परमहंस गति दीन निहारे । तब पंडित मन माहिँ बिचारे ॥
अपनी गती गती गति धारी । दीन होय मग भवन सिधारी ॥
नैनू स्यामा माना भाई । पंडित तीन रहे ठहराई ॥
कुटी राति रह कीन्ह बसेरा । राति रहे दिन भया सवेरा ॥
भोर भये तेहि संध लखाई । तीनौँ गिरे चरन पर आई ॥
भेद भाव बिधि सब दरसावा । सीस टेकि कै भवन सिधावा ॥
कासी नगर पहूँचे जाई । जहँ कबीर चौरा नियराई ॥
पहुँचे पहर दिवस भयौ भ्याना । गये कबीर चौरा अस्थाना ॥
चौरा ऊपर पहुँचे आई । फूलदास महंत गोहराई ॥

संबाद फूलदास कबीर पंथी के साथ ।

॥ फूलदास उबाच ॥

॥ चौपाई ॥

फूलदास पंडित से बोलेउ । तुलसी बचन त्रिधी बिधि खोलेउ ॥

॥ पंडित उबाच ॥

॥ चौपाई ॥

माना महंत से कहै बुझाई । फूलदास सुनियो चित लाई ॥
तुलसी गत मत कहौं बिचारी । उन सम मता नहीं संसारी ॥
साध संत मत भये अनेका । तुलसी सम हम एक न देखा ॥
मत तुम्हरा हमहूँ पुनि जाना । तुलसी मता अगाध बखाना ॥
सुनि महंत तन तमक समानी । को कबीर सम करत बखानी ॥
खुद कबीर अविगति से आया । पुरइन पात वो भया अकाया ॥
सत्त पुरुष की आयस लाये । जग मैं जीव नेग मुकताये ॥
उन सम मता न जानो भाई । होइहै यह कोइ साध गुसाँईं ॥
हम पूछैं सोइ भेद बतावै । फूलदास के मन जब आवै ॥
जो कबीर मुख अपने भाखा । सो बिधि देखैाँ अपनी आँखा ॥
सत्त लोक की करै बखाना । पूरा साध ताहि हम जाना ॥
सत्त सत्त जो सत्त कबीरा । उन भाखा अदबुद मत हीरा ॥
आदि अंत उन भाखि सुनावा । सो तुलसी पै कहँ से आवा ॥
तुम पंडित जानैा नहिं भाई । तुम को ज्ञान दीन्ह समझाई ॥
हमरे सनमुख बात न आवै । एक सब्द मैं देँह धुजावै ॥
अब हम उन को देखब जाई । केहि बिधि ज्ञान कहै समझाई ॥
पंडित कहै भोर तुम जइये । हम अपने घर से पुनि अइये ॥
पंडित उठि मारग को लीन्हा । घर को गवन आपने कीन्हा ॥
पुनि घर पहुँचे अपने आई । करी जुगति तुलसी जो बताई ॥

निसि दिन सुरति निसाना लावै। निरखि परै तुलसी पै आवै ॥
फूलदास भोरहि चलि आई। पूछत कुटिया तुलसी गोसाँई ॥
पूछत पूछत हिरदे पाई। उन पुनि कुटी दीन्ह बतलाई ॥
हम पुनि जानि साध कोइ आवा। आदर भाव करन मन लावा ॥
तब सुखपाल पास नियरानी। तुलसी गति मति दीन बखानी ॥
लारै भीर भार बहु भारी। चौंर ढुरै सुखपाल सवारी ॥
जब निज चालि कुटी पर आवा। उठे चरन पर सीस चढ़ावा ॥
आदर भाव चरन लिये दोनो। साल प्याल को किये बिछौनो ॥
आदर भाव दीन गति गाई। मैं मति नीच साध सरनाई ॥
बड़े भाग साधू के सरना। कुटी पुनीत भई तुम चरना ॥
स्वामी गवन कहाँ से कीन्हा। भाखौ नाम कहौ अस चीन्हा ॥

॥ प्रश्न फूलदास ॥

॥ चौपाई ॥

फूलदास तब बचन बखाना। सत्त कबीर पंथ अस जाना ॥
फूलदास महंत अस नामा। कासी कबीरचौरा अस्थाना ॥
महिमा सुनि पुनि हमहूँ आये। दरस कीन्ह सुख मन उपजाये ॥
फूलदास तब बचन उचारा। गुरू पंथ बिधि कहौ बिचारा ॥
को है गुरू पंथ को कहिये। कौन मते के साध कहइये ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

संत गुरू और पंथ न जाना। येही संत पंथ हित माना ॥
दूजा इष्ट न जानौं कोई। संत सरनि नित सुरति समोई ॥

॥ प्रश्न फूलदास ॥

॥ चौपाई ॥

संत गुरू बिन पंथ न होई। अपना गुरुमत भाखौ सोई ॥
सतगुरु बिना ज्ञान नहिं आवै। सतगुरु बिना भेद नहिं पावै ॥

॥ प्रश्न तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

कहो कैसे गुरु भेद लखावै। कौन राह से पंथ बतावै ॥
ता की बिधी कहो तुम साखी। सो किरपाल दया करि भाखी
हम अजान कछु मरम न जाना। तुम हो साधू परम निधाना ॥
तुम को कस सतगुरु दरसावा। भाखि भेद सोइ मोहिं सुनावा
मैं अति दीन दया कर कीजै। होउ दयाल भेद पुनि दीजै ॥

॥ उत्तर फूलदास ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसीदास सुनो चित लाई। पंथ भेद मैं कहौं सुनाई ॥
सत्तपुरुष रहै पुहप मँझारा। संपुट कँवल खुले तेहि बारा ॥
सत्तपुरुष तेहि वचन उचारा। ज्ञानी बेगि जाउ संसारा ॥
काल देत जीवन को त्रासा। सत कबीर काटो जम फाँसा ॥
पिरथम चले जीव के काजा। सतजुग चले पास धर्मराजा ॥
धर्म देखि अस बोले बानी। जोगजीत कित कीन्ह पयानी ॥
तब कबीर अस कही पुकारी। जीव काज मैं जगत सिधारी ॥
सत्त पुरुष अस कहा बुझाई। जग में जाइ जीव मुकताई ॥
धर्मराइ अस बचन सुनाई। तुम भौसिंधु बिगारन चाही ॥
तब कबीर बोले अस बाता। तुम्हरी करहुँ प्रान की घाता ॥
पुरुष बचन अब देहो टारी। तो हम तुम को देहिं निकारी ॥
मन मैं सोचि धरम सकुचाना। तब कबीर जग कीन्ह पयाना ॥
सतजुग नाम मुनिंद्र धरावा। चौका करि जिव लोक पठावा ॥
चौका करि परवाना पावै। छूटै जीव मुक्ति को जावै ॥
और त्रेता जुग कीन्हा चौका। जीव मिले बहु किये बिसोका ॥
द्वापर जुग की कहौं बखानी। धुंधल सुपच खेवसरी जानी ॥
मुक्ति लोक जिव किये पयाना। अस अस जीव मुक्ति को जाना॥

चौका करि परवाना पावा । नरियर मोड़ि तिनुका तुरवावा ॥
कलजुग नाम कबीर कहाये । पुरइनि सेत पान पर आये ॥
कासी नगर कीन्ह कर काया । नूरा नीमा के घर आया ॥
बालक जानि चीन्ह नहिँ पाये । कई दिवस अस बीति सिराये ॥
एक दिवस धर्मदास चितावा । चौका करि परवाना पावा ॥

॥ प्रश्न तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

भर्म एक मोरे उपजाई । चौका बिधी कहौ समझाई ॥
चौका कीन्ह दीन्ह परवाना । सो बिधि मो से कहौ बखाना ॥
धर्मदास जस चौका कीन्हा । जस कबीर वा को कहि दीन्हा ॥
सो बिधि मो को बरनि सुनावौ । दया भाव यह बिधि दरसावौ ॥

॥ उत्तर फूलदास ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसीदास सुनौ तुम काना । चौके का मैं कहौँ बिधाना ॥

॥ छंद ॥

निज भाव आरति सुनौ खेवसरि, तोहि कहौँ समझाइ कै ॥१॥
मिष्टान पान कपूर केरा, अष्ट मेवा लाइ कै ॥२॥
पाँच बासन सेत बस्तर, कदली पत्र अछेदना ॥३॥
नारियर और पुहप सेतहि, सेत चौका चंदना ॥४॥

॥ सोरठा ॥

और आरति अनुमान, सब बिधि आनौ साज तुम ।
पुंगीफल परमान, सब्द अंग चौका करौ ॥

॥ चौपाई ॥

और वस्तु आनौ सुठि पावन । गऊ घिर्त और सेत सुहावन ॥
ऐसे सिष्य सिखापन मानै । ततखन सब बिस्तार जो आनै ॥
सेत चदरवा दीन्हेउ तानी । आरति कीन्ह जुगति विधि ठानी ॥
चौका पर बैठक जब लयऊ । भजन अखंड सब्द धुनि भयऊ ॥

पाँच सब्द का दल जब फेरा । पुरुष नाम लीन्हो तेहि बेरा ॥
नरियर मोड़त बास उड़ाई । सत्त पुरुष को जाइ जनाई ॥
छिन मेँ पुरुष परस पद आये । सकल सभा उठि आरति लाये ॥
पुनि आरति बिधि दीन्ह मड़ाई। तिनुका तोरे जल अचवाई ॥
सोइ सिष हाथ दीन्ह जब पाना। पावै पान सोइ लोक पयाना ॥
सब्द अंग दीन्हो समझाई । सिष्य बूझि कै सुरति लगाई ॥
पहुँचै लोक अगम के द्वारा । चौका बिधी कबीर पुकारा ॥
येहि बिधि जीव करै जो चौका। जा का मिटि गया संसय सोका ॥

॥ तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसिदास मन मेँ मुसिकानी । मौन रहे कछु कही न बानी ॥

॥ प्रश्न फूलदास ॥

॥ चौपाई ॥

फूलदास बिधि कहै सुनाई । कहो तुलसी कछु मन में आई ॥
कहै तुलसी नहिँ बूझ बयाना। फूलदास मन मेँ रिसियाना ॥
तुलसी रीस ताहि पहिचानी। दीन होइ जोरे जुग पानी[1] ॥
फूलदास अस कहै बिचारी । तुलसी कैसे मौन सम्हारी ॥
चौका कबीर भाखि बतलावा। तुम्हरे मन कछु एक न आवा ॥
सत्त कबीर जो बिधी बताई । सो हम तुम को भाखि सुनाई ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

कहि कबीर जो चौका गावै । सो बिधि कहो तो मन मेँ आवै
दासकबीर जो कही बखाना । सो बिधि चौका है परमाना ॥
वा का भेद बिधी बिधि गावै । तब तुलसी के मन मेँ आवै ॥
उन पुनि चौका कौन बताया । तुम ने कौन बिधो ठहराया ॥

---

(१) दोनोँ हाथ।

नरियर उन पुनि कैान बतावा। मोड़ि तास जो बास उड़ावा ॥
तुम बजार से नरियर लावा। ता की बिधि तुम हमैँ सुनावा ॥
जो कबीर नरियर फरमावा। सो तो तुम्हरी बूझ न आवा ॥
सिलिपिलि दीप से नरियर लाये। ता के पाँच फूल बतलाये ॥
पाँच फूल का नरियर होई। ता कैा भेद बतावैा सोई ॥
सिलिपिलि दीप से नरियर आवा। ता के पाँच फूल बतलावा ॥
वोही दीप जलखंडी राजा। ता से आना नरियर साजा ॥
सो नरियर का भेद बतावै। तब तुलसी के मन मैँ आवै ॥
नरियर बास उड़ावत जानैा। ता की बिधि तन भीतर मानैा ॥
जो जो मुख से संतन भाखा। सो काया के भीतर राखा ॥
पिंड ब्रह्मंड दोऊ हैँ एका। होइहै नरियर पिंड बिबेका ॥
ता की बिधी भेद दरसावैा। सो बिधि हम को भाखि सुनावैा ॥
पान प्रवाना भाखा लेखा। ता का मन मैँ उठै बिसेखा ॥
बेचै बरई पान बतावा। सो परवाना मन नहिँ आवा ॥
अंबू सागर देखैा जाई। नरियर पान की बिधी बताई ॥
चैाथा हाथ पान बतलावा। सो कबीर अपने मुख गावा ॥
चैाथा हाथ पान बतलावैा। सो परवाना भाखि सुनावैा ॥
वो भी काया मैँ कहुँ होई। संत कृपा से पावै सोई ॥
अठ मेवा तुम भाखि सुनावा। छुवारा दाख बदाम मँगावा ॥
ये हमरे मन मैँ नहिँ आवै। कही कबीर सो भाखि सुनावै ॥
कबीर बिधी अठ मेवा भाखी। पुरुष आठ मेवा कहैा साखी ॥
और कपूर उन भाखि सुनावा। तुम दुकान बनिये से लावा ॥
वो कपूर काया के माईँ। ता की बिधि कोइ संत बताई ॥
गऊ घिर्त जो भाखि बतावा। सो तुम दही दूध मथि लावा ॥
सो कबीर बिधि और बतावा। गो इंद्री का घिर्त कहावा ॥
कदली पत्र कहा उन गाई। काया मैँ सादृष्ट दिखाई ॥

कदली पत्र छेदन बतलावा। काटि पेड़ तुम खंभ गड़ावा॥
कदली छेदन कौन बखाना। तुम ता की विधि नहिं पहिचाना॥
बासन पाँच कबीर बतावा। तुम ताँबा पीतर मँगवावा॥
पाँचौ बासन काया माईं। करता ठठेरे आपु बनाई॥
सो बासन का कहौ बिचारा। तब जिव उतरैं भौजल पारा॥
तुम जो बस्तर सेत सुनावा। धोया कपरा आनि मँगावा॥
बस्तर सेत कबीर बखाना। सो बिधि तुम ने नहिं पहिचाना
संत सरन सेवा चित लइहौ। कोई साध बिरले से पइहौ॥
पुंगीफल उन भाखि सुपारी। ता का मरम न जानि बिचारी
निकरै पवन सुपारी माहीं। सो फल पुंगी चौका गाई॥
पवन सुपारी संतन पासा। दीन होय पावै निज दासा॥
पाँच सब्द चौका उन भाखा। भिनि भिनि भेद बतावौ ता का
एक सब्द काया के माईं। और चारि का भेद बताई॥
चारि चारि बिधि कौन ठिकाना। न्यारा न्यारा कहौ मकाना॥
न्यारी न्यारी बिधि बतलइया। पाँचौ सब्द कबीर सुनइया॥
चौका कीन्ह सब्द धुनि गाजा। कहौ सब्द केहि ठाम बिराजा॥
और चार की बिधी बतावै। तब तुलसी के मन मैं आवै॥
सेत चदरवा दीन्ह तनाई सो कबीर ने कहा बताई॥
कपड़ा तानि चदरवा कीन्हा। कही कबीर सो बिधि नहिँ चीन्हा॥
आरति करन साज बतलाई। सूरत रित रति मरम न पाई॥
आवै सुरति सब्द रित माहीं। सो कबीर ने भाखि सुनाई॥
चौका कौन ठिकाने कीन्हा। ता की राह रीति नहिँ चीन्हा॥
कही कबीर चौका सोइ साजा। जहँवाँ सब्द अखंडित गाजा॥
चौका माहि सब्द तुम गाई। स्वाँस थकै खंडित होइ जाई॥
आठ पहर चौंसठ घड़ि गाजा। या बिधि सब्द अखंडित साजा
ता चौके का करौ बयाना। सो कबीर मुख आप बखाना॥

कही कबीर सोई बिधि हेरै । पाँच सब्द के दल को फेरै ॥
सो दल सब्द कौन केहि ठामा । या की विधि भिनि भाखि बखाना ॥
कौन ठिकान पाँच दल फेरा । पुरुष नाम केहि ठीके हेरा ॥
नरियर मोड़त बास उड़ाई । सो नरियर मोड़ा केहि ठाईं ॥
नरियर बनिये हाट मँगावा । सो नरियर मन मैं नहिं आवा
नरियर मोड़त बास उड़ानी । सो कहौ बातैं ठीक ठिकानी ॥
नरियर मोड़त बास उड़ाई । तुरत पुरुष के दरसन पाई ॥
सो ततवर कहौ पुरुष दिखाना । सो ठीके का करौ बखाना ॥
नरियर ऐसे कबीर बतावै । मोड़त छिन पद पुरुष दिखावै
तुम तो नरियर मोड़े अनेका । उमर गई पुनि पुरुष न देखा ॥
चौका करि परवाना लीन्हा । तन बीता पुनि पुरुष न चीन्हा
मिलन कबीर आज बतलावा । पूछै कोइ नहिं भेद बतावा ॥
कहा कबीर जीवत कर लेखा । तन बीता सुपने नहिं देखा ॥
परवाना सत लोक पठावै । जिवत मिलै न मुए कोइ पावै ॥
कह कबीर छिन लोकै जाई । सो परवाना भेद न पाई ॥
सत कबीर परवाना भाखी । सो तुम्हरी सूझा नहिं आँखी ॥
तिनुका तोरि के जल अचवाई । ये बिधि तुम ने भेद बताई ॥
तिनुका तुरन कबीर न गावा । तिनुका कौन मरम बतलावा ॥
सिष के हाथ पान पुनि दीन्हा । कौन पान भाखा उन चीन्हा ॥
चौथा हाथ पान बतलावा । तुम बरई की हाट मँगावा ॥
पावै पान सो लोक पयाना । ये कबीर ने करी बखाना ॥
तुमहूँ पान लिये हैं हाथा । देखा कहौ लोक बिख्याता ॥
जोइ जोइ कहौ देखि दृग अपना । हाल मिला कहौ कहौ न सुपना
जाना विधि बिधि पाइ न होई । पाये कहैं कबीर बिलोई ॥
सब्दै अंग कबीर बुझाई । सिष्य बूझि के सुरति लगाई ॥
पहुँचे सिष्य अगम के द्वारा । चौका सुरति कबीर पुकारा ॥

निरत कबीर द्वार दृग भाखा । सूरति सब्द मिलै सिख साखा
सूरति सब्द मिलै चढ़ि चाँपा । घर लिपाय चौका तुम थापा
नौतम चौका द्वार लिपाई । ये कबोर चौका नहिँ गाई ॥
चौका नौतम भेद बतावौ । तब कबीर का गाना गावौ ॥
जो कबीर बिधि भाखा चौका । सो मेटै जिव संसय सोका ॥
देखो तुम अपने मन माहीं । संसय सोक अनेक सताई ॥
चौका करै सोक नहिँ आवै । ये तौ सोक अनेक सतावै ॥
चौका कहौ कौन है भाई । ता से संसय सोक नसाई ॥
करि करि चौका लोक सुनावै । छिन छिन संसय सोक मिटावै
ये चौका परतीत दृढ़ाया । सो तुलसी के मन नहिँ आया
चौका करि पावै परवाना । एक पलक मैँ लोक पयाना ॥
लोक बिधी सिष आइ बखानै । सो चौका मोरे मन मानै ॥
चौका पान अनेकन खाया । बपुरे कोई लोक नहिँ पाया ॥
चौका करिकै साख बतावै । जीवत कोई लोक नहिँ पावै ॥
चौका करिकै जन्म सिराना । अब मरने का भया ठिकाना ॥
मूए पर मुक्ती नहिँ पावै । ये कहौ लोक कौन बिधि जावै
जो कबीर ने चौका गाया । सो चलि आज लोक निज पाया
जो कछु पंथ कबीर चलाया । पंथ भेद कोइ मरम न पाया ॥
पंथ कबीर जौन बिधि भाखी । सो ता की बिधि सूझि न आँखी
पंथ कबीर कौन बिधि गावा । गये कबीर सोइ मारग पावा ॥
पंथ नाम मारग कौ होई । मारग मिलै पंथ है सोई ॥
बिन मारग जो पंथ कहावा । सो उन नहीँ पंथ को पावा ॥
पंथ कबीर सोई है भाई । गये कबीर जेहि मारग जाई ॥
ये नहिँ पंथ कहावै भाई । चेला करि सिष राह चलाई ॥
ये सब जाति पाँति कर लेखा । या से गुरु सिष तरत न देखा ॥
अब कबीर की साख सुनाई । जो कबीर अपने मुख गाई ॥

पुरइनि सेत पान कियै चौका। चीन्है पुरइनि छाँड़ौ धोका ॥
पुरइनि सेत का खोज लगावौ। ढूँढ़ि ताहि पर चौका लावौ ॥
तुम धरती पर चौका ठाना। पुरइनि सेत कबीर बखाना ॥
ये तौ बिधी मिली नहिं भाई। कही और तुम और चलाई ॥
ये तुम बनिया हाट लगावा। कहा कबीर सो मरम न-पावा ॥
जो कबीर ने बिधी बताई। सब्द राह मारग समझाई ॥
सब्द चीन्ह कर बूझि बिचारा। केहि बिधि सब्द कहै निरवारा ॥
जा को कहिये साधु सुजाना। सब्द चीन्ह सोइ बूझै ज्ञाना ॥
सोई साध बिबेकी होई। कहा कबीर पद बूझै सोई ॥
सब्द पंथ सब राह बतावै। भिन्न भिन्न बिधि बिधि दरसावै
कोऊ न बूझै सुरति लगाई। चौका पट्टा औरहि गाई ॥
सब कहि भिन्न भिन्न दरसाई। सो पंथिन की दृष्टि न आई ॥
पंथ और मग औरै जाई। कही कबीर सो राह न पाई ॥
अब कबीर-मुख साखि सुनाऊँ। फूलदास सुनि मन मैं लाऊ ॥
चौका राह पंथ दरसाऊँ। कहि कबीर-मुख सब्द सुनाऊँ ॥
तुलसी सब्द कबीर सुनाई। फूलदास सुनि सुरति लगाई ॥

॥ मंगल १ ॥

खोजो साध सुजान, सो मारग पीउ का।
परख सब्द गहो सरन, मूल जहँ जीव का ॥१॥
भौजल अगम अपार, लहर बिकरार है।
कठिन ये पाँचो मगर, बीच जम जार है ॥२॥
इंद्रादिक ब्रह्मादिक, पार न पावहीं।
गुरु बहियाँ कड़िहार, जो पार लगावही ॥३॥
निरखि पकरि कड़िहार, तो घर पहुँचावही।
देत नाम की डोरि, तो दुख बिसरावही ॥४॥

बैठि के आनँद महल, परम गुन गावही ।
सुखमन सेज जगाइ, तो पिया रिझावही ॥५॥
विन जल लहर अनूप, तो मोती झिलमिलै ।
देखि छत्र उँजियार, तो हंसा हँस मिलै ॥६॥
अग्र जोति उँजियार, तो पंथ सिधावही ।
कोटिन भान निछावर, आरति साजही ॥७॥
का लिखि दीन्हे पान, तो तिनुका तोरई ।
का नरियर के मोरे, जो जम धरि बोरई ॥८॥
सत लिखि दीन्हे पान, सो तिरगुन तोरई ।
सुरति फूल वरमूल, सो नरियर मोरई ॥९॥
नरियर भेद अगम्म, संत जन मोरई ।
कहै कबीर तेहि जाचौ,* तो बंदी छोरई ॥१०॥

॥ मंगल २† ॥

तेरो संगी निकरि गयो दूर । सोहागिल आइ मिलै ॥टेक॥
आया सँदेसा आदि घरै का । लिये सब्द टकसार ॥१॥
सतगुरु घाट अगम तोहि चढ़ना । चढ़न के पंथ सिधार ॥२॥
नवएँ धाम खोलिये कुंजी । दसएँ गुरु परताप ॥३॥
चौका चार गुप्त हम कीन्हा । ता का सकल पसार ॥४॥
कह कबीर धर्मदास से । ये चौका है निरधार ॥५॥

॥ चौपाई ॥

ये कबीर चौका अस भाखा । मूल बृच्छ तजि पकरै साखा ॥
पंथ राह चौका अस जाना । सोइ कबीर-पंथी को माना ॥
कही कबीर सो राह उठाई । अपनो मन मत राह चलाई ॥
झूठा पंथ जगत सब लूटा । कहा कबीर सो मारग छूटा ॥
कहा कबीर जीवत निरबारा । तुम लै उलटो फाँसी डारा ॥

---

* माँगो । † यह शब्द मुं० दे० प्र० की पुस्तक में नहीं है ।

॥ प्रश्न फूलदास ॥

॥ चौपाई ॥

सुनकर फूलदास सकुचाना । तुलसी बचन सत्त कर माना ॥
तुम कबीर बिधि भाखी रीती । या में एक न कही अनीती ॥
जो कबीर ने पंथ चलाई । सोही तुमने राह बताई ॥
साहिब ने एक बानी भाखा । धरमदास कुल दीन्ही साखा ॥
बंस बयालिस तुम्हरे होई । अटल राज भाखा पुनि सोई ॥
ऐसी सब्द साखि सब गावैं । और ग्रंथ ये भेद बतावैं ॥
अस कबीर अपने मुख भाखा । अटल बयालिस बंसी साखा ॥
या की तुलसी कस कस भइया । कहो बुझाइ कैसी बिधि कहिया ॥
कहि कबीर ने बंस बखाना । सो कहो तुलसी केहि बिधि जाना
बंस बयालिस अटल बतावा । कस कस धरमदास सोइ गावा ॥
या की बिधि बिधि भेद बतइये । सो तुलसी बरतंत सुनइये ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

बंस बयालिस भाखि सुनाऊँ । मुख कबीर बिधि मैं समझाऊँ ॥
जो कबीर मुख भाखे बैना । ता की बिधी सुनाऊँ सैना ॥
काया बीर कबीर कहाई । सब्द रूप है घट के माईं ॥
ता को नाम कबीर कहाई । सो कबीर है जग के माईं ॥
चौथे पद से सब्द जो आवै । सत कबीर सोइ नाम कहावै ॥
निज निज पद से सब्द जो आवै । धरमदास तेहि नाम कहावै ॥
काया बीर कबीर कहाई । धरमदास ये मन है भाई ॥
एक सब्द और एक कबीरा । धरमदास मन भया अनीरा ॥
धरमदास को पंथ बतावा । धरमदास मन सब्द समावा ॥
ता की पंथ राह बतलाई । ये कबीर मुख अपने गाई ॥
काया बीर कबीर कहावा । धरमदास मन को दरसावा ॥

बंस बयालिस मन के भाई। ता की बिधी कहूँ समझाई॥
चालिस बंस बास मन केरा। इकतालिस सुत सार बसेरा॥
बिधी बयालिस सब्द बखाना। ऐसे बयालिस अटल कहाना॥
ये कबीर मुख भाखि सुनाया। तुम कछु और और ठहराया॥
मन और सुरति सब्द मेँ जावै। अस अस ब्यालिस अटल कहावै॥
मन और सुरति सब्द भया मेला। अस कबीर भाखा निज खेला॥
ग्रंथ माहिँ पुनि देखौ साखी। ये कबीर मुख अपने भाखी॥
अब आगे का कहूँ बखाना। फूलदास सुनियौ दै काना॥
भिन्नि भिनि भाखूँ भेद बुझाई। आदि अंत सुन गुन मन माईँ॥
अगम निगम भिनि भिनि कर भाखी। कह कबीर स्तुति समझौ वा की॥
औरौ और संत सब गाये। जोइ जोइ अगम पंथ पद पाये
जिन की सुरति अगमपुर धाई। तिन तिन की पुनि साखि सुनाई॥
कही कबीर सोइ पिरथम भाखा। छूटै तिमिर होय अभिलाखा॥
सुन और महासुन्न के पारा। जहँ वो सार सब्द बिस्तारा॥
येहि अलोक कब्बीर लखावा। ता पीछे सतलोक बतावा॥
सुन और महासुन्न उन गावा। हम अनाम निःनाम सुनावा॥
सत्त पुरुष सतलोक कहाये। ता को हम सतनाम सुनाये॥
सोला सुत[१] कब्बीर बखाना। हम ने सोला निरगुन ठाना॥
सोला माहिँ निरंजन पूता। हम भाखा निरगुन मजबूता॥
सोई निरंजन मन भया भाई। जा ने जग रचना उपजाई॥
हम निरगुन से सरगुन भाखा। मन को सरगुन कहि कर राखा
मन सरगुन सब जग उपजाई। कही कबीर तुलसी पुनि गाई॥
मनहिँ कबीर निरंजन गावा। ब्रह्मा बिस्नु सिव पुत्र बतावा॥
निरगुन से सरगुन मन भाखा। हम पुनि तीनि गुनन मेँ राखा

(१) मु० दे० प्र० की पुस्तक मेँ "सुत" की जगह "सुनि" है लेकिन आगे की कड़ी से "सुत" ही शुद्ध जान पड़ता है।

तीनों गुन मन से उपजाई । ब्रह्मा विस्नु सिव गुन के नाईं
सरगुन मनहिं निरंजन कहिया । मनहिं निरंजन निरगुन भइया
ये कबीर विधि तुलसी कहिया । सोइ कबीर निज मुखहि सुनइया॥
संत मता विधि एकहि जाना । नाम कही बिधि आनहि आना
ता से तुम को बूझ न आवै । अनि अनि नाम धरे विधि गावै
सत साहिब सत नाम सुनावा । सार सो सब्द अनाम कहावा ॥
निरगुन नाम निरंजन जाना । राम कहा सोइ मनहिं बखाना
कहि कहि संतन भाखि सुनाई । सोइ कबीर अपने मुख गाई ॥
और संत और विधि समझाई । येहि कबीर और विधि गाई ॥
मत पहुँचे पहुँचे पर एका । जो अबूझ सो बाँधै टेका ॥
जिन जिन अनुभौ भाखि सुनावा । अगम पंथ विधि एकहि गावा॥
पुरइनि पात कबीर सुनाये । पुरइनि सोई संत सब आये ॥
पुरइनि सेत कबीर सुनावा । सोइ सब सेत संत बतलावा ॥
सूरति सब्द कबीरहि खेला । सार सब्द मत अगम अकेला ॥
सूरति सत्त नाम कियौ सैला । सूरति सार सब्द करै मेला ॥
निःअच्छर सोइ आदि अमेला । कहिये सार सब्द तेहि खेला ॥
जो जो संतन कही अगारा । सो सो दास कबीर पुकारा ॥
या मैं भर्म न कीजे भाई । संत-द्रोह नीच ऊँच न गाई ॥
संत को नीच ऊँच बतलावै । आद अरु अंत नर्क गति पावै॥
संत देस गति अगम बखाना । फूलदास तुम राह न जाना ॥
चौका पंथ ये हाट बजारा । चौका संत पंथ गति न्यारा ॥
फूलदास सुनि सीतल भइया । तुलसी स्वामी अगम सुनइया ॥
हम तो पंथ भेष मैं भूला । तुम कहा सार भेद पद मूला॥
फूलदास ऐसी विधि बोला । तब हम अपनि दीन गति खोला
तुलसि निकाम संतन कर चेरा । संत कृपा से अगम पद हेरा ॥
संत चरन परसादी पाई । ता से सब कहै तुलसि गुसाँई॥

सब मिलि कै पुनि कहै गुसाँई । मैला मन मत बुद्धि न पाई ॥
मैं किंकर संतन कर दासा । संत चरन बिन और न आसा ॥
दास कबीर संत है स्वामी । उन सम फूलदास को जानी ॥
तुम साधू हौ चतुर सुजाना । तुलसी जानौ दास समाना ॥
मैं साधन कर दास बिचारा । संत चरन की लागौं लारा ॥
दीन जानि किरपा करि हेरा । वे दयाल सब कीन्ह निबेरा ॥
तुमहूँ साध दया के स्वामी । फूलदास तुम चरन नमामी ॥
भूल न मोरी अचरज मानौ । मैं तुम्हरे चरनन लपटानौ ॥

॥ फूलदास ॥

॥ चौपाई ॥

फूलदास कहै स्वामी सूझा । है कबीर तुलसो नहिं दूजा ॥
मैं महंत मन मान निकामा । मैं मति नीच न तुम को जाना ॥
हाथ चरन पर तुरत चलावा । दीन होय सिर चरन गिरावा ॥

॥ तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी धाइ पाँइ को लीन्हा । चरन सीस तेहि आपन दीन्हा ॥
तुलसी कहै ऐसो नहिं कीजै । कृपा चरन अपना मोहिं दीजै ॥
फूलदास बिधि कैसी भाखी । दीन साधना क्या कहुँ जा की ॥

॥ प्रश्न फूलदास ॥

॥ चौपाई ॥

फूलदास कहै अंध अचेता । तुलसी स्वामी दीन्ही चेता ॥
मोरा मन मैला अति नीचा । ये महंत मत मन सम कीचा ॥
मोरी मति पर दृष्टि न दीजै । फूलदास अपना करि लीजै ॥
तुम्हरे चरन माहिं निरबारा । बिना चरन नहिं होइ उबारा ॥
जो कबीर सो तुम हो स्वामी । दया करहु मोहिं अंतरजामी ॥

मैं अपनी गति कस कस गाऊँ। सुरति न छाँड़ै तुम्हरा पाऊँ ॥
एक बात मेरे मन आई। भाखौ स्वामी तुलसि गुसाँई ॥
है सरीर में बीर कबीरा। सात दीप नौ खंड अमीरा ॥
ऐसी साखि कबीर पुकारा। बूझौ यह बिधि कौन बिचारा ॥
या को भेद भर्म मोहिं आवा। भाखौ स्वामी भर्म नसावा ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ चौपाई ॥

फूलदास सुनिये दै काना। या का भाखूँ सकल बिधाना ॥
धरमदास मनहीं को जानौ। काया बीर कबीर बखानौ ॥
बिधि कबीर संवाद बखाना। धरमदास मन तुलसी जाना ॥
काया बीर मन कहि संबादू। ये कबीर मुख भाखी आदू ॥
सातौ दीप कबीर समाना। सो कबीर मन माहिं भुलाना ॥
मन भूला इंद्री सँग साथा। काया बीर देह में राता ॥
सात दीप नौ खंड समाई। रहत कबीर भर्म उपजाई ॥
तन सँग कर्म माहिं किया बासा। उपजै बिनसै पुनि पुनि नासा ॥
तन सँग पाइ हिये रहै सोगा। उपजै बिनसै दुख सुख भोगा ॥
मन से इंद्री बास उड़ाई। सो मन धर्मदास है भाई ॥
काया बीर जो धर्म न जानै। होइ कबीर आदि पहिचानै ॥
सुरति सैल जो चढ़ै अकासा। फोड़ि अकास अमर पद बासा ॥
सत्त गहै सतगुरु पद पासा। सत्त लोक सत पुरुष निवासा ॥
ता के परे अगमपुर धामा। देखै लोक अलोक अनामा ॥
सत कबीर होइ वहँ को जाई। और कबीर भौ भटका खाई ॥
सत कबीर जाहि कर नामा। चढ़ै सुरति सतलोक समाना ॥
सतगुरु सत्त पुरुष है स्वामी। सो गुरु करै चेला परमानी ॥
सतगुरु सत्त पुरुष है सैला। वो कबीर सतगुरु का चेला ॥
वो कबीर जेहि राह बतावै। सुरति सैल सोइ अगम लखावै ॥

वो कबीर भौ पार लगावै । और कबीर भौ भटका खावै ॥
और गुरु चेला झूठ पसारा । दोनौं बूड़े भौजल धारा ॥
सतगुरु सत्तपुरुष की बाटा । चेला चढ़ै सुरति से घाटा ॥
सोइ चेला है पद परवाना । और सगरा जग निगुरा जाना ॥
कनफूका से काज न होई । दोनौं जाहिं नर्क में सोई ॥
सत्त सोई गुरु गगन प्रकासा । जा से मिटै काल की त्रासा ॥
गगन चढ़ै सोइ सतगुरु पाई । नहिं तो चेला निगुरा भाई ॥
गगन चढ़ै गुरु परसै आई । चेला से पुनि गुरू कहाई ॥
सत्त कबीर ताहि कर नाईं । काया कबीर को राह बताई ॥
कनफूका गुरु जग ब्यौहारा । उन से न उतरै भौजल पारा ॥
सतगुरु सत्त कबीरहि पावै । चौका की बिधि बिधी बतावै ॥
सुरति सब्द की डोर लखावै । चौके से चौथा पद पावै ॥
सब्द सोर जो उठै अखंडा । सुरति राह से चढ़ि गई डंडा ॥
होवै सत्त पुरुष पद मेला । सो कबीर सतगुरु का चेला ॥
सो कबीर चौका बिधि जानै । चौथे पद की राह बखानै ॥
चौका बिधि भिनि भिनि बतलावै । पंथ राह सतगुरु दरसावै ॥
सूरत चढ़ै पंथ जब पावै । चौका पंथ राह सोइ आवै ॥
ये चौका कब्बीर बतावा । चौका राह रीति समझावा ॥

॥ प्रश्न फूलदास ॥

॥ दोहा ॥

फूलदास बिनती करै, तुलसी स्वामी साथ ।
चौका बिधि बतलायऊ, कस कस बिधि बिख्यात ॥

॥ उत्तर तुलसी साहिब ॥

॥ दोहा ॥

फूलदास बिधि बिधि सुनौ, चौका बिधि सब सार ।
जो कबीर मुख भाखिया, सो बिधि हम निरवार ॥

॥ चौपाई ॥

चौका विधि काया मैं गाई। जो कबीर ने कही लखाई ॥
सिलिपिलि दीप जलखंडी राजा। ये सब विधि काया मैं साजा ॥
पाँच फूल नरियर के गावा। सो सब काया माहिं लखावा ॥
सतगुरु मिलै तो भेद लखावै। नरियर मोड़त बास उड़ावै ॥
बहुतक नरियर मोड़ेव भाई। पत्थर पर फोड़ेव तुम जोई ॥
नरियर मोड़त बास उड़ाई। तुम ने गंध बास ठहराई ॥
या से भेद मिलै नहिं भाई। ढूँढ़ौ बनिये हाट बिकाई ॥
अब वो पान का भाखौं लेखा। पान परे पर आवै न पेखा ॥
तुम बरई का पान मँगावा। बीरा करि करि ताहि खवावा ॥
बीरा पान कबीर लखावा। सोई पान घट माहिं बतावा ॥
सतगुरु मिलै पान पर आना। बिन सतगुरु कोइ राह न जाना।
मेवा आठ बखाने जोई। वह अठमेवा पुरुषै होई ॥
सत कबीर ऐसी विधि भाखा। मेवा फल लीन्हे सिष साखा ॥
काया पूर जोति है ताई। तुम कपूर बनिये से लाई ॥
इंद्री पाँच वासना नासा। पाँचौं वासन तन मैं बासा ॥
तुम लीन्हा ताँबा और काँसा। या से भूले अगम तमासा ॥
पुंगीफल सूपारी गाई। स्वाँसा पवन चलै तेहि माईं ॥
सो पारी पारी पद जाई। तुम बनिये की हाट मँगाई ॥
सेतै वस्तर बास बतावा। तुम बजार से कपरा लावा ॥
उन चंदा दर तानि बतावा। तुम घर कपरा बाँधि तनावा ॥
उन तन्दुल सेर सवा बतावा। तुम चौके चाँवल मँगवावा ॥
कदली पत्र छेदन उन कहिया। तुम केले के खंभ गड़इया ॥
सेत मिठाई उन बतलाई। तुम गुड़ मीठा खाँड़ मँगाई ॥
नौ के तम चौका चिन्हवावा। तुम सगरा घर जाइ लिपावा ॥
आवै रित उन साज बतावा। तुम दीपक को आरति लावा ॥

पाँचौ सब्द अखंडित कहिया । तुम खँजरी पर सब्द सुनइया ॥
पाँच सब्द का कहैाँ बिधाना । न्यारा न्यारा ठाम ठिकाना ॥
सत्त सब्द पहिले परवाना । सो कोइ साधू बिरले जाना ॥
सत्त सब्द सतलोक निवासा । जहँवाँ सत्तपुरुष कर बासा ॥
दूजा सब्द सुन्न के माईं । तीजा अच्छर सब्द कहाईं ॥
चौथा ओंकार बिधि गाईं । पंचम सब्द निरंजन राईं ॥
चढ़ि ब्रह्मंड फोड़ असमाना । सुरति सब्द मैं लगै निसाना ॥
ताहि पार सतलोक बिराजा । अखंड सब्द ता ऊपर गाजा ॥
मिलै संत कोइ भेद बतावै । तब वोहि पंथ संत से पावै ॥
दीन होइ गरुवाई डारै । संत कृपा से उतरै पारै ॥
पंथी भेष टेक नहिँ राखै । सुरति चीन्हि कै द्वारा ताकै ॥
चौका काया कबीर बतावा । बोली चीन्ह भेद जिन पावा ॥
जो समान चौका कर साजा । सो समान तन माहिँ बिराजा ॥
जो जो बस्तु चौका मैँ गाईं । भिनि भिनि घट भीतर दरसाईं
अंतर घट जो चौका कीन्हा । मरम सत्तलोक सोइ चीन्हा ॥

॥ छंद ॥

चौका बिधि गाई भाखि सुनाई, जो कबीर मुख आप कही ।
तुलसी सब भाखी देखा आँखी, जब कबीर की साखि दई ॥१॥
घट भीतर जाना भेद बखाना, फोड़ि निसाना पार गई ।
अंतर गति गाई भेद सुनाई, तन भीतर बिधि बात कही ॥२॥
देखा सतलोका अगम अलोका, चैाका चौथे पार गई ।
येहि बिधि हम भाखा नैनन ताका, सेत पुरइन तन तार लई ॥३॥
तोरा तन ताला खोलि किवारा, अगम निगम का भेद कही ।
तुलसी कहै साँची यह बिधि बाँची, सब्द सुरति गुरु गैल गई ॥४॥

॥ मंगल ॥

सतगुरु मारग चीन्ह दीन दिल लाइ कै ।
बूझै अगम की राह पाइ पद जाइ कै ॥१॥

द्रुग पर चौका पान जानि जब पाइये।
नरियर सीस सँवारि सार समझाइये ॥२॥
तत मत गुन हैं तीनि सो तिनुका तोरिया।
सुरत निरत निज नैन नारियर मोरिया ॥३॥
सूरति चढ़ै असमान पोढ़ि[1] सुर्त डोरि है।
दीन्हा दीनदयाल काल सिर फोड़िहै ॥४॥
इंद्री बासन पाँच बासना जाइया।
अठमेवा है पुरुष बाट तब पाइया ॥५॥
काया मद्धे पूर कपूर जनाइया।
पाँच तत्त तन अगिनि जोति दरसाइया ॥६॥
होत जोति उँजियार पार सुत से लखौ।
सार सब्द सत द्वार लार सुत से पकौ ॥७॥
मन बैठक है बास स्वाँस सुन से भई।
पान सुपारी सेत सोई चौका कही ॥८॥
गगन चढ़ै असमान चदरवा तानिया।
सेत माहिं है स्याम पान सोइ आनिया ॥९॥
नौतम द्वार लिपाइ सोई नौ द्वार है।
अष्ट कँवल दल फूल मूल सोइ सार है ॥१०॥
येहि बिधि चौका चार सार सोइ भाखिया।
और चौका जग रीति चित्त नाहिं राखिया ॥११॥
येहि बिधि चौका चाह थाह जब पाइया।
अगम चढ़े सोइ संत पंथ दरसाइया ॥१२॥
धरमदास धरि ध्यान सुरति समझाइया।
सुरति फोड़ असमान सब्द जब पाइया ॥१३॥

(१) मुं० दे० प्र० के पाठ में "फोड़ि" अशुद्ध है।

अटल बयालिस बंस राज अस गाइया ।
या को भाखूँ भेद भाव दरसाइया ॥१४॥
चालिस सेर मन फेर इकतालिस खुत भई ।
बिधी बयालिस सब्द अटल ऐसे कही ॥१५॥
जो कोइ मिलिहै संत भेद अस भाखिया ।
मन चढ़ि सुरति सँवारि सब्द में राखिया ॥१६॥
सुरति सब्द मन मेल सैल समझाइया ।
अटल बयालिस बंस राज अस गाइया ॥१७॥
तुलसी भाखा भेद भाव दरसाइया ।
चौका कीन्ह कबीर हंस मुकताइया ॥१८॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी कहै पुकार, फूलदास चौका बिधी ।
ये गति तनहिं बिचार, जो कबीर चौका कहा ॥१॥
चौका चार चिताव, सुरति सब्द तुलसी कहै ।
दीन लीन मन भाव, भेद संत दरसावही ॥२॥

॥ चौपाई ॥

अस चौका कब्बीर पुकारा । पुरइनि पात पर साज सँवारा ॥
जो जल पुरइनि बूझ न लावै। तन में पुरइनि खोज लगावै ॥
ता पर बैठि करै चित चौका। सूरति चढ़ै मिटै मन धोका ॥
जब कोई संत सुरति लखवावै। पुरइनि सेत सत चौका पावै ॥
पुरइनि पात नभ गगन अकासा। पावै सोइ सतगुरु का दासा ॥
ता कर भेद लखावै संतो। पावै सोई कबीरा पंथी ॥
पान फोड़ि के सुरति चढ़ावै । सहस कँवल दल अंदर पावै ॥
दोइ दल कँवल द्वार में ताकै । सुन की धुन्न सुरति से राखै ॥
धरती ऊपर तरे अकासा । ता के चारि कँवल मधि बासा ॥
वा के बीच नाल नल जानी । धधकै जोर गगन से पानी ॥

ता नाली चढ़ि सुरति सँवारा। निरखै पिंड ब्रह्मंड पसारा ॥
ता के परे अगमगढ़ घाटी। हिये दृग नैन् निरखिये बाटी ॥
जोड़ा कँवल दोइ दल चारी। तिरबेनी सोइ संत पुकारी ॥
सुरति अन्हाइ सुन्न के पारा। ता के परे अगम का द्वारा ॥
पुनि सुन महा सुन्न के पारा। सत्त लोक सत पुरुष अपारा ॥
सूरति सतगुरु मिलै ठिकाना। तुलसी चौका भाखि बखाना ॥
सूरति सिष्य सब्द गुरु पावै। चौथा पद सतगुरु गति गावै ॥

॥ सोरठा ॥

तुलसी समझ बिचार, फूलदास चौका बिधी ।
ये गति मति है सार, जो कबीर चौका कहा ॥

॥ चौपाई ॥

फूलदास चौका बिधि जाना । ये कबीर तन माहिँ बखाना ॥
चौका तन के माहिँ सँवारा । ये कबीर बिधि माहिँ पुकारा ॥

॥ फूलदास उबाच ॥

॥ चौपाई ॥

तुलसी राह पंथ बिधि गाई । सो सब समझ परा मन माइँ ॥
बिन सतसंगति राह न पावै । सत्त सत्त तुलसी गोहरावै ॥
मन महंत कछु कान न आवै । अंत बाद नरकै लै जावै ॥
ये सब भूल भाव हम चीन्हा । चौका पहा जगत अधीना ॥
चौका से कछु काज न होई । वे चौका औरै बिधि जोई ॥
तुलसी स्वामी चौका भाखी । बिधि बिधान बिधी कहि जा की
काया माहिँ रीति बतलाई । सोइ चौका सत सत्त चिन्हाई ॥
ये सब और पखंड पसारा । भौजल खलक खानि की धारा ॥
जो कबीर चौका बिधि गाई । सो स्वामी तुम समझ सुनाई ॥
चौका काया माहिँ पुकारा । जस कबीर कहि तुलसी सारा ॥
खूब खूब मन मैँ ठहरानी । तुलसी बचन सत्त कर मानी ॥
तुलसी कबीर भेद नाहिँ दूजा । हमरी बुधि नैनन अस सूझा ॥

जग अजान कछु मरम न जाना। डिंभि पखंडि भेष भरमाना ॥
ये जग रीति जीति नहिँ पावै। भेष पंथ सब पोल चलावै ॥
माला कंठी सेली माहीं। भूले पंथ भेष यहि राही ॥
जो कोइ मंत्र जंत्र को जानै। उन को बड़े संत करि मानै ॥
जो रथ गाड़ी बैल चलावै। जग सोइ बड़े साध ठहरावै ॥
गाय भैंस और खेती होई। चेला गाँव महंती सोई ॥
माया मोह बँधा संसारा। जिन को साधू कहै लबारा ॥
जग अंधा अंधा भया भेषा। ये दोउ पंथ इष्ट की टेका ॥
जग मेँ इष्ट टेक लौ लावै। भेष टेक पंथी गोहरावै ॥
जग अंधा पुनि भेष भुलानो। ये सब काल राह रस जानो ॥
जहँ लग अंत पंथ जग माईं। भूले फिरैँ राह नहिँ पाईं ॥
चेला करैँ द्रब्य के काजा। भोजन खान पान कर साजा ॥
येहि आसा बस फिरैँ अयाना। बंधन जीव काल नहिँ जाना ॥
जिन से मुक्ति जगत सब माँगै। आपा सँग रह भोग न त्यागै ॥
जस जस रीति जगत की होई। तस तस साधू समझि बिलोई ॥
अस अस साध जगत मेँ लेखा। जो कथि कही सो नैनन देखा ॥
संत रीति रस जगत न जाना। डिंभ करै तेहि संत बखाना ॥
संत दयाल दरस नहिँ चीन्हा। उन बिन फिरै कर्म लौलीना ॥
वे दयाल के दरसन पावै। मुक्ति राह और अगम लखावै ॥
जिनके बड़े भाग जग माईं। नित प्रति संत चरन लौ लाई ॥
काल जाल और जम की फाँसी। दरसन संत कर्म भये नासी ॥
वे साधू बिरले जग माईं। जग जल मेँ जस कँवल रहाईं ॥
वे सज्जन सत साध कहावैं। उन की गति मति बिरले पावैं ॥
संत भेद भिनि कोउ कोउ जाना। भेष डिंभ सब भर्म भुलाना ॥
ये सब जग मेँ कीन्ह दुकाना। या मेँ जगत भेष लपटाना ॥
जीव लोक की राह नियारी। कृपा संत बिन पावै न पारी ॥

हम तो जनम बादि सब खोवा । समझि परी तब सिर धुनि रोवा ॥
बार बार नर देँह न पावै । ये तन दुरलभ सब गोहरावै ॥
जोगी ऋषी मुनी अरु देवा । तप जप जोग ज्ञान बहु सेवा ॥
पुनि निज नर देँही नहिँ पाया । हम अबूझ तन बादि गँवाया ॥
अब ये समझि परा सब लेखा । भेष पंथ मेँ कछू न देखा ॥
भेष पंथ मद राह अबूझा । सब अबूझ बस काहु न सूझा ॥
मान बड़ाई दोजख काजा । जिभ्या इंद्री सब सुख साजा ॥
ये कबीर ने कहा पसारा । उन सब कीन्ह जीव निरबारा ॥
ना कोइ बूझी समझ बिचारा । इन सब कीन्ह दुकान बजारा ॥
ये दुकान से लोक जो जावै । तो सब जगत रहन नहिँ पावै ॥
साँच झूठ सब परा निबेरा । चित्त चीन्ह नैनन से हेरा ॥
तुलसी विधि बिधि सत्त बखानी । मन मेँ ठीक ठीक पहिचानी ॥
तुलसी स्वामी संत सुजाना । अस अस बूझ सुनाई काना ॥
तन और प्रान छूटि सब जाता । ये पुनि भेद हाथ नहिँ आता ॥
साखी सब्द अनेकन देखा । ग्रंथ कबीर अनेक बिबेका ॥
सो सब देखि देखि पचि हारी । बस्तु न पाई रहे अनारी ॥
सार भेद संतन ने जाना । सो ग्रंथन मेँ नाहिँ बखाना ॥
साखी सब्द पढ़ै जो कोई । बस्तु न पइहै सिर धुनि रोई ॥
कह्यो कबीर सार पद गुप्ता । परगट माहिँ लखो सब थोथा ॥
ये तो संत गुप्त मत भाखी । ता की नकल ग्रंथ मेँ राखी ॥
ढूँढ़ै अब या मेँ अज्ञाना । पचि पचि मूरख भये हैराना ॥
ये सब ग्रंथ देखि हम भूला । साखी सब्द माहिँ बहु झूला ॥
आँखी फार फार हम जोवा । जनम अकारथ बादहि खोवा ॥
सब्द साखि जो पढ़ि पढ़ि चलिहै । संत दृष्टि बिन कछू न मिलिहै ॥
जो कबीर मुख काहि कर भाखी । संत दृष्टि बिन परै न आँखी ॥
ता से संत चरन सिर दीजै । कारज और बात मेँ छीजै ॥

जो कबीर ग्रंथन मैं कहिया । सो तो भेद संत पै रहिया ॥
हम जूझे ग्रंथन के माईं । केहि बिधि हमरे हाथे आईं ॥
संत सुरति चढ़ि गये जो पारा । पावै तिन से भेद नियारा ॥
जगत भेष नहिं भेद बिचारै । ये कहा समझै सार असारै ॥
दीन होइ सतसंगति तोला । जा से सूझै बस्तु अमोला ॥
तोलै दीन होइ निज दासा । सो स्रुति सार मिलै उन पासा ॥
हम तो सरन संत कर लीन्हा । और बात नहिं आइ यकीना ॥
जो कोइ लाख लाख समझावै । हमरे मन मैं एक न आवै ॥
कहो को खोज सार कर दीन्हा । हम तो स्वामी तुलसी चीन्हा ॥
संत कही और दास कबीरा । जो जो अगम पंथ पद धीरा ॥
जिन जिन स्वाद पाइ पद हेरा । होइ हौं उन चरनन कौ चेरा ॥
चरन लाग तुलसी के तीरा । उनहिं लखाया अद्बुद हीरा ॥
अब कहुँ चित्त लगै नहिं भाई । तुलसी बस्तु अमोल लखाई ॥
बार बार चरनन सिर नाई । करिहैं तुलसी मोर सहाई ॥
अब तो पोढ़ पोढ़ कर पकड़ा । तुलसी चरनन मैं मन जकड़ा ॥
और कहूँ मोहिं बोध न आवै । जो कोइ कोटि कोटि समझावै ॥
समझि परा सब बात बिधाना । तुलसी बिन सूझै नहिं आना ॥

॥ दोहा ॥

फूलदास बिनती करै, पुनि पुनि सरन तुम्हार ।
मैं अचेत चेतन कियौ, तुलसि उतारो पार ॥

॥ बचन तुलसी साहिब ॥

॥ दोहा ॥

फूलदास सज्जन बड़े, तुम चित मति बुधि सार ।
संत चरन अब मन बस्यौ, पैहौ सतसँग सार ॥

॥ चौपाई ॥

फूलदास तुम साध सुजाना । तुम्हरी बुधि निरमल परमाना ॥
दिन दोपहर भयौ मध्याना । अब परसादी करौ समाना ॥

आटा चून चना कर होई। करौ प्रसाद भाजी सँग सोई॥
घीव न पास न पैसा होई। नोन मिरच चटनी सँग सोई॥
किरपा कर परसाद बनाई। पुनि वा को सब भोग लगाई॥

॥ फूलदास उवाच ॥

॥ चौपाई ॥

हम नहिँ अपने हाथ बनैहैँ। सीत उच्छिष्ट चरनामृत पैहैँ॥
तुलसी उठि परसाद बनावा। भया प्रसाद साध सब आवा॥
सब साधू मिलि भोग लगाई। भोजन करि आसन पर आई॥
फूलदास बंदगी सिर नाई। सीस टेक कर परसै पाँई॥
हाथ जोड़ कर बिनती लाई। स्वामी मोहिँ भव पार लगाई॥
हमहूँ दीन दंडवत कीन्हा। सीस नवाइ चरन पुनि लीन्हा॥

संतबानी पुस्तकमाला

दरिया साहिब (बिहार वाले) का दरियासागर और जीवन-चरित्र ... ।~)
" " के चुने हुए पद और साखी ... ≡)॥
दरिया साहिब (मारवाड़ वाले) की बानी और जीवन-चरित्र ... ।)॥
भीखा साहिब की शब्दावली और जीवन-चरित्र ... ... ।≡)
गुलाल साहिब (भीखा साहिब के गुरू) की बानी और जीवन-चरित्र ... ॥~)॥
बाबा मलूकदास जी की बानी और जीवन-चरित्र ... ... ≡)
गुसाईं तुलसीदासजी की बारहमासी ... ...)॥
यारी साहिब की रत्नावली और जीवन-चरित्र ... ... ~)॥
बुल्ला साहिब का शब्दसार और जीवन-चरित्र ... ... =)॥
केशवदास जी की अमीघूँट और जीवन-चरित्र ... ... ~)
धरनीदास जी की बानी और जीवन-चरित्र ... ... ।)
मीरा बाई की शब्दावली और जीवन-चरित्र (दूसरा एडिशन) ... ।~)॥
सहजो बाई का सहज-प्रकाश जीवन-चरित्र सहित (तीसरा एडिशन विशेष शब्दों के साथ) ... ।~)
दया बाई की बानी और जीवन-चरित्र ... ... =)॥
संतबानी संग्रह, भाग १ [साखी] प्रत्येक महात्मा के संक्षिप्त जीवन-चरित्र सहित ... १)
" " भाग २ [शब्द] ऐसे महात्माओं के संक्षिप्त जीवन-चरित्र सहित जिन की साखी भाग १ में नहीं दी हैं

दूसरी पुस्तकें

लोक परलोक हितकारी [जिसमें ७७ स्वदेशी और विदेशी संतों और महात्माओं और विद्वानों और ग्रंथों के २३७ चुने हुए वचन पहले भाग में और १७५ दूसरे भाग में छापे गये हैं] ॥≡) बेजिल्द, १~) जिल्ददार
अहिल्याबाई का जीवन-चरित्र अँग्रेज़ी पद्य में ... ... =)

दाम में डाक महसूल व वाल्यू-पेअबल कमिशन शामिल नहीं है वह इसके ऊपर लिया जायगा।

मनेजर, बेलवेडियर प्रेस,
इलाहाबाद।